।। श्री गोकुलेशो जयति ।।

।। श्री रमणेशो जयति ।।

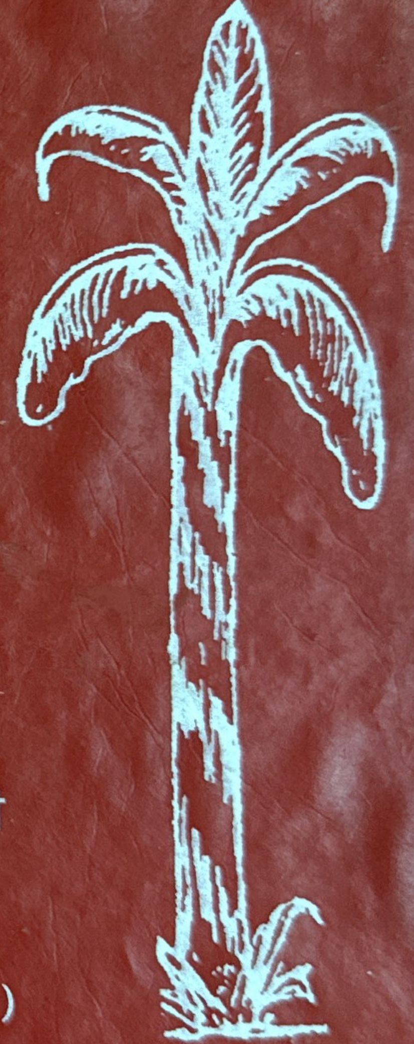
श्री कल्लोल जी ग्रन्थ

अष्टम् ए

(श्रीमद् गोकुलेश लीलायां रसाब्धी सुधासिंधौ)







-: मूल :-

श्री कल्याण भट्ट मठपति जी

-: टीकाकार :-

पंडित लोकनाथ जी (गोकुलिया)

लैया वासी

श्री महामहोत्सव संवत् २०५७

अष्टम कल्लोलजी

अनुक्रमणिका

अष्टम कल्लोल जी

।। तरंग पहलो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

श्री गोकुलेशो विजयते

तमाम कृपाधीशं तन्दत्कांश्च कृपावुर्द्धिन भाषया मुदा ।।

श्री गोकुलेश महाप्रभुन के महाकृपापात्र परम अंतरंग रसिक भक्त श्री कल्याण भट्टजी अब अष्टम कल्लोल कूं कहें हैं । वामें श्री रमणलालजी महाराज की कृपाबल सूं भाषान्तर करें हैं । तामें वस्तु निर्देश रूप मंगलात्मक प्रथम श्लोक कहें हैं ।

श्लोक -- **कतिपयकालापममे विराजमानं प्रिये गेहे,**
सहसि प्रसन्न वचनं प्रणिसे तत्कृपा सहि ।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के कछुक समय के गुजरने पर श्रीमद् गोकुल निज धाम में अपने निज मन्दिर में प्रसन्न मुख विराजमान प्राणनाथ श्रीजी के आगे एकांत में कृपाशक्तिजी पधारके दंडवत प्रणाम करके हाथन कूं बांधके विज्ञापना करत भयी हैं -- "के हे ईश्वर हे गुणसागर कलियुग संबंधी जीवन के उद्धार अर्थ जो जो विज्ञापना करी है सो सगरी ही आपने सिद्ध करी हैं, वामें इतनी ही होवे के मलेछन कूं चक्रवर्ती राजा जो जहांगीर है सो एक सन्यासी के संग सूं भ्रष्ट होय रह्यो है कि वाके भाषा मन्त्रन सूं मोहित है । तासूं वाके कहवे सूं भगवद् धर्म के विरोध में प्रवृत्त होय रह्यो है, और वाके जे जन हैं वे हू भगवदीयन को विरोध कर धर्म सूं पजान रहे हैं । हे प्रभो इनको उद्धार करो संभवे है, और सूं उद्धार नहीं होय है । हे प्रभु वाकूं आदी सूं हू अत्यन्त प्रबल ध्रष्ट असुर पाखंडी संन्यासी कूं विजय कर रहे हे ।। आपने सगरे ही वे वैदिक धर्म की रक्षा करी है । और अत्यन्त पावन मंगलमय भगवद्मार्ग तुलसी माला, चक्र, कमल, शंख, गदा आदि भुजान के धणी हैं ।। हे गुणसागर आपने रक्षा कियो है । तोहू मथुरा वृन्दावन हू वैसे देशान्तर के

जे सगरे लोक हैं वे अपने कूं दास रूप नहीं जानें हैं, यासूं वा सबमें तो वे हू सर्व भक्ति आरती हो रही सेवक दास हैं विनकी रक्षा हू आप ही करोगे ॥ वैसे विनके वा वा इच्छित फल कूं वहां वहां आप ही देखोगे । प्रभो यह सन्यासी बिन सबन कूं ही म्लेच्छ चक्रवर्ती के भय कूं दिखाय दिखायके धर्म सूं विनकूं विमुख करि रह्यो है, विनकूं हू जा जा प्रकार सूं सिद्ध होय, वैसे हे श्री आप करोगे । महासुन्दरवर प्रिय अपने जन्मस्थल प्रयाग लो पधारके वैसे वा गढ़ा नगर या द्वारका या कुरुक्षेत्र की गंगाधार में हू पधारके आप सगरे लोकन कूं उद्धार करते भये हैं । विनमें कितनेक जीवन कूं तो आप साक्षात और कितनेक कूं परम्परागत उद्धार करत भये हैं । हे प्राणनाथ काश्मीर देश तो मलेच्छन के संबंध सूं अत्यन्त ही तुच्छ है । स्वभाव सूं ही धर्म सूं विमुख है । हे प्रभो जहां अच्छे पंडितन में हू वेद पुराण कि श्रुती हू बिनकूं विचार धारा से हू नहीं प्रतीत होय है । और कोऊ वैदिक वैसे रीत कि स्मृती क्रिया हू कछु नहीं है कि वर्ण धर्म हू नहीं है आश्रम धर्म हू नहीं है । तामें कोऊ तो म्लेच्छ वेष और म्लेच्छ भाषा कि म्लेच्छन कूं ही आचरे है । नित्य अभक्ष को भक्षण करें हैं । म्लेच्छन के ही घर में रहें हैं, बैठे हैं, विनके ही घरन में भोजन कि शयन करें हैं, सगरो ही व्यवहार सदैव म्लेच्छन के संग ही है । और कथा के बिना ही सदा रहें हैं । विशेष कहा कहें, अपने कूं श्रेष्ठ ब्राह्मण कि धर्म कूं मानवे वारे हैं । बहुत ही महंमद नाम कि कासिम नाम वारे अहमद नाम वारे हैं । भगवान के तो नाम पूजा, कथा, प्रणाम कूं हू नहीं जानें हैं, बड़े भ्रष्ट हैं । या या सक्त मुढ़ जो अयोग्य अत्यन्त ही (निर्दित) निश्चे है । वामें हू अब तो या दुष्ट संन्यासी के संग सूं सर्व प्रकार सूं दुष्ट होय रहे हैं । म्लेच्छादिकन के संग सूं अत्यन्त ही भ्रष्ट होय रहे हैं । ऐसे भक्तन को उद्धार, समर्थ के सागर तुम ही कर सको हो । और कोऊ कोई यामें समर्थ नहीं है । और ईहै के हे प्राणनाथ रससिंधु भगामें हू वा वा गाम में के वा वा नगर में के वा वा स्थान में हू वहां (अनेक) प्रकार के भाववारे आपके अनन्त प्रकार के ही अत्यन्त श्रेष्ठ भक्त रहें हैं, जे आपकी सेवा में उपयोगी होयवे सूं सर्व प्रकार सूं ही निरन्तर एक रहें हैं तासूं इहां आयवे में समर्थ नहीं । और आपके मुखचन्द्र सम्बन्धी चांदनी के पान करवे की इच्छा वारे जिनके नयन रूप चकोर हैं ऐसे वे भक्त आपके लिये अत्यन्त विकल हैं । हे प्राणनाथ कृपासिन्धो विनकूं हू समाधान

हू अवश्य ही करनो चहिये। हे रसिकराय प्रभो इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली और सिंहनद की ओर कुरुक्षेत्र की ओर लोह नगर में और मेहरी नगर में कि और. वैसे हू वा वा ठौर में जे पूर्ण चन्द्रमुखी निवास करें हैं और सगरे कार्यन कूं त्यागके तिहारे पादुका, कि पनही की, कि आपके चरण कमल संबंधी पराग के वस्त्र में स्वरूप की, माला की, कि नाम पत्रिका कूं प्रेम सूं सेवन करें हैं। और तिहारे स्वरूप के ही स्मरण में तत्पर हैं। कि तिहारे कथा में ही आशक्त हैं और तिहारे संगरूप हजारन अमृतन को पान करवे कूं अत्यन्त ही जे तृषित हैं के सगरे स्वजनों सूं विरागी हैं और तिहारे में ही रट सों हृदय वारे हैं और सगरे स्वजन सूं विरागी हैं ऐसी जो अनेक प्रकार के मनोरथन समूह सूं भरी भई अनेक प्रकार की चंचल नयनी कोमलांगी हैं। हे प्रभु विनकूं अपने दर्शन दानादि सूं आप कृतार्थ करोगे ही, जासूं हे प्राणनाथ श्री आपको जो प्राकट्य है सो भक्तन के सगरे सुखन के दान आर्ती अर्थ ही है तासूं हे भगवन अत्यन्त सुयोग्य आपकूं यह विनय यदि रुचे तो हजारन अमृत के समूहन कूं विजय करवे वारी अपनी यात्रा रूप लीला सूं काश्मीर पर्यन्त भूमि मंडल कूं पावन करिये तासूं मेरी विज्ञापना के सफल करवे सूं आप मेरे प्राणनाथ हू सो ये हो ॥'' श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं ऐसे या कृपाशक्ति की विज्ञापना कूं सुनके मंद हास्य सूं शोभायमान है श्रीमुख कमल जाकूं ऐसे कमलनयन शोभायमान श्रीजी वा अति ही परम प्यारी कृपाशक्ति के प्रति आज्ञा करत भये हैं। ''कि हे कृपाशक्ति, तुमने जो एकांत में विज्ञापना कियो है सो रस सूं पूर्ण है, अत्यन्त मधुर है सो युक्त है, सो सगरो सदैव ही मेरे हृदय में रहे है। किन्तु वो काश्मीर देश अत्यन्त ही दुष्ट है जासूं श्री पितामह श्री आचार्यजी तथा काकाजी के चरणरज सूं हू कबहू स्पर्श, के तासूं प्रबल कारसी के बिना मेरो मन संकोच करे है तासूं या कार्य में सिथिल होय रह्यो है। और वा वा स्थल में निवास करत है और मेरे दर्शन के बिना अत्यन्त दुःखित बिन भक्तन को प्रेम तो मोकूं निरन्तर आकर्षण करे है। और श्रुती शास्त्र पुराण स्मृती आदि प्रसिद्ध तुलसी काष्ठ माला कूं पहेरनो आदि जो वैष्णव धर्म श्री आचार्यजी तथा श्री गोस्वामीजी ने अत्यन्त आदर कियो है सो धर्म म्लेच्छाधीश कूं वश करके वाके बल सूं सर्व प्रकार सूं ही या सन्यासी ने नाश कियो है वाकूं अन्य दर्शन में हू दृढ़ स्थिर कियो। यद्यपि अपने वैष्णव को यह धर्म स्थिर कियो है तथापि याकूं

दान ही भयो है। या धर्म कूं अन्य सगरे जन में ही दृढ़ स्थिर करवे की अभिलाखा वारो हूं। जासूं यह अपनो है, यह अन्य है यह विचार ही लक्ष्य चित्त वारेन कूं होय है। जे उदार चित्तवारे हैं विनकूं तो सगरी भूमि ही कुटम्ब है। के अपनी मित्र रूप ही प्रतीत होय है'' ॥४४॥ श्री भट्टजी कहें हैं के ऐसे वचनामृत रूप अमृत के समूहन कूं श्रीजी वर्षा करि रहे हते, तबही सो कृपाशक्ति मंद मंद हंसके समीप विराज रही लीलाशक्ति की ओर ही देखती भई हैं। तब इतने सूं ही सो लीलाशक्ति वाके अभिप्राय कूं जानके प्राप्त भये सेवा के समय सूं अत्यन्त प्रसन्न होयके दंडवत प्रणाम करके हाथन कूं बांधके प्रभु के आगे विज्ञापना करत भई हैं ॥४७॥ के ''हे प्राणनाथ वा काश्मीर में पधारवे के अर्थ आपकी दासी मैंने प्रबल कारण ही विचार्यो है ॥४९॥ परन्तु मनुष्य लीला जाकूं सुहावे है ऐसे श्री आपकूं सो अवश्य ही मानवे योग्य है। तासूं हे प्रभो मलेच्छन को चक्रवर्ती जो अब बाहिर है सो ही जैसे आपकूं बुलवावेगो वैसे ही हों सिद्ध करूंगी। सो बलवान मलेच्छ उग्र दंड वारो चक्रवर्ती राजा आपकूं निकट बुलावे, वाकूं तो सगरे जन ही मानवे योग्य ही मानेंगे के राजा के वचन तो निरादर योग्य नहीं हैं, मानवे योग्य हैं, ऐसे ही मानेंगे। हे भगवान या मिस सूं कृपाशक्ति ने जो आपके आगे विज्ञापना करी है वा सगरी कूं हू आप ही सिद्ध करोगे ही ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले प्रथम तरंग संपूर्णम् ॥१॥

तरंग द्वितीय

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ द्वितीय स्तरंगः लिख्यते ॥

श्लोक -- **प्राणेश्वर स्तांय कृपाशक्तिय सुन्दरः स्मिते ।**

नायत्य कर्पिशुभ मत्यानां विविधेषुसः ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के वाके अनन्तर सो सुन्दरवर प्राणनाथ जी वा लीलाशक्ति कूं कि कृपाशक्ति कूं मंद हास्य सूं आदर करके भक्तन के अनेक प्रकार के कार्यन में प्रथम जैसे प्रवृत्त होते भये हैं। और या

श्रीजी की लीलाशक्ति तो प्रथम प्रतिज्ञा किये कार्यन कूं निर्थत्य (त्वरीत) सिद्ध करवे लिये अपने अदा सूं वहां वहां वे ही प्रवेश करती भई हैं । या प्रकार करुणाशक्ति के परवश होयवे सूं प्रभु श्रीजी जब मलेच्छपति के उद्धार की इच्छा करत भये हैं । तब ही प्रभुन सूं डरपके वा सन्यासी के मायामंत्र देवता सब ही नाश होय जाते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, के याके अनन्तर कछुक समय के गुजरवे पर चारों ओर प्रसरवे की इच्छावारे श्री वल्लभ प्रभुन के यश सूं प्रेरणा कियो सो महा असुर सन्यासी अपने सगरे दुष्ट सेवकन के संग सम्मति करके या प्रकार के पत्र कूं रवाना करावतो भयो है, के सगरे मथुरा, वृन्दावन, गोकुलवासी तथा और ठौर के वासी सबन ने ही तुलसी माला आदि सगरो धर्म त्याग कियो है तामें अत्यन्त स्वतन्त्र जे श्री गोकुलनाथजी हैं सो अपने परिवार, भृत्य, भक्त, दासजन के सहित ही तुलसी माला आदि सब धर्म को नहीं त्यागें हैं, बहुत वार बहुत पुरुषन ने कह्यो हू है तोहू माने नहीं है, और चक्रवर्ती राजा के सेवकन कूं तथा वा सन्यासी के आधीन होय रहे लोकन कूं के मल्वेछन के चक्रवर्ती कूं कछु नहीं माने है, ऐसे या प्रकार के अर्थ वारे लेख कूं लिखायके वाके ऊपर अधिकारी प्रतीत, लोक, कि स्वामी तथा सेनापति, के चौधरी, मलेच्छन के खजानची की मुद्रा हू करावतो भयो है । कि मथुरा के ब्राह्मण कि बालाराम वैद्य कि याके भ्राता अत्यन्त दुष्ट दामोदर की, कि अत्यन्त कुटिल पापी मीतन मिश्र की मुद्रा कूं हू करावतो भयो है । यह ऊपर कहे ओर को न कहे और हू वा पत्र के ऊपर ''यह पत्र सांचो हैं'' ऐसे लेख करावतो भयो है । तब वा पत्र कूं सौंपत सेनापति इतवार खान, के पास पठावतो भयो है । वैसे सो इतवार खान मलेच्छन के चक्रवर्ती जहांगीर के प्रति देतो भयो है । तब सो परम चतुर म्लेच्छ हू वा पत्र कूं वांचके क्रोध नहीं करतो भयो है, किन्तु हृदय के ऊपर सवार होयके, वाकूं शुद्ध कर रहे या प्रभु के आज्ञा सूं प्रेरणा कियो भयो सो या पत्र सूं कि अपनी आज्ञा भंग सूं कि एकांत में अत्यन्त ही हर्षित होतो भयो है । कि श्री गोकुलपुरी चक्रवर्ती भगवान वा श्रीजी में अत्यन्त भक्ति कूं प्राप्त होतो भयो है । और या प्रभुन के दर्शन की इच्छा करतो भयो है । कि वा निस्तुष गुणन के समुद्र श्रीजी कूं निरन्तर प्रणाम हू करतो भयो है, कि वा अत्यन्त श्रेष्ठ प्रभुन सूं बारंबार अपने बहुत प्रकार के अपराधन कूं क्षमा करावतो भयो है । कि यश जाकूं प्रिय है ऐसे या प्रभुन

के आगे सगरी दिशान कूं स्वच्छ प्रकाशित कर रहे अपने विजय सूं प्रगट भये यश कूं भेट करवे लिये हू अत्यन्त अभिलाखा करत भयो है कि मथुरा में अपने आगे कियो जो विचार हतो वाके तब वहां पुरण करवे सूं, सर्वज्ञान के समूहन सूं प्रणाम किये हैं चरण कमल संबंधी, के ऐसे या श्रीजी में अत्यन्त प्रसन्न हू होतो भयो है कि अपने या प्रकार के भाव कूं गुप्त करवे लिये सावधान हू होतो भयो है कि अपनी आज्ञा के भंग सूं भये क्रोधन के लवलेश कूं प्रगट हू नहीं करतो भयो है, और प्रकार यह आज्ञा कूं करतो भयो है । श्री गोकुलनाथजी ने मेरी आज्ञा भंग करी है तासूं वे सिपाही पठावने उचित है, जे यहां सूं वेग ही गोकुल में जायके श्रीमद् गोकुलनाथ प्रभुन को ले आवें। या अवसर में श्रेष्ठ भक्त परम चतुर आसफखान अपने हृदय में विचार करतो भयो है, के मलेच्छन के चक्रवर्ती देशाधिपति सूं पठाये सिपाहीन कूं देखके श्री गोकुल में स्थित जे प्रभुन के भक्त हैं सो हमारे प्राणनाथ कूं बलात्कार ही ये मलेच्छ लेने के लिये आये हैं, (ऐसे) उदय भये क्रोध के भार सूं लाल होय रही दृष्टि सूं विनकूं जो देखेंगे, तासूं सो विनके नाश करवे वारे क्रोध आदि सूं या मलेच्छ कूं और विनके अधिपति राजा कूं हू वेग ही सर्व प्रकार सूं ही भस्म कर देवेंगे और आगरे में रहेवे वारे लश्कर खान के लोक प्रभुन के चरण कमल में अत्यन्त ही भक्त हैं यासूं हों मथुरा निवासी जे सेनापति मलेच्छ है जे वा सन्यासी के अनुकूल चले है, तासूं वा सन्यासी के प्रसन्न करवे अर्थ प्रभुन के संग द्रोह करवे की इच्छावारे होय रहे हैं । ऐसे श्री जयदेव कूं सुनके सो लश्करखान वेग ही विनके प्रति पत्र पठायके ता म्लेच्छ कूं अत्यन्त ही तिरस्कार करतो भयो है । तासूं या महाप्रभुन के वैसे महागुणन कूं सदैव ही वर्णन करे है । और महाप्रभुन के दासन में ही वाकी अत्यन्त प्रीति है सो बहुत वार ही देखी है, तासूं सो लश्करखान अत्यन्त बुद्धिमान है ॥ सो ही वा प्रभुन के आगे वैसे वैसे कोमल विज्ञापना कूं करके वा प्रभुन कूं इहां पधरायवे में समर्थ है और कोऊ हू समर्थ नहीं है । ऐसे विचारके सो महाभक्त आसफखान या प्रभुन के श्रीमुख देखवे की इच्छावारो होयके वा जहांगीर कूं कहेतो भयो है, "के इहां सूं बहुत सिपाही काहे कूं व्यर्थ पठावो हो ? लश्करखान के पास वैसो पत्र पठायो जाय, जासूं सो पत्र ही अत्यन्त बुद्धिमान, सुन्दर वाणी वारे वा लश्करखान द्वारा महाप्रभुन कों इहां पधारवे वारी यात्रा कूं सिद्ध करत ही वेग

ही वा प्रभुन को इहां दर्शन करवावेगो । ऐसे सेनापति भक्त आसफखान के मुख सूं प्रगट भये सुन्दर वचन विरुद्ध करवे लिये सो सुन्दर बुद्धिमान मलेच्छपति न होतो भयो है, कि वा वचन कूं अत्यन्त सराहना करतो भयो है । या वृत्तांत कूं सो आसफखान जी अपने घर में आपके सर्वाधीश भक्त मुकुन्ददास जी के प्रति कहेतो भयो है । सो मुकुन्ददास हू कटक के चौधरी अरोड़ा जाति· वारे अत्यन्त भक्त सुन्दर स्वभाव वारे पर्वत नाम भक्त के प्रति कहेतो भयो है, और सो सुन्दर बुद्धिवारो पर्वत नाम वारो भक्त है, मथुरा में निवासी नानु नाम भक्त के प्रति प्रभुन के काश्मीर पधारवे लिये या सगरे वृत्तांत वारे पत्र कूं वेग लिखत भयो है । **सो शुभ पत्र संवत १६७८ श्रावणमास के कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन मथुरापुरी में सींह नाम वैद्य के हाथ में प्राप्त भयो, तब प्रथम कहे प्रभुन के काश्मीर संबंधी या प्रबल कारण कूं सिद्ध करवे में कछुक देरी कर रही वा लीलाशक्ति में, कृपाशक्ति जी क्रोध करवे कूं तैयार होय रही हती । ऐसे वा सुन्दर समय में सींह नाम भक्त वा पत्र कूं वेग ही श्री गोकुल में लावतो भयो है । और महाप्रभुजी तो वा पत्र कूं देखके अपनी वा लीलाशक्ति में अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं । कि वा पर्वत नाम भक्त में कि आसफखान में कि वा समस्ताधीश जा मुकुन्ददास में कि वा देशपति पर हू अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं ॥**

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले द्वितीय तरंग संपूरणम् ॥२॥

तरंग तृतीय

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तृतीय तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **गणक क्वमेष** हागा इति समामती पृष्टा ।

मंगण यामा समर्थ निर्दार्थ सुखलिसा नित्वा ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं -- याके अनन्तर यह महाप्रभुजी वेग ही ज्योतिषी कूं बुलायके वासूं मंगलमय यात्रा के समय कूं पूछके निर्द्धार करके और सुख पूर्वक वा रात्रि कूं गुजारके प्रातः समय में आयके कार्यन कूं

करें हैं । गुणसागर तथा अनुरागी अपने भक्त तथा भक्त सुन्दरीन सूं मिले भये ही विलास पूर्वक श्री यमुनाजी पर पधारते भये हैं । वहां श्री यमुनाजल में लीलापूर्वक भक्तन के संग ही सुन्दर मनोहर स्नान लीला कूं करके जब करोड़न काम सूं सुन्दर श्रीजी, श्री महाप्रभुजी रत्नमयी गादी ऊपर विराजते भये हैं ।। तब रूपात्मक श्री यमुनाजी एकांत में प्रभुन के निकट पधारके प्रणाम करके या प्रकार विज्ञापना करती भयी हैं -- **''के हे प्राणनाथ महाप्रभो, श्री आपके जन्मभूमि प्रयाग में मोकूं सेवा कर रही श्री गंगाजी की कीर्ति तीनों लोकन में ही प्रसिद्ध भई है, और वा प्रयाग में तथा गंगाद्वार में हू कृपासिन्धो श्री आपने हू वे स्नान के मिसि सूं अपने श्री अंग के स्पर्श रूप अमृत स्नान हू बारंबार ही पावन कर्यो है । तथापि अपने लीलाधाम मेंजो आपने मोकूं बहुत आदर दियो है तासूं यद्यपि आपकी रसलीला के दर्शन योग्य नहीं है, तथापि आपके चरण कमलों में अत्यन्त ही प्रणाम करके मेरे मुख द्वारा ऐसे विनय करे है, के हे महाप्रभो, अपने भक्त तथा रसिक सुन्दरीन संग, कि दास सेवक के ज्ञाति बंधु भैयान के संग तथा विनके सेवा स्वरूपन के संग, अपनी गैया तथा श्री श्रीनाथजी के संग, ही अपने निजधाम श्रीगोकुल कूं मेरे तीर पर प्रगट करके, हे प्राणनाथ, हे महाकृपासिंधो, कछुक काल वहां निवास सूं मेरे मनोरथ कूं पूरण करें, यह मोकूं निरन्तर उत्साह रहे है ।।''** ऐसे वा श्री गंगाजी **की विज्ञापना कूं समझिके वा श्री यमुनाजी कूं श्रीजी आज्ञा करत भये हैं कि काश्मीर सूं इहां पधारके यह सगरो मनोरथ वाकूं पूरण करेंगे** । ऐसे श्री यमुनाजी कूं आज्ञा करके श्रीजी अपने घर में पधारके अपने कृपापात्र संबंधी भक्तन के संग भोजन लीला कूं करके तथा विश्राम करके अपने वियोग रूप अग्नि सूं अत्यन्त विकल होय रहे, संबंधी भक्त सुन्दर स्वजन मृगनयनी प्रियागणन कूं अपने वचनामृत समुद्रन क़ी सुन्दर वृष्टि सूं आस्वासन करके, धैर्य देकर के, श्रावण के कृष्णपक्ष की नवमी में प्रथरा समय में जब तीन घड़ी दिन शेष रहित, तब ही सबन की सम्मती सूं भगवान श्रीजी काश्मीर के प्रति प्रस्थान कूं करते भये हैं । और या क्षण में ही गोधरा गाम सूं आये राजबाई आदि सगरे वे भक्त ही या प्रभुन के दर्शन कूं प्राप्त होते भये हैं तथा वो दंडवत प्रणामन कूं करके महाप्रभुन के चरणन में अनेक प्रकार की भेंटान कूं अंगुलीन में सुन्दर मुद्रिकान कूं पहेरावते भये हैं । तब ऐसो महासुन्दर जो शकुन है या प्रिय को परदेश

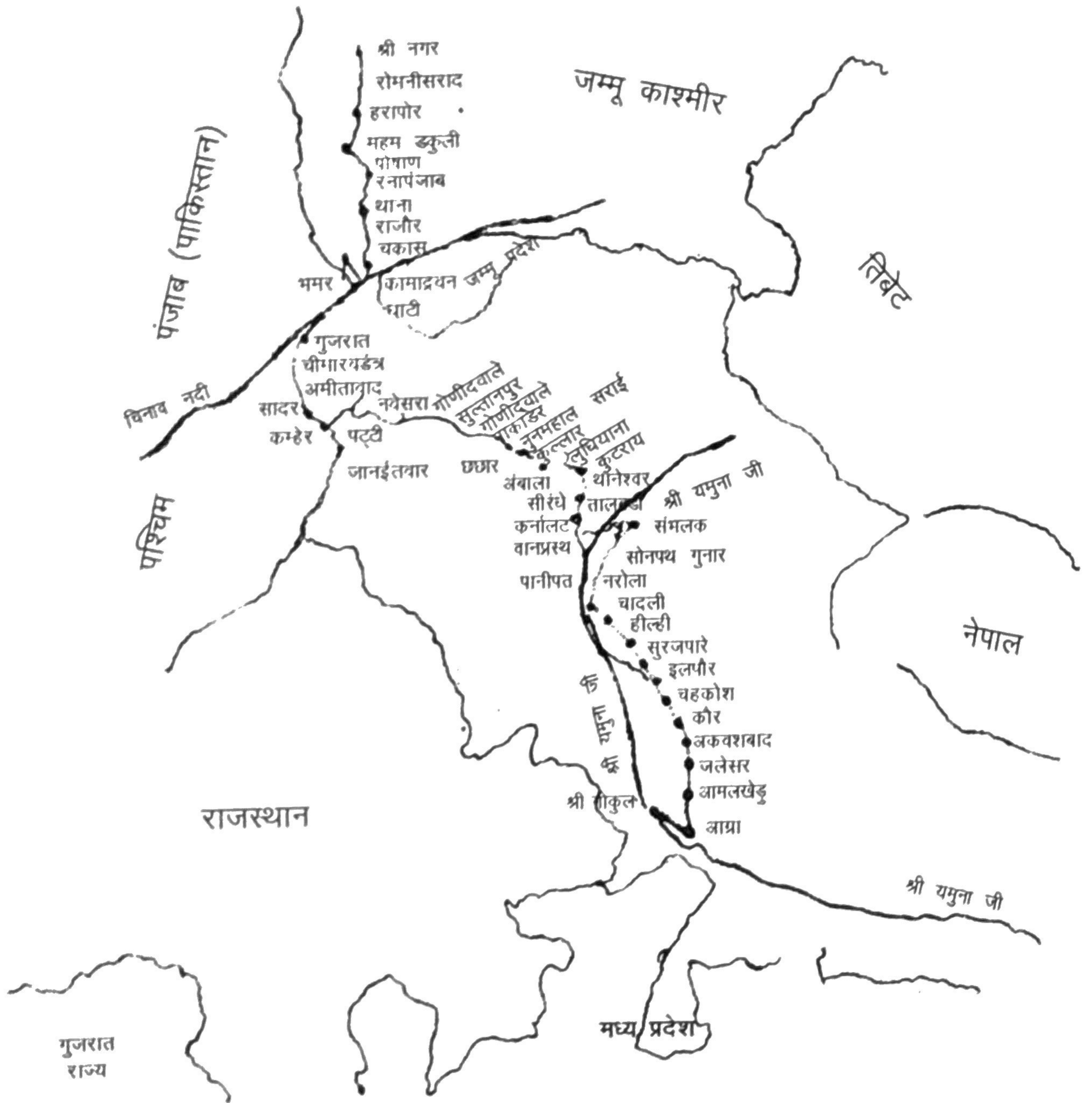
पधारवे की तथा मलेच्छपति के संग विवाद करवे की चिन्ता सूं विकल होय रहे, भक्तन कूं समाधान ही कर देतो भयो है । या या समय में ऐसे शुभ मंगल सूं, शुभ ही होयगो, यह भाव है । तब श्रीजी घोड़ा पर सवार होयके यमुना तीर पधारके और नाव में सवार होयके, पार उतरके, सगरे स्वजनन सूं विदा होयके रात्रि समय में संग चलवे वारे सगरे भक्तन के संग प्रस्थान करते भये हैं । तब सुन्दर बुद्धि वारो विश्राम जलघरीया तो प्रभुन सूं निवारण कियो भयो, उद्दंड दीप के धारण की मिस सूं कछुक दूर पर्यन्त प्रभुन के संग चलतो भयो है । तामें दर्शन रस कूं छांड़के स्थित होयवे में असमर्थ वाकूं जानके, कृपानिधि श्रीजी हू पीछे आय रहे वाकूं आगे नहीं वरजते भये हैं, सो दशमी के दिन आगरा नगर में पधारते भये हैं । वहां मुकुन्ददास के बगीचा में भोजन लीला कूं श्रीजी करते भये हैं, और तहां रघुनाथदास नाम श्रेष्ठ भक्त कृष्णदास भाई हू आयके प्रभुन के श्रीमुख कमल कूं निरखते भये हैं तथा एकादशी के दिन श्रीजी लश्करखान के घर में पधारके वा भक्त श्रेष्ठ कूं अपने सर्वोपर स्वरूप को दर्शन करावते भये हैं । वा महाप्रभुन के पधारवे सूं अपने कूं कृत्य कृत्य मानके उछल्लित प्रेम वारो वो विज्ञापना करत भयो है --- ''के हे महाप्रभो, काश्मीर तो बहुत ही दूर है, आप काहे को यात्रा करो हो ? हे महाप्रभु आपतो कोमल हो, अत्यन्त दूर की यात्रा तो अत्यन्त श्रम कूं करे है, तासूं यदि मलेच्छपति पत्र द्वारा मोकूं आपके पधारवे लिये हुकम करेगो तो वाकों हों लेख द्वारा उचित उत्तर देउंगो, के जाकूं सुनके सो मौन गहे रहेगो ॥'' श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, ''के श्री महाप्रभुजी तो वाकी विज्ञप्ती कूं सुनके, यदि मलेच्छपति की इच्छा सूं पधारते होंय तो अनुमोदन हू करें, परन्तु श्रीजी तो प्रथम कहे भक्त सुख दानादि कार्य समूह के अर्थ ही पधार रहे हैं, तासूं कैसे या लश्करखान की विज्ञप्ती कूं अनुमोदन करें ? ता सुमंड सो मलेच्छपति मोकूं अवश्य बुलावेगो तामें याके बुलायवे के अधीन होयके पधारनो मोकूं रुचे नहीं है, वहां जो पधारनो है सो मेरी इच्छा सूं ही है तासूं अवश्य ही वहां पधारूंगो, यामें तुम मोकूं रोको मती । ऐसे कहकर पधार रहे श्रीजी कूं पहोंचायवे लिये कछुक दूर पर्यंत ये लश्करखान चलतो भयो है, तब वा श्रीजी सूं विदा कियो सो वा प्रभुन के गुणन कूं स्मरण करत सो अपने घर में ही स्थित होतो भयो है । और वा समय में ही श्रीमद् गोकुल रूप रत्न श्रीजी के पठायवे अर्थ कूं

धारण कर रहे वा मलेच्छपति के पत्र कूं प्राप्त होयके, सो लश्करखान प्रभुन के वैसे वचन कूं स्मरण करके आश्चर्य कूं ही प्राप्त होतो भयो है, और अपने वियोग सूं दूर रहे तासूं दुखित होय रहे, अपने भैया रघुनाथजी के पुत्र जयदेव कूं श्रीजी प्रेम सूं आलिंगन करके तथा वा वचनामृत कूं समाधान करके विदा करते भये हैं। तथा सुन्दर रसांजन सूं नीले घोड़ा कूं सजायके आगे हू ठहेर रहे बानारसी नाम घुड़साल पर श्रीजी, महाप्रभुजी प्रसाद रूप अमृत की वर्षा करवे वारी दृष्टि सूं कृपा करते भये हैं, तब वा घोड़ा पर सवार होयके श्री महाप्रभुजी रघुनाथदास नाम भक्त कूं विदा करके, वैसे और भक्तन कूं हू धैर्य के वचन पूर्वक विदा करके श्री मस्तक में धूपखेड़ी जिनके शोभित है ऐसे श्रीजी वेग ही प्रस्थान करते भये हैं। श्री यमुनाजी के पार उतरके आप अनेक जीवन कूं पावन करत तथा सगरे भक्तन कूं प्रेम सूं, आर्द्र दृष्टि सूं शीतल करत तथा कृतार्थ हू करत कितनेक कूं तो मंद हास्य सूं प्रसन्न करत के कितनेक कूं तो वचनामृत सूं अपने परायण करत, कितनेक जीवन कूं तो धनके समूहन कूं अत्यन्त वर्षा करत तथा कितनीक सुन्दरीन कूंतो भ्रुअ के विलासन सूं सुन्दर करत, वैसे औरन कूं ताप रहित करत, के औरन कूं हर्ष समुद्र में निमग्न करत के औरन कूं अत्यन्त शोभायमान करत, के गर्व वारो करत के सर्वोपर विराजमान करत हरख संबंधी आसूं वारो करत, के औरन कूं तत्व के उपदेश सूं आनन्दित करत. वैसे अपनी लीला सूं औरन को अपनो करत, मनुष्यन के प्रेम कूं अपने में बढ़ावत, शरणागतन के दुःखन कूं निवर्त करत, के कितनेन के मनोरथ समूहन कूं पूरण करत वैसे औरन के मनोरथन कूं अत्यन्त बढ़ांवत, कोऊ सों लेवत, के कितनेकन कूं स्वरभंग वारो करत, के कितनेकन कूं हू स्तंभ. स्वेद विवर्ण वारो करत, के कितनेक कूं हू अपने अर्बन विलासन कूं मूर्छित करत, कितनी सुन्दरी जनन कूं अपने भ्रुअ के संकेत सूं नचावत, औरन कूं दृष्टि सूं दास बनावत, औरन में अपने स्वरूप कूं प्रगट करत, और कितनेक जनन सूं मार्ग वारे वृक्षन के नाम कूं पूछत, के कितनेक जनन के प्रति विनकूं वर्णन करत, मधुर मधुर मर्म हास्य करत के वा वा अर्थ को गान करावत, के कोऊ स्वयं हू महा अनिर्वचनीय गान करत और अपने थोड़े संबंध कूं, के विश्राम संबंध कूं सिद्ध करके सगरे जीवसमूहन कूं भली प्रकार उद्धार करत और अपने धाम में वेग ही पहोंचावत ऐसे सो श्रीजी चलते भये हैं। तब कितनेक

तो वा श्रीजी के रूप सूं आकर्षित किये भये ही कृतार्थ होते भये हैं, और तो मंद हास्य सूं अमृत कूं हू विजय करवे वारे वैसे वचनन सूं, के नवयुगल सूं और कितने तो श्री मस्तक सूं, के श्रीजी के नयन कमल सूं, के कपोल युगल सूं के श्रवण युगल सूं, कितने तो वा श्रीजी के कुंडलन सूं, के अधर सूं के, दंतन की कांति सूं और कितने तो वा श्रीजी के कंठ की शोभा सूं, के मुक्ताहारन की शोभा सूं, के प्रसाद वस्त्र सूं उछलित होय रहे, कंचुक सूं, के वागा सूं और कितने तो मनोहर कमर पटका सूं, के मनोहर उपरेना सूं, के पनही युगल सूं, के श्रीहस्त की शोभा सूं, के अंगुलीन की मधुरता सूं, के मुद्रिकान की शोभा सूं, वैसे कितनेक तो वा श्रीजी के चरण कमल युगल सूं, के ताकी तलीन सूं, के ताकी अंगुरीन सूं, के विलासन सूं, वा श्रीजी के चलन वलन सूं, वैसे और हू वा श्रीजी के रसमय ता ता प्रकार सूं भली प्रकार आकर्षण किये भये अत्यन्त ही कृतार्थ किये हैं के कृतार्थ होय जाते भये हैं। और कितनेक जन तो वा श्रीजी के दर्शन कूं करके, कितनेक चरणन कूं स्पर्श करके, वा महाप्रभुन के संग आलाप करके, पीछे संग चलके, कितने तो पीछे दौड़के हू, कितने आगे आयके, श्रीजी कूं आश्चर्यचकित करके, के प्रसन्न करके ही हंसायके के वाके संग यथायोग्य मंद हास्य, नर्म हास्य वचन, के कितने एक तो या श्रीजी के आगे रत्न कूं भेट करके और कितनेक तो सुवर्ण मालान कूं मोतीन की, मणीन की मालान कूं तुलसी काष्ठ की मालान को तथा तुलसी दल माला, सुन्दर पुष्पन की मालान कूं, कितनेक तो पाग कूं, के चन्दन, कुमकुम, अगर, चन्दन, कस्तूरी, कपूर कूं भेट करते भये हैं। कितनेक तो मनोहर कुंडल, कंठाभरण, नक्षत्र माला, रत्नमय बाजूबंध, रत्न जड़ित कड़ा, मणी जड़ित मुद्रिका, उपरना, उत्तम धोतीन कूं, के अमुल्य वागा, कमर पटान कूं भेट क़रत भये हैं। कितने तो मधुर फल, के पल्लव, फूलन कूं वैसे और हू वा वा वस्तुन कूं वा श्रीजी के आगे भक्ति सूं भेट धरके वेग ही अत्यन्त कृतार्थ होय जांय हैं, और कितने तो वा श्रीजी कूं श्रवण करके कहे कर स्मरण करके, सेवन पूजन प्रणाम करके, कितने तो वा दास भाव कूं करके, आत्मनिवेदन कूं करके, कितने तो वाके आजीय कूं करके वा प्रभुन के परम पद कूं प्राप्त होय जाते भये हैं। और रस सागर श्री महाप्रभुजी हू तब तब वहां वहां वा वा भक्तन के संग वैसे वैसे रस विलासन कूं करत, ता ता जीवन कूं उद्धार करत, कठिन

श्री अष्टम कल्लोल जी तरंग ३ से ७

(रेखांकन -१)



श्री संवत् १६७६

श्री महाप्रभुजीअे तिलक मालाद्धार लीये श्री श्राकुन्तरा काश्मीर तक का प्रदाणकीदा उनका रेखांकन

जीवन कूं दृवीभूत कर, ता सुखेन कूं सरस करत, शीतल कूं तपावत, तप्त जीवन कूं शीतल करत और भली प्रकार प्रफुल्लित जीवन कूं अत्यन्त चंचल करत और सदैव सबन में सर्व प्रकार सूं निमर्याद निरविधि श्रृंगार रस के सार सर्वस्व रूप रस के तथा करुणा रस के समुद्रन कूं वर्षा करत, के योग्यता रूप जिनके हाथ नहीं हैं ऐसे जीवन सूं परमानन्द, महामणीन के ऊपर ही चढ़ावत और आंधरेन सूं अपनी सेवा कूं करावत तथा मूक जीवन कूं हू अपनी स्तुति करावत, के जिनके पांव हू नहीं हैं, विनकूं पर्वतन पर चढ़ावत तथा जे बहेरे हैं, विनकूं हू यश सुनावत के दरिद्रीन कूं धनी बनावत, ऐसे सबन कूं ही आनन्दित करत सो ईश्वर श्रीजी सब जनन के प्रति मनोहर सर्व फलन कूं दान करत गाम कूं प्राप्त होते भये हैं।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले तृतीय तरंग संपूर्णम् ॥३॥

चतुर्थ तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुर्थ तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **प्रात विदयाय सर्वकृत स्नानादि कृतंतो ।**

निठाति कुर्घन विविधावार्ताः कृपास्ययेना द्वनी श्रीमानः ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं, ''के प्रातः समय में श्री महाप्रभुजी स्नानादि कूं करके मार्ग में अनेक कृपापात्र विष्णुदास गढ़वैय के संग अनेक प्रकारन की वार्तान कूं करत वहां सूं आगे पधारते भये हैं ॥'' तब प्रिय श्रीजी जलेसर गामकूं प्राप्त होयके वा गाम में प्रथम जैसे निवास करते भये हैं, और विन भक्तन ने प्रेम सूं अर्पण करी जो सीधो सामग्री है, वाकूं निमर्याद कृपासिंधु श्रीजी अनुमोदन करते भये हैं। विन भक्तन के प्रेम सूं परवश भये श्रीजी त्रिलोकमणि रूप अपने स्वरूप सूं वा गाम कूं दूसरे दिन हू शोभायमान करते भये हैं। श्री गोकुल सूं श्रीजी, महाप्रभु प्रस्थान कियो हतो वा समय में जे महाप्रभुन के भक्त मिले हते सो गोधरा गाम के वासी राजबाई आदि वे सगरे भक्त हू या जलेसर में ही सर्व सुन्दरवर के चक्रवर्ती रूप या श्रीजी को दर्शन

करते भये हैं और नव जोवन वारीन के सम्मोहन सूं पूजनीय जाको चरण है, के सुन्दरीन के जे मुकुटमणि रूप हैं, ऐसी वा राजबाई नाम भक्त सुन्दरी कूं सौन्दर्य में, स्वरूप में, अवस्था में, के गुणों में, उछल्लित प्रेम में, के एकांत में प्रिय के अनुकूल होयवे में, चतुरता में, मृदुल बोलवे में, सगरे भक्त ही अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं, के जा वा राजबाई के वे सौन्दर्यादिक गुण वा रससागर प्रीतम श्रीजी कूं अत्यन्त ही सुखी करते भये हैं, और विरह सूं व्याकुल होय रहे हू गोवर्द्धन दासादि अधिकारी तथा गोकुल में कार्य उपयोगी वैसे और हू कितनेक भक्त तथा दासन कूं श्री महाप्रभुजी फेर गोकुल भेजने के लिये आज्ञा करते भये हैं । या सगरे पृथ्वीमंडल के अधिपति राजा हू जो वा आज्ञा कूं चाहना करें हैं ऐसी न उल्लघंन योग्य अपने प्रभुन की आज्ञा कूं वे भक्त अपने सिर पर धारण कर कि बड़े ताप वारे वे प्रातः समय में श्रीमद् गोकुल की ओर चलते भये हैं, और कितनेक भक्त तो प्रभुन की आज्ञा किये हू विरह सूं विकल भये थके वे प्रभुन को त्याग के, जो गोकुल की ओर नहीं जाते भये हैं । तब प्राणनाथ हू विनकूं अनुमोदन करते भये हैं । सो विश्राम जलघरीया, गोपाल तथा गिरधर महावजी भाई जैसै वैसे और हू भक्त गोकुल में नहीं जाते भये हैं । **तथा वा महावजी कूं मंद हास्य सहित सो भगवान महाप्रभुजी आज्ञा करते भये हैं -- ''के श्री गोकुल में श्रीनाथजी मेरो सर्वस्व विराजे हैं, वहां जायके तुम वहां रहो और वाकी सेवा करो, ये मार्ग बड़ो क्लेशवारो है, यामें काहे कूं चलो हो ? तासूं तुम बगद जाओ ।।'' या प्रकार के प्रभुन के वचनन कूं सुनिके, चरण कमल कूं प्रणाम करके, मनोहर तर्जनी अंगुलीन सूं श्रीचरणन कूं दिखावत उच्छलित प्रेमवारो कहे है -- ''हे प्राणनाथ, हे प्रभु श्रीमान सत्य है, श्री आपके सर्वस्व श्री गोकुल में विराजें हैं परन्तु मेरे सर्वस्व तो यहां ही विराजे हैं इनकूं छांड़के कैसे बगदूं ।।''** श्री गोकुलप्रभुजी तो या महावजी के ऐसे वचनामृत कूं सुनके वाके प्रेम सूं वलात्कार वश होयके कछु हू कहेवे में समर्थ नहीं होते भये हैं । याके अन्तर में श्रीजी, महाप्रभुजी या गाम सूं पधार के रात्रि समय में करुणासिंधु अपने निवास सूं जरेरा नाम गाम कूं शोभायमान करते भये हैं । वहां हरीवंश नाम वैष्णव आयके प्रभुन के आगे दंडवत करतो भयो है, कि सीधा सामग्री कूं अर्पण करते भयो है, प्रेम विशेष सूं अर्पण करी याकी उत्तम सामग्री कूं, भेटा कूं प्रिय भगवान श्रीजी प्रेम सूं अंगीकार करते

भये हैं । या गाम में हीराभाई, परमानन्द, भगवानदास भक्त आयके प्रभुन के श्री मुखारविन्द को दरशन करते भये हैं । प्रेम विस्तार सूं बरस रहे हैं आंसू जाके ऐसे वा हीराभाई के प्रेम सूं परवश भये, श्रीजी गाढ़ आलिंगन सूं अनुग्रह करावते भये हैं । ये श्रीजी अक्षर अक्षर में करोड़न समुद्रन कूं वर्षा करें हैं अपने रसमय वचनन सूं समाधान हू करते भये हैं, और श्री गोकुल निवासी सगरे जनन के समाधानार्थ दया करके श्रीहस्त सूं पत्र कूं लिखके या हीराभाई के हाथ में देते भये हैं । प्रातः समय में याकूं ऐसे आज्ञा करत, के चिन्ता सागर में तुम वृथा मत डूबोगे, हम काश्मीर पधारके वेग ही कार्य कूं करके श्री गोकुल में वेग ही पधारेंगे । अब तुमकूं काल सूं हू डर नहीं होयगो । ऐसे कहेकर विदा करते भये हैं । और या महाप्रभुन को तपा नाम जो तपस्वी सौकार गाम सूं आगे चलके या प्राणनाथ के निकट आयके आपके चरणन में प्रणाम करतो भयो है । **तब सो गुणसागर श्री महाप्रभुजी या तपस्वी कूं देखके अपने घोड़ा की लगाम कूं खेंच के दया सूं वहां विराजते भये हैं, निरन्तर आदर हू करते भये हैं, पहेरे हैं टाट के वस्त्र जाने, ऐसो सो तपस्वी श्री आप यज्ञ पुरुष हो, ऐसे प्रभुन कों स्तुति करत प्रभुन के तथा आपके दासन के कृपा को पात्र होय जातो भयो है । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, ''के यह तपा नाम तपस्वी सदैव बरस बरस में ही श्री गोकुल में आयके या महाप्रभुजी को श्रीमुख दरशन करके भक्ति सूं आयके चरण कमल कूं प्रणाम करके प्रेम सूं आपके चरण कमल कूं पखार के विनसूं गिर रहे अमृत कूं पान करके मस्तक में हू धारण करके सो महाभाग्यवान कृतार्थता कूं प्राप्त होतो भयो है, तथा कृपासिंधो श्री महाप्रभुजी चरण कमलन के पखारन समय में वाके हाथन में आदर सूं अपने चरण कमल कूं देवत ही मैंने दर्शन किये हैं ॥''** अब प्रसंग कहें हैं । याके अनन्तर चंडोरा नाम गाम में श्रावण की शुक्ल प्रतिप्रदा के दिन मनोहर तालाब के तट पर मदनफल नाम वृक्ष के पास भोजन लीला कूं शोभायमान करके सो श्रीजी अपने भक्तन कूं आनन्दित करते भये हैं । बीज के रात्रे सुरजपुर गाम पधारे । श्री महाप्रभुजी दिल्ली नगर जो इन्द्रप्रस्थ नाम सूं विख्यात है वाकू शोभायमान करते भये हैं । वहां बगीचा में श्रीजी निवास करते भये हैं । वहां अनेक स्त्री पुरुष प्रेम सूं वेग आयके प्रभुन के आगे प्रणाम करते भये हैं । हरराम कोछड़ बलराम, मुकुन्ददास, कृष्णदास पंडित ये हू आयके प्रभुन कूं

प्रणाम करते भये हैं । यह सगरे भक्तजन प्रभुन के पास पंच शब्द वाजेन कूं लावते भये हैं । तासूं या प्रभुन के पास आयके भक्तन के हू कानों कूं हू अत्यन्त सुखी करते भये हैं । विनमें कृष्णदास, गोविन्ददास नाम जो प्रिय भक्त हतो, विनकी सीधा सामग्री कूं सो भगवान श्रीजी हू अंगीकार करते भये हैं । रात्रि समय में गोकुलदास की भार्या मथुराबाई प्रभुन कूं प्रार्थना करके अपने घर में पधराय ले जाती भई है । श्रीजी वहां पधारके वाकूं अत्यन्त कृतार्थ कर देते भये हैं, और आपके भक्त ताराचन्द कूं पितृ तुल्य कृष्णदास नाम पंड़ित भक्त है सो प्रभुन कूं अपने घर में पधरावतो भयो है । सुन्दर सराहना योग्य भाग्य समूहवारो सो यथायोग्य ही प्रभुन की सेवा कूं करतो भयो है । श्री महाप्रभुजी वासूं ताराचन्द के वृत्तांत कूं पूछते भये हैं । सो कृष्णदासजी हाथन कूं बांधके ताराचन्द के वृत्तांत कूं सुनावतो भयो है । ''महाप्रभु मधुसूदन के मुख सूं आपके पधारवे कूं सुनके वा मार्ग कूं प्रातःकाल ही आयके श्री मुखचन्द्र के दर्शन करवे लिये उत्साह सों आयके आगे चल्यो है ।'' या वचन कूं सुनके श्री महाप्रभुजी अपने सेवक कूं पठायके नरेरा गाम में प्राप्त भये वा ताराचन्द कूं वहां बुलवायके कृतार्थ करते भये हैं, करुणा के लाखन अर्बन समुद्रन कूं वर्षा करि वचनन सूं समाधान हू करत भये हैं । याके अनन्तर सो श्रीजी, महाप्रभुजी चतुर्था तिथि में नरेरा नाम गाम में प्राप्त होते भये हैं । वहां सूं आसफखान तथा राय मुकुन्ददास के कानों में आपने अपने पधारवे के वृत्तांत कथन सूं अमृत की वर्षा करवे लीये तथा वहां सूं वगदके आये वासूं विनती विज्ञापना के सुनवे लिये गांगु नाम पोहोरुआ कूं काश्मीर पठावते भये हैं । तथा नारायणदास प्रसिद्ध वानरावंशी है काश्मीर सूं वगदके वा नरेरा नाम गाम में आयके महाप्रभुन कूं प्रणाम करतो भयो है । और करहला गाम में प्रसिद्ध जो गांन में अत्यन्त चतुर वल्लभा नाम हतो वाकूं वा दुष्ट सन्यासी ने बंदीखाने में दिबायो हतो सो आपने वाकूं छुड़ायवे लिये यवनपति सूं यद्यपि यह लेख पत्र कूं लावतो भयो है । तोहू वा स्वतन्त्र दुष्ट सन्यासी ने वाकूं नहीं छुड़ायो हतो । अन्त में कृपासिन्धो श्रीजी ने वाकूं बलात्कार ही छुड़वायो हतो । याके अनन्तरसो श्री महाप्रभुजी पंचमी तिथि में गुन्नार गाम में पधारते भये हैं । वहां प्रभुन के केशवदास आदि सुहृद भक्त, श्री गोकुल सूं प्रभुन के पीछे प्रेम सूं प्धारते हते सो कृष्ण पारेख, नाथ भाई, मोहनदास, हरजी भाई, जीवराज

गांधी, जयराम, मेघजी भाई, गोपालदास, सींहजी बोहरा वे सगरे ही मिलके इहां आयके प्रभुन के श्रीमुख कूं दर्शन करते भये हैं । यद्यपि ये सूधे मार्ग सूं प्रभुन के निकट आयवे कूं अभिलाखा करते भये हैं तथापि श्रीमहाप्रभुजी तो जीव विशेषन के पावन करवे अर्थ कुटिल मार्ग सूं पधारे हते ।। तामें भक्तिवारेन में श्रेष्ठ सो जगन्नाथ भाई कहेतो भयो है ''यदि हमारे प्रभु कबहू विलम्ब करें तो प्रभुन के पीछे चलन दर्शन आदि सुख समूह सूं रहित भये हमसूं ये मार्ग सूं आगे जायके कहा करेंगे । तासूं जा मार्ग सूं प्रभु पधारे हैं वा मार्ग सूं ही चलनो ।।'' या प्रकार के जगन्नाथ भाई के सुन्दर सत्य वचनन सूं वा मार्ग में प्रवेश करके ही सगरे जीवन कूं प्रभु जैसे अपने चरण कमल संबंधी पराग आदि सूं पावन करके वेग ही आयके प्रभुन को मिलते भये हैं । और उछल्लित कृपा समुद्र रूप श्री महाप्रभुजी इन भक्तन को प्रभुन के अमृत के करोड़न समुद्र कूं वर्षा कर रही दृष्टि सूं व वाणी सूं बहोत प्रकार सूं ही समाधान करते भये हैं । याके अनन्तर गुणसिंधो श्री महाप्रभुजी रात्रि समे के बड़ी प्रभात में वेग ही स्वयं उठके मंद मंद हंसत आज्ञा करत भये हैं । के **''आलस कूं छांड़के वेग ही उठो'' जासूं पथिकन कूं प्रस्थान, के विद्यार्थीन कूं पढ़नो, ये प्रातःकाल में ही भलो है, यद्यपि ये प्रथम तो दुःखदायक ही प्रतीत होय है तथापि अन्त में मधुर फल कूं ही प्रगट करे है । पथिक हू सबेरे मजल पे पहोंच के सुख सों भोजनादि करे है, विद्यार्थी हू विद्या स्मृति सूं अनेक सुखन कूं प्राप्त होय है यह भाव है ।''** श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, ''सो उच्छल्लित होय रहे अतुल प्रेम सूं शोभायमान रसना रूप हस्तकमल सूं गंभीर मधुर स्वरा सूं मिले मनोहर करोड़न अर्बन अमृतन सूं हू महामधुर वचनामृत कूं श्रीजी इन भक्तन के कानों में परोसो है । बिन कानों की उत्तमता कूं ही स्तुति करूं, के जो सदैव ही वा अमृत के वृक्ष कूं ही धारण करती भयी हैं । सो हों का की स्तुति नहीं कर सकूं हूं'' यह भाव है । यह श्रीजी षष्टि तिथि में पानीपत नगर कूं शोभायमान करते भये हैं । सप्तमी तिथि में सो जगत प्रभु श्रीजी कर्णाल गाम कूं स्वयं पावन करते भये हैं । जगत प्रभु श्रीजी वहां दीर्घ श्री यमुनाजी के प्रवाह में स्नान करके वाकूं सगरे तीर्थन सूं विशेष ही कर देते भये हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले चतुर्थ तरंग सम्पूर्णम् ।।४।।

तरंग पंचम

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पंचम तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **अष्टम्यां चलितं तोयां तपधि सागरे रसाब्धिना टोड्डनाम ।**
भक्तोमित्य समीपहे सनव्यजिहू पितु ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, "कि श्रावण की शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि में वा कर्णाल गाम सूं कीच में गिरिके फेर उठके दूसरे गाड़ा पर चढ़े पुरुषोत्तम मेहरा कूं देखके टोड्डु नाम भक्त हंसत हंसत ही प्रभुन के निकट आयके विज्ञापना करत भयो है, के हे प्रभो जन्माष्टमी के रात्रि के समय से प्रभात समय में जो वैष्णव अत्यन्त उत्साह के समूह सू दधिकांदो नाम बड़े उत्सव कूं करें हैं, वा दधि के कीच में आछी रीति सूं खेल के मथुरा नाम भक्त के सहित अब शोभायमान होय रहे या पुरुषोत्तम मेहरा कूं आप आदर पूर्वक ही देखें ।" यह वचन सुनके उच्छलित भई है हांसी जामें, ऐसे सो श्रीजी रस सूं आई दृष्टि सूं वा पुरुषोत्तमदास कूं देखके, अपनी वाणी की मधुरता सूं करोड़न अमृत समुद्रन कूं हू विष की गणना में डारत ही सो प्रभु आज्ञा करत भये हैं के "पुरुषोत्तमदास अपने सगे संबंधी के बिना ही तू अकेलो ही भली भांति खेल्यो है" या प्रकार के महाप्रभुन के वचन कूं सुनके सो पुरुषोत्तमदास हू हांसी के सहित यह कहेतो भयो है । "आपकी कृपा सूं अकेलो खेल्यो हूं" । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के ऐसे हांसी पूर्वक श्री महाप्रभुजी पधार रहे हैं, याके अनन्तर कुरुक्षेत्र नगर के निवासी जे भक्त हैं, बदरीदास सुन्दर गुण सूं प्रसिद्ध सुन्दरदास, सालीवाहन, गिरधरदास वैसे और हू भक्त हू पंचशब्द वारे बाजेन के समूह कीर्तन गान अनेक प्रकार के नृत्य के संग प्रभुन के आगे आयके प्रणाम करके समीप निवासी खवास के मुख सूं प्रार्थना करके या महाप्रभुजी कूं गिरधरदास के घर में पधरावते भये हैं । वहां सो गिरधरदास वैसे और हू भक्त आछी भांति सूं श्रीजी की सेवा करत भये हैं । वो प्रिय श्री महाप्रभुजी अपने सेवक भक्तन के सहित कुरुक्षेत्र के मनोहर तलाब पर स्नान के मिस सूं पावन करवे लिये पधारते भये हैं । वा तलाब पर वेद विधि कूं श्रीजी आदर करके सुवर्ण रत्नादि के दान सूं श्रीजी पुरोहित के दरिद्री कूं

निरन्तर निवर्त कर देते भये हैं । या कुरुक्षेत्र में निरन्तर निवास करके नवमी के दिन यहां सूं प्रस्थान करते भये हैं । अनन्त जीवन कूं कृतार्थ करत कोट कछुआ नाम गाम में प्राप्त होते भये हैं । या गाम में प्रभुन के सेवक रतनजी सूं अपने प्रभु श्री गोकुलेश प्रभुन को पधार्यो सुनके या गाम को कोई वेपारी अत्यन्त आश्चर्यित होय जातो भयो है । तब यह वेपारी मिसरी कूं लेकर या महाप्रभुन के चरणन में भक्ति सूं भेट करतो भयो है । या महाप्रभुन के श्रीमुख कूं चिरपर्यंत टकटकी लगायके दर्शन करतो भयो है । हे प्रभु आज हमारे प्रबल भाग्यन सूं ही पधारे हैं । हे ईश्वर, हे महाप्रभो अब तो हमारो हृदय वा अत्यन्त दुष्ट सन्यासी सूं हू प्रणाम करवे लिये अभिलाषा करे है । जासूं अत्यन्त शुभ स्वभाव वारे गुणनिधि श्री आपने विश्व के कृतार्थ करवे वारे अपने पधारवे सूं जा सन्यासी कूं निमित्त बनायो है । याके अनन्तर दसमी तिथि में वहां सूं प्रस्थान करके श्रीजी अंबाला नाम नगर में प्राप्त होते भये हैं । वहां के निवासी जे भक्त हते सो प्रार्थना करके करुणासागर वा श्रीजी कूं अपने अपने घर में पधरावते भये हैं । सुन्दर बुद्धि वारे भगीरथ भाई, सुभद्राबाई, जड़ीबाई, मणीबाई हू अपने अपने घर में प्रार्थना करके श्रीजी कूं पधरावती भयी हैं । अमूल्य सुन्दर वस्त्रन सूं पहेरामनी कूं करती भई हैं । याके आगे श्रीजी अलुवा नाम पुरी में निवास करते भये हैं । वहां सुन्दर तलाव में तर रहे सगरे जनन कूं देखके श्रीजी प्रसन्न होते भये हैं । विन सब लोकन कूं विजय करके आपको पोहोरुवा विनकी आज्ञा सू या तालाब के पार हू प्रवार हू परे हू उरे हू आवतो और जावतो भयो है । वा अपने पोहोरुवे पर श्रीजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं । एकादशी के दिन प्रिय श्रीजी अलुवा गाम सूं सिंहनंद में पधारते भये हैं । तासूं आपको पधारनो सुनके आपके भक्त रूप मुरारी सागर वह लहरी प्रसाद, गिरधरदास, मोहनदास, हरराम कोछड़, प्रहलाद, मेंगीबाई, सुन्दरदास छकड़ा ऐसे और हू असंख्य भक्त गान वाद्य के सहित ही प्रभुन के आगे भक्ति सूं तीन कोस पर्यंत लों ही आवते भये है । तामें अनेक प्रकार के सुन्दर रेशमी वस्त्रन कूं राजमार्ग में बिछावते भये हैं । ऊपर सुन्दर वितान समूह बांधते भये हैं । तासूं राजमार्ग अत्यन्त ही शोभायमान होतो भयो है और श्री गोकुलराज के पुर में मनोहर प्रवेश के अर्थ सुवर्ण मणि मुक्तान की माला सूं के मुक्तान सूं गजराज कूं सुन्दर संवार के मंगल के अर्थ आगे लावते भये हैं । वैसे सगरे भक्त तथा अत्यन्त

भक्ति भरे श्यामदास हू बड़े आदर सहित श्रीमहाप्रभुजी कों अपने घर में पधरावते भये हैं। वहां अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्रन सूं पहेरामनी होती भई है। वहां भेटन की सोना मणी मोतीन की तो पंक्ति होय जाती भई है। तामें प्रेमवारी कृश्नीबाई तथा भामाबाईजी आनन्द सहित गान वाद्य सहित, के प्रेम उत्साह सुन्दर नृत्य सूं शोभायमान मंगलमय आरती कूं प्रभुन के आगे करती भई हैं, तथा और हू अनेक प्रकार के भक्त अत्यन्त भक्ति सूं सेवन करते भये हैं के पूजन करते भये हैं के अत्यन्त प्रणाम हू करते भये हैं। उच्छलित होय रही अत्यन्त निमर्याद अपार कृपा समुद्रन के अर्बन समुद्र जामें, ऐसे महा उदार श्रीजी विनके मनोरथ सूं अधिक अनुग्रह करके गोपालवाड़ी नाम बगीचा में यहां सूं पधारके शोभायमान अपने डेरा में विराजमान होते भये हैं। और यहां फलहार कूं करते भये हैं। द्वादसी के दिन सगरे आवश्यक कार्यन कूं करके श्री महाप्रभुजी विराजमान हैं तब भक्तजन महाभक्ति सूं सुवर्ण मणि मुक्ता जटित सुन्दर पाट के पवित्रा प्रेम सूं लावते भये हैं। सो दक्षिण हस्त कमल के मूल में बांधे जिन पवित्रान कूं श्रीजी अंगीकार करते भये हैं। और अनेक प्रकार के अमूल्य अतुल सुन्दर रत्न सुवर्ण हीरा आदि भेट करते भये हैं। तामें नर्तक समूहन सूं नाचत, गायक चतुरन सूं गान करत, वादक समूहन सूं बजावत, सेवकन सूं सेवा करत, के प्रसन्न होय रहे भक्तन सूं होवत, बंदी चारणन सूं स्तुति करत, अत्यन्त सुन्दरन सूं सुन्दर वर, के चतुरन सूं अत्यन्त चतुर, गुणीन सूं गुणी, कविन सूं कवि, के पंडितन सूं पंडित, के दौड़ रहे भक्तन सूं दौड़त, कूद रहेन सूं कूदत, दान कर रहे भक्तन सूं दान करत, हंस रहे भक्तन सूं अत्यन्त हंसत, नर्म परायण सूं नमन कूं करत, के भक्तन सूं अत्यन्त भक्ति वारो प्रीतम सूं अत्यन्त प्रियान के मंगल सूं अत्यन्त मंगल, गुरुन सूं अत्यन्त गुरु विशेष कहा कहें, के वैसे या गोकुल रत्न सूं गोकुल रत्न रूप मनोहर भाग्यवारो वैसे वैसे अत्यन्त चतुर जो ऐसो कोउ अनिरवचनीय पवित्रोत्सव है सो वैसे वैसे भक्तन कूं और प्रीतम श्रीजी कूं हू अत्यन्त प्रसन्न करतो भयो है। याके अनन्तर प्रिय श्रीजी श्रावण मास की शुक्ल त्रयोदशी के दिन दुहार नाम गाम कूं प्राप्त होते भये हैं। और प्रभुन सूं वहोर वार निवारण कियो सो रसिकदास सो गोकुलदास मेहरा या गाम में ही आय मिलतो भयो है। पट्टी गाम पर्यन्त संग चलके पीछे फिर रहे जिनकूं ऐसे कहते जे ''मार्ग कूं न जानवे वारे हमकूं यह तो मार्ग दिखायवे

ही आये हते ।।'' ऐसे ही श्रीजी हांसी करते भये और या दुराह नाम गाम में रसिकराय श्रीजी अपने स्वरूप रत्न सूं भोजन घर कूं शोभायमान कर रहे हैं । तब विकृत नेम वारो भक्त कल्याण पांडा दीखवे को सुन्दर इन्द्रवारुणी के बहोत फलन कूं के कटु तुंबी के बोहत फलन कूं अपने वस्त्रन में धरके वृन्द सबन कूं दुर्ल्लभ यह फल मोकूं मिले है या विचार सूं दौड़त ही प्रभुन के पास आयके विनय करतो भयो है । प्रभो मार्ग में आपके शाक के अर्थ ढूंढ़ रहे मैंने यह मनोहर फल पायो है, बहोत सुन्दर है । औरन कूं बोहोत दुर्लभ हैं, सो हे प्रभो ! मेरे ऊपर कृपा करी आज और शाक कूं छांड़के पक्के भये इन फलन कूं अत्यन्त स्वाद शाक बनवावो श्री गिरिधारी जी कूं समर्पण करके आप वेग ही लेवें । हे कृपानिधि पीछे अपनो भोजन से महाप्रसादी यह सगरो मेरे को ही देवें, और याचना हू करतो और थोरो सो हू औरन को नहीं देवे, तब इनकूं लावने वारो हों अकेलो ही सबके देखत ही हंसत हंसत ही के दिखाय दिखायके ही लेवुंगो । ऐसे कहकर सो कल्याण भक्त अभिमान सहित बिन फलन कूं प्रभुन के आगे धरतो भयो है, और श्री महाप्रभुजी तो विनकूं देखके अत्यन्त हंसत ही याकूं कहेत भये हैं -- ''के मूर्ख पापी यह भोजन योग्य नहीं हैं । यह तो बोहोत ही कड़वे हैं । कालकूट विष के भैया हैं ।'' तब लज्जित और उदासीन ताप वारे नीचे होय रहे माथे वारे या कल्याण कूं सगरे भक्त ही हंसत हंसत ही कहेते भये हैं के -- ''तुम अकेले ही इनको भोजन करो, हमकूं नहीं चहिये, और कृपासागर श्रीजी तो विनकूं और हू भूलके कोऊ नहीं लेवे या विचार सूं अपने भक्त द्वारा गड़ा में ही दुबकवाय देते भये हैं । याके आगे श्रीजी चतुर्दशी तिथि में वहां सूं कुलोर नाम गाम कूं प्राप्त होते भये हैं । वहां राजमल नाम प्रभुन को जो श्रेष्ठ भक्त है सो अपने संबंधीन के सहित ही प्रभुन के आगे आयके प्रेम सूं सुवर्ण माणिक सुन्दर मनोहर वस्त्रन सों ही वा डेरा में ही प्रभुन को अत्यन्त पूजन करत भयो है । याके आगे मार्ग में श्रीजी सतद्रु (सतलज) नाम नदी में यथाविधि स्नान करत, तब अपने भक्त गिरिधर कूं दुष्ट पोहोरुवा ने मार्यो सो स्वयं देखके श्रीजी वा पोहोरुआ कूं धिक्कार करते भये हैं, और प्राणनाथ कृपा के सिंधो श्रीजी अपने कोशपति, के अधिकारी कूं आज्ञा करते भये हैं, के जब हम गोकुल पधारें तब हमारे घर की रीतिन कूं न जानवे वारे मूर्ख या दुष्ट पोहोरुआ कूं वेग ही निकार देनो । और या कुलोर नाम गाम

में मथुराजी सूं चतुरा नागा चतुरागल मलरा आदि बहोत ही विरक्त आवते भये हैं । ये सबहु प्रभु के श्रीमुख को दर्शन करते भये हैं, के भीतर अत्यन्त उत्साहित होते भये हैं । तामें ब्रह्मादिकन कूं ही दुर्ल्लभ हैं चरणकमल जाके ऐसे सो प्राणनाथ श्रीजी लोकन में भाग्यवारे वा विरक्त लोकन में प्रसन्न कृपादृष्टि कूं करते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले पंचम स्तरंग समाप्तम् ॥५॥

षष्टम् तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षष्टम् तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **कश्चिमम्लेच्छ वेरस्तरवः सरिता वसन्स विधे**

स्च्छन्प्रियस्य संविधे दर्शन भूपे विवान्च्छ तत्प्रिती ॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के -- याके अनन्तर वा नदी के निकट निवासी कोऊ सैयद जाति वारो म्लेच्छ प्रवर भक्त उच्छलित प्रीति वारो होयके प्रिय के दर्शन कूं इच्छा करत दर्शन कूं प्राप्त होतो भयो है । अत्यन्त स्वाधीन हमारो प्रिय श्रीजी वा सैयद कूं सर्वोपर विराजमान सर्वतो मधुर अपने स्वरूप को दर्शन करावते भये हैं । वा स्वरूप को दर्शन करके सुन्दर बुद्धि वारे अपने संगी यवनों के संग वार्ता कूं करतो भयो है । के "हे मित्र तुम तो जानो हो के दुष्ट सन्यासी के उपद्रव सूं म्लेच्छ राजा सूं बुलाये वाके निकट पधारे हैं, यह सत्य नहीं जाननो । **यह तो मिस है, वास्तव में तो भगवान हैं । सो सन्यासी कहा कर सके है । कछु हू नहीं कर सके है । यह तो मनोहर भाववारे कितनेक भक्तन के जाके भाग्यन सूं आकर्षण कियो भयो विनके नेत्रन कूं शीतल करवे लिये विलास सहित पधार रहे हैं । मधुरता, सुन्दरता, चतुरता, विलास, निर्दोष गुणन सूं के समर्थानंद शणगार रसरूप अत्यन्त अद्भुत लीला करुणा सूं के सहायक की अपेक्षा रहित प्रभु ताके सुन्दर स्वभाव के निष्कपट प्रेम के, धर्म के अत्यन्त उच्छलित यश सर्वातीत लक्ष्मी, विनय गंभीरता, तेज, क्षमा, सत्य, अहंकार रहित, ज्ञान, सत्य उत्तम विद्या यासूं**

चारों ओर मिल्यो भयो थको उपरात्पर महा अनिरवचनीय तत्व ही स्फुरित होय के प्रतीत होय है तथा निर्दोष अपने समान प्रेम के पात्र तथा कोमल लाल लाठी जिनके हाथ में है, हम सरीखेन कूं आर्द्र करें हैं । ऐसे भक्तन सूं जो चारों ओर सूं वेष्ठित हैं के मिल्यो है ऐसे भक्त जाके संग में हैं तथा ऐसे स्वरूप के संबंधी अत्यन्त तीक्षण धार वारे गुण समूह रूप श्रेष्ठ टंकण सूं बिना कारण ही वज्र समूह सूं हू अत्यन्त कठिन चित्त कूं हू जो भेद कर रह्यो है के द्रवीभूत कर रह्यो है । ऐसे या परात्पर अनिरवचनीय तत्व कूं दर्शन कर रहे मेरे या नयन मन इन्द्री समूह के बाहिर भीतर रोम रोम में अंग अंग में दीर्घ अमृत की धारा कूं वर्षा कर रह्यो जो मेरो सर्वोपर शोभायमान भाग्य प्रकट भयो है । वाकूं वर्णन करवे में हौं समर्थ नहीं हूं तो मेरे सूं अन्य कैसे समर्थ होय सकेंगे । इत्यादि वचन कहकर तथा हृदय में उच्छलित होय रहे और हू कहवे में इच्छा करत कहेवे में अत्यन्त अशक्त होय जाते भये हैं । जासूं गद्‌गद् स्वरा सूं सूख गयो है कंठ जाको ऐसो होय जातो भयो है । **प्रातः समय में फुल्लोर सूं उत्पल गाम में पधार रहे प्रभुन के आगे उत्पल निवासी भक्त प्रवर गिरधरदास, मुकुन्ददास भक्ती सूं मनोरथ गान वाद्य व अनन्त संबंधी भक्तन के सहित आवतो भयो है ।** और सुन्दर मंगल नृत्य गान सूं अपने घर में ही, प्रभुन को पधरावतो भयो है । अधिकार सूं अधिक ही सेवा करतो भयो है । ईश्वरेश्वर प्रभुन कूं अत्यन्त ही प्रसन्न करतो भयो है । बोहोत प्रकार की भेट, वा सामग्री कूं भेट करतो भयो है । याकूं यह श्रीजी अंगीकार करते भये हैं । आनन्द सूं आरोगते भये हैं । वहां यह भक्त प्रवर महाप्रभुन के चरणन में, और हू अनेक प्रकार की सुवर्ण मणी, मुक्ता निर्मल अमूल्य वस्त्रन कूं भेट करतो भयो है । भादों की कृष्ण प्रतिपदा में श्री महाप्रभुजी उत्पल (उथल) गाम सूं प्रस्थान करते भये हैं । तब सुल्तानपुर में रहेवे वारो हरीगोविंदजी गान वाद्य के सहित वैष्णव समूह के सहित ही दूर परयन्त भक्ती सूं प्रभुन के आगे आयके अपने घर में पधरावतो भयो है । वा हरीगोविंद कूं श्री महाप्रभुजी अपनो नाम देते भये हैं, तथा सो हरिगोविंदजी गान वाद्य के सहित वैष्णव समूह के सहित महाप्रभुन में अपने सर्वस्व कूं तथा अपने कूं हू निवेदन कर देतो भयो है । सुलतानपुर सों श्रीमहाप्रभुजी द्वितीया तिथि में गोविंद बाग में पधारते भये हैं, वहां के निवासी बद्रीप्रसाद आदि सगरे भक्त ही दूर पर्यन्त

ही आगे आवते भये हैं, के बिहारीदास आदि आगे आवते भये हैं। भक्ति सूं प्रणाम करते भये हैं, लालदास आदि हू आवते भये हैं, प्रणाम करते भये हैं, तामें परमानन्द की जो वालो नाम बेटी है वाके घर कूं रसिकराय श्रीजी शोभायमान करते भये हैं। वाके शील स्वभाव सूं श्रीजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं। सगरे तीर्थ जाके चरण कमल के रज कूं चाहना कर रहे हैं, ऐसे श्री महाप्रभुजी यथाविधि स्नान करवे सूं व्यास नदी कूं अत्यन्त आदर करते भये हैं। तथा पट्टी गाम में ठहेर्यो जो भगवानदास को गोद को पुत्र है सो उच्छलित भक्ति वारो होयके वाद्य गान नृत्य के सहित, वैष्णवन सूं मिलके अपने गाम में ही महाप्रभुन कूं पधरायवे अर्थ आगे आवतो भयो है। भादो की कृष्ण द्वितीया तिथि में चौदह लोक के न्यामिक श्रीजी श्री गोकुलपाल, पट्टी गाम कूं शोभायमान करते भये हैं। तामें अपने जन्म कूं सफल करत ही भगवानदास की स्त्री केसरदेजी अत्यन्त प्रिय प्रभुन की सेवा में अनेक प्रकार विधा तथा अनेक प्रकार के नृत्य सेवा में चतुर अर्थात् अनेक रसिक मृगनयनीन के समूहन कूं, के अनेक प्रकार के मंगलमय देश देश के पट वस्त्र, कंबल, के अत्यन्त मनोहर अमूल्य बिछोना समूहन कूं मार्ग में सजावती भई हैं, तामें अनेक प्रकार के सुन्दर रंगवारे सुन्दर देश देश के उच्छलित अद्‌भुत सुन्दर चित्रवारे गणना रहित अमूल्य वस्त्र समूहन सूं के पट वस्त्र समूहन सूं नैनन के सुखदायक तथा अद्‌भुत रचना वारे देशांतर के अत्यन्त बड़े मूल्य वारे कोमल स्पर्श वारे मखमल नाम वस्त्रन सूं के लाल रंगीन वस्त्रन सूं के अत्यन्त सुगंधित पुष्पन के समूहन सूं शोभायमान सगरी गली सुन्दर बहोत शोभायमान होती भई है। विन गलीन के ऊपर बांधे जे मनोहर अत्यन्त दीर्घ अत्यन्त मनोहर विस्तार वारे नाना प्रकार के चंदरवा हैं। सुन्दरवर अत्यन्त सुखदायक परम कोमल सर्व प्रकार सूं मधुर तथा रसिक हरिण नयनी जीवन के जीवनरूप सुन्दर मंगल रूप अत्यन्त हित रूप ऐसे श्रीमद् गोकुलराज प्रेम के न होयवे सूं ब्रह्मा रुद्रादिक देवतान की, अयोग जो कठोर के भाग्य रहित दृष्टि है सो मत परे, या भाव सूं महाप्रेम सूं विनकी दृष्टि कूं मानो रोकवे लिये ही वे सगरे चंदरवा आकाश में प्रसरके जहां कहां स्थित होते भये हैं। और मंगल कलस कूं धारण कर रही शोभायमान निर्दोष सौभाग्यवारी परम चतुर, के उदय होय रहे हैं निमर्याद नयन विलास जिनके, अद्‌भुत है शोभा जिनकी ऐसे मधुर विविध गीतन कूं

गान कर रही सुन्दर चन्द्रमुखी सुन्दरीन सूं मिली भयी जो मृगनयनी गणन की शिरोमणि उछल्लित प्रीति वारी भगवानदास के पत्नी केसरदे है, सो रसिक चतुर मनोहर प्रभुन के सार्वभौम महारसिकराय प्रभुन के सनमुख जायके लज्जा सूं पकरी भई, सो केसरदे यद्यपि महाप्रभुन के पूजन करवे कूं समर्थ नहीं भई है ॥ तथापि यह महासुन्दरी प्रिया केसरदे के जे दृष्टि, मंद हास्य, भक्ति आदर प्रणाम, के विलास स्तंभ स्वेद पुलक गद्‌गद वचन के कंप वर्णान्तर के उछल्लित हर्ष के आंसू हैं तथा लज्जा समूह सूं छिपनो के कछुक उघाड़ो मुख कमल के उच्छल्लित अधर की कांति तथा प्रफुल्लित कपोल हैं के प्रेम रूप उन्माद सूं या प्रिय कूं गाढ़ आलिंगन करवे लिये दौड़ रही कारी और लाल जो दंतन की कांति है, के हर्षो विशेष रूप औषध के पान करवे सूं अत्यन्त पुष्ट जे सगरे भुवनों में न समाय रही अंगन की लावण्यता है, के रत्नखचित आभरण समूहन के जे प्रकाश हैं, के जे झनकार हैं, के ऊपर पहेर्यो जो वस्त्र है वाकी पीरी कांति के जे समूह हैं, के वा देह की जे उच्चता, के सुन्दरता के समूह हैं, के अंगीया की जो लालिमा है, के हारन की जो श्वेत लछमी तरंगन के जे नृत्य हैं, के श्रीमुख रूप सरोवर में नयनरूप कुमोदिनी सूं प्रकट होय रहे जे महानिधि हैं, के वक्षस्थल रूप तालाब पर विराजमान कुच रूप चकोरन के उदय होय रहे जे सुमेरु पर्वत जैसे सौन्दर्य हैं, के नाभी रूप सरोवर में प्रकट भई रोम रूप लतान सूं उदय होय रही जे सूर्य की किरण हैं, के शरीर की कोमलता को समूह रूप जो शरद ऋतु है, वाके प्रसर रहे जे चन्द्रिका के चमत्कार हैं, के कंठ रूप आम के वृक्ष पर विराजमान कोकिला के उदय होय रहे गान सूं गिर रही जे अमृत की लहेरी है, के लज्जा रूप सदा निवास संबंधी घर में उत्साह रूप दृष्टि, कि हाथ कमलन सूं कियो जो प्रिय के स्वरूपामृत समुद्रन को पान है, कमर की कृशता रूप क्षीर समुद्रन के मध्य सूं निकस रहे जे अमृत के माधुर्य हैं, के गज के विजय करवे वारी गति रूप सुमेरु पर्वत सूं उदय होय रहे जे रत्न संबंधी किरणन के समूह हैं, के नयनन की श्वेत श्याम लाल काति रूप त्रिवेणी ने दान किये जे मुक्ति समूह हैं, के नाभी की गंभीरता रूप सरोवर संबंधी कमल में निवास वारी लक्ष्मी के जे उत्साह हैं, के मंद हास्य पूर्वक कटाक्षन सूं देखनो रूप जो कल्पवृक्ष संबंधी पक्वफल के रस विशेष हैं, के रसात्मक भक्ति रूप कामधेनु के क्षीर सूं उदय होय रहे जे

सघन देह की कोमलता है, के खंडन किये लक्ष्मी के गर्व रूप गज के कुंभन सूं गिर रही मुक्तावली सूं शोभायमान करी है भूमि, जा नेह से श्रीअंग की सुन्दरता रूप सिंह के जे वैसे गर्जनाद हैं, के रोम हर्ष सहित मनोरथ रूप हस्त कमल में धारण किये छत्र की जे शोभा है, के शेष विरह सूं प्रकट भये जे स्वासन सूं उदय होय रहे जे चमर आंदोलन हैं, के चुल्लु रूप पान कियो है रति के मद रूप सागर जाने, ऐसे सौन्दर्य रूप अगस्त जे महिमा समूह हैं, वा वा उपमा के गर्व रूप अंधकार समूह कूं नाश करवे वारे स्वरूप. रूप सूर्य के, अपने स्वजन के हर्ष सुख रूप कमल समूह सूं प्रफुल्लित करवे में चतुर, सगरे भुवन में प्रसर रही हैं, ऐसी किरणन के जे प्रकाशमान, जे वैभव हैं, सुवर्ण के पर्वत की शोभा समूह के विजय करवे सूं उच्छलित होय रहे कुच युगल की पुष्टता और उच्चता रूप नयन कमलन सूं प्रगट भयो लाखन करोड़न अमृत समुद्रन सूं बरस रहे, वा वा रस कूं कहेवे सूं, वैसे वैसे वा वा रस कूं अत्यन्त स्तुति कर रहे जे स्नेह सूं पूर्ण होयवे सूं, भीतर बाहिर स्याम ऐसे कटाक्ष समूह हैं और वैसे वैसे प्रिय के अनुभाव रूप पवन सूं कंपायमान किये वस्त्र समूहन की कोमलता के गिर रहे मुक्ताफल रूप मंद हास्य वारेजे मुखारविन्द हैं तथा अत्यन्त नाच रही कोमलता के सुन्दर कंकण, नूपुरन के नाद हैं, के लज्जा रूप कमल सूं गिर रहे मधुरता सिंधु के जे रत्न समूह हैं तथा प्रणय विशेष सूं रूप चिन्तामणि सूं प्रकट होय रहे वांछित अर्थ की जे शोभा है, हृदय रूप सरोवर संबंधी हर्ष विशेष है, के प्रिय के वदनचंद्र के उदय सूं उछल रहे प्रेम समुद्र के चारों ओर प्रसरे जे आकाश को स्पर्श कर रहे, के अत्यन्त ऊंचे हजारन अर्बन कल्लोल हैं, के उत्कंठारूप कामधेनु के उच्छलित होय रहे कटाक्ष रूप क्षीर प्रवाहन सूं सगरे जगत कों बहेरो कर रहे जे लज्जा रूप पर्वत के, भेद के शब्द हैं के हर्ष रूप, पर्वत सूं गिर रहे आंसू समुद्र रूप झरणां समूहके झनकार हैं, के देह रूप चंपा की वेल सूं उदय होय रहे सुवर्ण के भूषण रूप पुष्पन की मकरंद है के श्री हस्त रूप कल्पवृक्ष के कंकण संबंधी प्रभारूप जल की जो शीतलता है, भुज रूप लता संबंधी पुरन में के बाजूबंधन में प्रकाशमान बोहोत मणीरूप जल की शीतलता है, बोहोत मणीरूप पुष्पन के जे सुगंधित धारा है तथा मुख रूप जो शणगार सिंधो हैं, वामें ताटंक रूप भ्रमर विलासन के जे उदय हैं, के श्री अंग में लेपन जैसे विराजमान गौर भाव

रूप सुन्दर विशेष शोभायमान अंगराग की जे सुगंध है, निवी सूं आच्छादित हू नितम्बन की अत्यन्त मद कूं प्राप्त होय रही विपुलता, उच्छलित होय रही जे कांती है, के देह रूप कदली स्तम्भ, के अधर रूप पल्लव के निगरक उदय होय रहे मंद हास्य सूं चन्द्रमा के जे सौंदर्य हैं, के निरादर सूं मंथन कीये अमृत समुद्र की मानो रुधिर सूं लाल होय रही वाणी के विशेष समूह, वैसे और हू व्यापारी के निरन्तर उद्यम वारे रसात्मक भाव हैं, जिनकूं मेरी वाणी वर्णन नहीं कर सके है। ऐसे परम चतुर मनोहर प्रथम कहे वे सगरे भाव बड़े आदर सहित वा प्रिय कूं प्रणाम करते भये हैं। याके अनन्तर भीतर पधारके स्व निमर्याद कृपा के सागर श्रीजी मुख्य भवन के मध्य में आपके अर्थ रचना कियो जो बड़ो आसन है वा पर श्रीजी विराजमान होते भये हैं। वहां प्रेम रूप महा समुद्र के बलवान जे तरंग समूह हैं सो वा कोमलांगी प्रियाजी कूं लज्जा के हाथ सूं बड़े यत्न सूं हू छुड़ाय लेते भये हैं। तासूं सो प्यारीजी तब वा प्रिय के निकट ही पधारके विनय सहित सुवर्ण रत्न रूप के फूलन सूं के सुन्दर सुगंधि वारे फूलन सूं के मनोहर मुक्ताफलन सूं सोना मणी सुन्दर पुष्प तथा मुक्ताफलन की विविधि प्रकार की मालान सूं के अनेक प्रकार की भेटान सूं के अनेक प्रकार के भक्ष्य, भोज्य लेह्य चोस्यन सूं नाना प्रकार मीठे फलन सूं सुन्दर धूप, अगर, वस्त्र, भूषण, मंगल आर्ती जय शब्द सूं के अत्यन्त आनन्द दायक बगीचान आदि के दिखावन आदि सूं प्रभुन की अत्यन्त सेवा करती भई है। और वाको पति दूसरे दिन वेग सूं लाहोर सूं आय जातो भयो है। तथा बड़े प्रेम सूं श्री गोकुल के प्राणपति कूं प्रणाम करतो भयो है। और ये श्री गोकुल प्राणपति श्रीजी, या भगवानदास पर अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं। या पट्टी गाम वड़ाला गाम सूं, के रहिलात, लवण, उदमद, टाड़ा पलायचा, कलनारे गाम सूं वैसे और हू बहोत देशन सूं के मयाणी गाम सूं अनेक प्रकार के हजारन करोड़न भक्त आयके बड़े प्रेम सूं प्रभुन कूं प्रणाम करते भये हैं। के कृतकृत होय जाते भये हैं। वहां यह श्रीजी जन्माष्टमी के महोत्सव कूं करते भये हैं। के या अष्टमी के दूसरे दिन प्रातःकाल श्री महाप्रभुजी उत्साह समूह सूं भक्तन के प्राप्त किये असंख्यात दही के भरे कलसान सूं, के असंक्षात बाजे, नृत्य गान मनोहर अनेक प्रकार के निर्तक तथा मनोहर स्वच्छ अनुराग भक्त सूं पूरण सुन्दर वैराग वारे असंक्षात कीर्तनियान सूं के भगवानदास के

सेवा मन्दिर में विराजमान अपने स्वरूप सूं दधि कांदो, के महाउच्छव कूं करते भये हैं । और जितने केसर कुंमकुंम अनेक प्रकार के तथा कस्तूरी, कपूर, अगर, सार, चन्दन, मिसरी, लवंग, मिरचा, दूध, भक्ष्य भोज्य, के और हू जितनी वस्तु वांछित हतीं सो यह भक्तजन अपनी इच्छानुसार मोदीन सूं वा वा वस्तु कूं लावें हैं । वा वस्तु के वितने बहुत प्रकार के मोल कूं भगवानदास मोदीन के प्रति देतो भयो है । तथा प्राणपति श्रीजी कूं तथा श्रीजी के भक्तन कूं बोहोत प्रकार सों ही सेवा करतो भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले षष्टम् स्तरंगः समाप्तम् ॥६॥

सप्तम् स्तरंग:

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्तम् तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ सनवट्यं भगवान भोजन लीला पलौकिक**

तत्र आविर्भाव्य स्वीया तत्र त्याश्चलमाश्वास्यः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं -- याके अनन्तर नवमी तिथि में भगवान श्रीजी याही गाम में अपनी भोजन लीला कूं प्रगट करिके वहां के भक्तन कूं अत्यन्त धैर्य देकर करुणासागर श्रीजी वा स्थान सूं अपने संग सेवक दासन के सहित ही प्रस्थान करते भये हैं । तथा वा समय में भार उठायवे में समर्थ बोहोत ऊंटन कूं भगवानदासजी या महाप्रभुन के आगे भेट करतो भयो है । विनकूं श्रीजी अंगीकार करते भये हैं । और रुद्राक्ष माल त्रिपुंड पंचायतन आदि पूजा है प्रिय जाकूं, ऐसे वा दुष्ट संन्यासी कूं अप्रिय बैरी रूप तुलसी माला, ऊर्ध्व पुंड भगवद सेवा आदि भगवद धर्म है विनकूं त्रिलोकी के मंगल अर्थ, के भगवद मुक्ति मार्ग के रक्षा अर्थ, दृढ़ता सूं स्थापन करि रहे परम मंगल सकुमार हमारे प्रभुन कूं अत्यन्त उग्र दंडधारी म्लेच्छपति की सभा में कहा होयगो या प्रकार की बढ़ि रही चिन्ता के समूह सूं प्रगट भयो ज्वर ही प्रिय प्रभुन के सेवक वीरपाल भाई तथा कृष्णदास, नागजी भाई कूं वेग सूं ही दबायवे अर्थ अभिलाखा करतो भयो है । वा ज्वर कूं अत्यन्त निरादर करवे लिये श्री

महाप्रभुजी वा पट्टी गाम में बहोत प्रकार सूं अपने वैसे वैसे वा वा वचन सूं समाधान करिके विनके पास अपने श्रेष्ठ भक्त जीवराज कूं ठहेरावते भये हैं। **तथा सुन्दर कुलीन घोड़ा पर सवार होयके प्रिय स्वयं भगवान श्री गोवर्द्धनधारीजी ही प्रिय महाप्रभु की रक्षा अर्थ सदैव ही प्रिय के संग चलें हैं, या प्रकार के स्वप्न सूं ही विनकूं समाधान करवे लिये ऐसे स्वप्न कूं हू दिखावते भये हैं।** तथा श्रीमुख सों हू आज्ञा करते भये हैं, के तुम चिन्ता सागर में मति डूबो हमारी रक्षा के अर्थ सदा सावधान श्री गोवर्धनधारी जी ही मार्ग में हमारे संग चलें हैं, ऐसे समाधान करिके श्रीजी आगे पधारते भये हैं। तामें पट्टी गांम सूं नव सराह में श्रीजी के पधारत ही मार्ग में भगवान भाई के उदर में शूल दुःख होतो भयो है, याकूं श्रीजी कृपा सूं वेग ही शान्त कर देते भये हैं। तब नव सराह गांम में सो श्री महाप्रभुजी वहां के जीवन कूं वैसे वैसे या प्रकार सूं कृतार्थ करत रात्रि वहां निवास करते भये हैं, तहां सूं श्रीजी प्रस्थान करिके लाहोर नाम सुन्दर नगर में प्राप्त होते भये हैं। यद्यपि श्री महाप्रभुजी ने अपनो पधारनो अत्यन्त छिपायो हतो, तथा आपके सबरे भक्त यह जानके वे सगरे ही आपके निवास स्थल, सुन्दर बगीचा में आगे आवते भये हैं। यहां श्रीजी आप अपने भक्तन कूं शोभा के भार सूं मनोहर अपनी भोजन लीला की मधुरता को दरशन करावते भये हैं। यहां भगवानदास, घनश्यामदास, नारायणदास आदि भक्त वा श्रीजी के श्री मुख को दर्शन करते भये हैं। तथा सगरे भक्त ही शुद्ध पक्व असंक्षात दाड़िम फल, जैसे अनार कूं चरणन में भेटकरते भये हैं, विनकूं श्रीजी अंगीकार करते भये हैं, विनमें घनश्यामदास असंख्य प्रार्थना करतो भयो है। तासूं करुणासिंधु श्री महाप्रभुजी घनश्यामदास के घर कूं अपने चरण कमल सूं सुगंधित करते भये हैं। वहां अमोलक दिव्य आसन पर श्रीमद् गोकुल के सुन्दर मणिरूप श्रीजी विराजमान हते। असंख्यात भक्त समूंह हू दरसन करते हते। तामें छः सात परम चतुर क्षत्राणी सुन्दरी आयके अपने अतुल्यातिशय के महा सौन्दर्य कूं श्रीजी के चाहना वारे कटाक्षन सूं अपने कानन कूं श्रीजी के श्री मुखारविन्द सों प्रगट भये नाम सूं सफल करती भई है। एकादशी तिथि में श्री महाप्रभुजी भक्तन के संग करी अत्यन्त दुर्ल्लभ फलाहार लीला कूं कृतार्थ करते भये हैं। तथा भगवानदास की माता की विज्ञापना कूं मानके कमलनयन श्री महाप्रभुजी श्रीगोकुल मणी रूप अपने स्वरूप सूं वाके घर कूं

शोभायमान करते भये हैं । तथा जाके दर्शन को किणका को लेश हू ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्लभ हैं ऐसी निधि समूहन की वर्षा करि रहे, अपनी शयन लीला कूं रात्रि समय में वाके घरमें ही श्रीजी प्रगट करते भये हैं । द्वादसी के दिन श्री महाप्रभुजी के चरण कमल की रज कूं सगरे ईश्वर हू नहीं देख सके हैं ऐसे ता भोजन लीलान सूं प्रगट करते भये हैं । सो भगवानदासजी सुन्दर वस्त्रन सूं चन्द्रमुख प्रभुन कों पहेरामणी करके तथा मृग जैसे वेग वारो सुन्दर लीले घोड़ा कूं सजाय करिके भेट करके वा महाप्रभुन सूं अतुल अनन्य मनोहर अत्यन्त दुर्लभ जा जा पुरुषार्थ समूहन कूं सो भगवानदासजी प्राप्त भयो है । विनकूं गणना करिवे में को समर्थ होय सके ? अपितु कोउ नहीं होय सके है । तथा यहाँ और हू लाखन करोड़न भक्त ही अनेक प्रकार की सुन्दर वस्तुन कूं भेट करते भये हैं । तासूं कृत्य कृत्य ही होते भये हैं । तथा सुन्दर बुद्धिवारो भाग्यवान श्रीमान घनश्यामदास जी सो प्रिय श्रीजी की यात्रा में उपयोगी बैठवे में सुखदायक मनोहर सुखपाल कूं प्रभुन कूं प्रेम सूं भेट करतो भयो है । तथा आगे यात्रा में उपयोगी सगरी मनोहर बिन सामग्रीन कूं हू भेट करतो भयो है । वहां सूं पधारके श्रीजी इरावती गाम नदि कूं नाव सूं उतरिके रात्रि समय कों पुजीला नाम गाम में विराजके वाकूं पावन करते भये हैं । दूसरे दिन में श्री महाप्रभुजी ईमनावाद नाम नगर कूं प्राप्त होते भये हैं, वहां परमानन्द को दोहित्रो जो गोपालदास है सो प्रभुन के आगे आयके मनोहर बगीचा कूं भक्तन सूं शोभायमान करावतो भयो है । कि प्रभुन कूं प्रेम सूं सेवन हू अनेक प्रकार सूं करतो भयो है । तथा सगरी भोजन सामग्री कूं हू भेट करतो भयो है । या ईमनाबाद सूं आगे करुणासागर श्रीजी प्रेम सूं भाग्यनिधि घनश्यामदास ने भेट करी जो सुखपाल है वापे सवार होयके चतुर्दशी तिथि में चीपा खडगु गाम कूं प्राप्त होते भये हैं । वहाँ एक छोटो सो तलाब हतो । सबसूं निरादर योग्य वा तलाब कूं यह श्रीजी वेग ही अपने स्नानादि सूं सुन्दर जलवारो के सुन्दर तीर्थ रूप वैसे बहुत मान को पात्र ही बनाय देते भये हैं । विशेष कहा कहें के याके जल सूं सगरो और वहेवार हू स्वयं करते भये हैं, तथा अपने सगरे भक्तन सूं सगरो वहेवार वा जल सूं ही करावते भये हैं । **इतने सूं ही वा गाम के तथा वा तलाब के समीप निवासी, जीव समूहन कूं हू जैसे उद्धार श्रीजी ने कियो है वैसो स्वयं ही विचार लेनो । तथा वा गाम में कोई एक अत्यन्त दरिद्री**

ब्राह्मण सबन सूं अजान्यो नहीं पहेचान्यो ही या प्रभुन के पास आयके प्रभुन के आगे विनय करतो भयो है के ''जब मैं गया तीर्थ जाकर श्री गोकुल में आया था, वहां श्री आपुका मैं दास भया था ॥'' या प्रकार अंजुली बांधकर विज्ञापना करत अत्यन्त दीन ब्राह्मण छटांक भर मिसरी दीनबंधु प्रभुन के आगे भेट करिके प्रणाम करतो भयो है । सो कृपा सागर श्रीजी हू रोम हर्ष सहित ही या मिसरी कूं हस्त सूं उठायके कछुक श्री मुखारविन्द में धारण करते भये हैं । यामें बोहोत स्वाद है याकूं पीछे आरोगेंगे यह विचार सूं कछुक कृष्णदास के हाथ में हू धारण करते भये हैं । याके अनन्तर भादों की अमावस्या के दिना गुजरात नाम पुर कूं प्रभु प्राप्त होते भये हैं । सो वा गुजरातमें श्रेष्ठ भक्तन के संग सभा घर में विराजमान होयके मंदहास्य सूं पूर्ण श्रीमुख वारे प्रभु ''यह गांम गुजरात के नाम कूं सो धारण करे है'' ऐसे अभिप्राय पूर्वक कहेत विन भक्तन के चिन्तामणि के करोड़न लाखन समूहन कूं आनन्द सिन्धु के अपार समूहन कूं वर्षा करते भये हैं । तब निहालचन्द मंद मंद हंसत ही कहत भयो है कि रस सागरन के सागर श्रीजी के महात्म कि नाम हू गुण समूह वारे होय हैं । जैसे सुवर्ण के, श्रीखंड, चन्दन के रत्नाकर समूह, सुधा कारिक चन्द्र यह नाम हू गुण कूं नहीं छांड़े हैं ऐसे अर्थवारी भाषा कथा कूं पढ़िके ''हे प्रभो यामें हू प्रभु के योग्य कछु सुन्दर घर सूं अवश्य ही होयगी'' ऐसे कहेतो भयो है । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के वा सुन्दर समय में ऐसे में इच्छाबल हू सूं कोऊ सुन्दरी कूं बुलावत भये हैं, के चंचल जाके नयन हैं, सुन्दर दीर्घ जाके केश हैं, पूर्ण चन्द्र जैसे सुन्दर जाको श्रीमुख है, के मन्द हास्य सूं मनोहर जाके अधरविंव हैं, पुष्ट ऊंचे जाके स्तन हैं, भारी जाके नितंब हैं, सुन्दर कृश जाको उदर है, सुन्दर जाकी कमर है, हाथी के कर जैसे जाके उर हैं, सुन्दर जाके भुजलता हैं, सगरे अंगन में गहेनान सूं आलिंगत है, सुन्दर गांभीर्य चातुर्य वैसे और हू सगरे गुण प्रथम प्रथम या प्रकार सूं जाकूं दृढ़ ही ग्रहण करि रहे हैं, ऐसी कोमलांगी सोलह वरस की मनोहर सुन्दरी वा प्रियवर भगवान निराकार परब्रह्म श्रीजी के निकट आयके दासी रूप सूं अपने कूं तथा अपने सर्वस्व सूं वा महा रसिकवर प्रभुन के प्रति अर्पण करती भई हैं, और रसिकराय श्रीजी प्रसन्न होयके चन्द्रमा कूं विजय करिवे वारे धारण किये सुन्दर कोमल मंद हास्यवारे श्रीमुख कमल सूं वा सुन्दरी

के प्रति अपने नाम वारी पंचाक्षरी कूं कहेते भये हैं, के जाके भीतर प्रवेश करवे सूं काम के पांच वाणन सूं जैसे होय वैसे ही सो सुन्दर दन्त वारी प्यारी कोई अनिर्वचनीय मनोहर रस भरी दशा कूं ही प्राप्त होती भई है, तामें सखी ने स्नेह सूं पकर्यो है हाथ जाको ऐसी सो प्रियाजी सून्य भई, के उन्मत्त भई, के ग्रह सूं अत्यन्त ग्रहण (ग्रसित) करी भई, के दिन है के रात्री है, के सुख है के दुःख है यह कहा है यह को है, हों कहां हूं, यह न जानत ही सो कोमलांगी अपने घर में जाती भई है। तब सो हांसी नर्म कूं मंत्री श्रेष्ठ भक्त निहालचन्दजी हंसत हंसत ही कोमल वचन सूं धीरे धीरे प्रिय कूं विज्ञापना करत भये हैं के ''हे प्रभो, मैंने जो विज्ञापना करी हती के या गाम में हू अपने नाम (गुजरात) के योग्य कछु वस्तु होयगी, सो सत्य भयो है के नहीं ?'' तब प्रिय श्रीजी हू मंद हास्य सहित हां हां अत्यन्त ही सत्य भयो है।'' ऐसे वा निहालचन्द के प्रति कहेते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले सप्तम स्तरंगः समाप्तम् ॥७॥

अष्टम तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टम तरंग लिख्यते ॥८॥

श्लोक -- **एवं गोकुलरत्न प्रेयंती भगवत्य लंचासौ**

करुणां रसकबुर यादृशी तैस्तै सुधा मधुरे ॥

याको अर्थ -- अथ श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के या प्रकार गोकुल के रत्न अत्यन्त मनोहर प्रिय भगवान श्रीजी कृपारस सूं मिली दृष्टि सूं के ऐसे मधुर वा वा प्रकारन सूं देश गाम नगरी कूं तथा मनुष्य के वैसे और छोटे मोटे जीवन कूं पावन करत उद्धार करत के अपने पद में प्राप्त करत ही काश्मीर में पधार रहे हैं। तामें या प्रभुन को जो उज्वल यश है सो सगरे मलीन जगत कूं निरन्तर ही स्वच्छ उज्वल करि रह्यो है। तामें अत्यन्त खल, पापी, दुष्ट, कुटिल जो अत्यन्त क्रूर सन्यासी है सो श्री गोकुल में रहिवे वारे नीच क्षत्राणी हसु के जमाई छीतर कूं एकांत में बुलायके स्वयं कहेतो भयो है, ''के श्री गोकुलनाथजी

तो अपने यश सूं सगरी भूमि मंडल कूं उज्ज्वल करत काश्मीर में पधार रहे हैं याकूं म्लेच्छपति देखिके अवश्य ही प्रसन्न होयगो तासूं मेरे ऊपर के मेरे आशय वारे तुमारे सदृश और जनन के ऊपर हू अवश्य ही अत्यन्त क्रोधी होयगो, तामें तुम ऐसो विचार नहीं करो हो के जासूं यह सगरो ही विपरीत होय जाय। तुम तो सगरे बुद्धि वारेन में चतुर हो कछुक विचार अवश्य ही करीये।'' सन्यासी के या वचन कूं सुनिके सो छीतरिया सगरे कर्तव्य कूं विचारके याके कान में कहेतो भयो है, सो सुनिके प्रसन्न भयो या छीतर सों हू प्रसन्न होतो भयो है। याके अनंतर वैसे प्रकार सूं सिद्धि करिके सो सन्यासी दुष्ट सभा में बैठके सगरे म्लेच्छन कूं के मथुरावासीन कूं के वैसे और दुष्टन को ही बुलायके यमुना के पार में पापी छीतरा की सम्मती सूं अपने कूं महापुरुष कहेवायवे वारे अत्यन्त कुटिल पुरुषन ने ठहेराये जे अपने पोहोरुवे हैं, के असंक्षात गामवासी हैं विनकूं अंगुरीन सूं दिखावत यहां सूं श्री गोकुलनाथ पधार के मेरे मारवे लिये चोरन कूं बोहोत ही धन दियो है सो यमुना के पार में ठहेरे हैं, शस्त्र शहस्त्र कूं धारण करि रहे या सगरे चोरन कूं तुम अपने आंखन सों देखो ऐसे कहेतो भयो है। ऐसे डरपायके सो भ्रष्ट दुष्ट चित्त सन्यासी दूसरे दिन आगे ठहेरे देखवेवारे लोकन के सामने या प्रकार लेख करावतो भयो है। के श्रीमद् गोकुलनाथजी सन्यासी के मारवे लिये दुष्ट गामवासी तथा अपने पोहोरुवान कूं बहोत ही धन देते भये हैं। ऐसे लिखवायके वाके ऊपर अधिकारी प्रतिष्ठित पुरुषन की तथा चौधरी, म्लेच्छ खजानची, के माथुर ब्राह्मण, के लाला नाम वैद्य, के वाके भ्राता, अत्यन्त दुष्ट दामोदर की तथा अत्यन्त कुटिल पापी मीतन मिश्र की मुद्रा कूं करावतो भयो है। यहां जिनको नाम कह्यो है अथवा नहीं कह्यो है बिन सबसों ही ऐसे लिखवावतो भयो है के ऊपर को लेख सत्य ही है, और इतवार खान जाकूं सगरे कार्यन को अधिकारी बनायो हतो सो कतर्दीन नाम तो वा सन्यासी सों बारंबार प्रार्थना कियो हू वा पत्र के ऊपर मुद्रा न करतो भयो है, के यह पत्र सत्य है ऐसे लेख हू न करतो भयो है। तब वा पत्र कूं सो सन्यासी सेनापति इतवार खान के पास पठावतो भयो है, सो इतवार खान कशमीर में स्थित उग्र दंडदाता वा म्लेच्छपति कूं दिखावतो भयो है। वाकूं परम चतुर सो देशपति वांचके प्रभुन पर क्रोध न करतो भयो है। इतवार खान कूं कहेतो भयो है ''के यह पत्र सर्वथा ही मिथ्या है, झूंठो

है । तासूं यह श्री गोकुलेश्वर तो परात्पर भगवान ही वा भूतल मे प्रगटे हैं अपार अगाध करुणा के सागर हैं, के रस रूप निर्दोष हैं । पुरुषोत्तमोत्तम कमल नयन अनन्त गुणन के निधि सगरे जगत के मंगल रूप श्रीमान हरी यह हैं, के यह दीन जनन के बांधव हैं तथा पतितन के पावन करता हैं, देखिवे सूं ही मनोहर हैं, स्वयं महा धैर्यवारे हैं, तासूं बड़े अपराधीन कूं हू कबहू निरादर नहीं करें हैं, किन्तु बिनके प्रबल अपराध ही वा दुष्टन कूं दंड दिवावें हैं । यह दयानिधि भगवान श्रीजी तो भगवद नाम को उपदेश करके अपने अंगीकृत सगरे जीवन कूं हिंसादि सूं, के मास भक्षणादि सूं निषेध करें हैं, जासूं जे हम सगरे म्लेच्छ हू हैं वे हू वा हिसादि में के मास भक्षणादि में प्रवर्त होयवे कूं समर्थ नहीं होय हैं, तामें वे तो महाप्रभुन के परम स्वकीय वैसे कैसे विकर्म प्रवर्त होय सके ? अपितु कबहू नहीं होय है, और जो कृपासिन्धो श्रीजी सर्प बिच्छु आदि दुष्टजीवन कूं हू मार रहे लोकन कूं वरजे हैं, सो कैसे सन्यासी के वध कूं इच्छा करे ?'' ऐसे याके वचन कूं सुनकर सो इतवार खान तब कहेतो भयो है के ''हे म्लेच्छेश्वर जो जो ही आपने कह्यो है सोयह सत्य ही है''। यासूं या पत्र में भी मथुरावासी अधिकारीन के कतर्द्दीन ने मुद्रा नहीं करी है । तब भक्तिवारेन में श्रेष्ठ आसफखान हू या समय में वा देशपति कूं कहेतो भयो है ''के जो जन या प्रभु की शरण आवे है वाकूं हू प्रभु ऐसे कहें हैं, के तुम सदैव ही सर्व प्रकार सूं ही निवर्त होवोगे, पाप कबहू नहीं करोगे, सो ऐसे प्रभो या नीच दुष्ट सन्यासी के वध रूप पाप कूं कैसे इच्छा करें ।'' यासूं यह पत्र करायो है । ''सो सन्यासी तुमको प्रिय है'' या विचार सूं डरके दुष्ट पापी मत्सरी खल के वा सन्यासी सूं अपनो मनोरथ सिद्ध की अभिलाखा वारे उद्यत नीच पुरुष को ऐसे धर्म सत्य सूं रहित पुरुषन सूं ही वाने मुद्रा कराई है, कतर्द्दीन तो धर्मात्मा है, यासूं या झूंठे पत्र में वाने मुद्रा नहीं करी है, भगवान श्री गोकुलाधीश तो मार्गवारे अनेक प्रकार के जीवन कूं अनेक प्रकार के उपदेश कीये धर्म मुक्ति के प्रकारन सूं के मांस भक्षण हिंसादि तथा मद्य पान तथा अफीम आदि के भक्षणादि सूं निवर्त करिवे सूं के वेद शास्त्र स्मृतिन सों के अपने स्वरूप सों के अनेक प्रकार की युक्ति तथा चेष्टाचार के दिखायवे सूं उद्धार करत यहां पधार रहे हैं । हों यह निश्चय करूं हूं के भगवान श्री गोकुलपति जी अपने दर्शन दानन सूं यहां के हू सगरे जीवन कूं सुखदान करेंगे ।

जासूं अचानक ही हम सब मलेच्छ जनन कूं हू श्रेष्ठधर्म ही प्रवर्त होय रह्यो है। तथा क्रूर कर्म सूं निवर्त होय रह्यो है, के भगवान के चरण कमल के भजन में आछी रीति सों प्रवर्त होय रह्यो है, के वाकी कथा कीर्तन गान स्मरण प्रणाम दास्य में के अनेक प्रकार की सेवा में उत्साह वारो होय रह्यो है, के तुलसी माला के धारण में हमारो कंठ चाहना करे है, के या प्रभुन के प्रेम में हमारो हृदय जो अत्यन्त कोमल होय रह्यो है, के प्रथम दुष्ट संग सूं किये अभक्ष भक्षण में, के मद्य आदि पान में के अकार्यन के करिवे में हू हृदय पश्चाताप कूं कर रह्यो है, के साधु भक्तन के द्रोह सूं जो हृदय विमुख होय रह्यो है, के बिना प्रेरणा के वाणी श्री भगवान के गुणन कूं सुनिवे की इच्छा करे है, के श्री गोवर्द्धन में विहार करिवे की इच्छा करे है, के हमारो हृदय श्री गोकुल गोवर्द्धन वासी भक्तन में स्थित करें हैं, के हमारो सिर जो विनकूं प्रणाम करिवे की इच्छा करे है, के जो हमारो शरीर वा श्रीजी के तथा वाके दास समूहन के चरण रेणु रूप पटवासन सूं अपने कूं सुगंधित कियो चाहे है, के जो बिना कारण ही हमारे नयनन कूं अत्यन्त प्रीति पात्र स्त्री, पुत्र, संबन्धीन कूं देखनो नहीं रुचे है, के हमारे सबन के यह नैन याके चरण कमल सम्बन्धी रज के हू लेश ऊपर अमृत के समुद्र हू न्योछावर किये जाय, ऐसे वा प्रिय प्रभु श्री गोकुलनाथ जी के दर्शन अर्थ सदा ही चाहना वारे हैं, के वा श्रीजीके चरण कमल संमधी रज में उत्साह वारी यह हृदय सुमेरु, रत्नार्णव, के इन्द्र, महादेव के वा वा अवतारादिकन कूं, के अमृत तथा कामधेनु, चिन्तामणी कल्पवृक्ष, सिद्ध निद्ध तथा मुक्ति स्वर्ग के वैकुंठ समूह कूं हू तृण जैसे हू नहीं मानें हैं, के जे सगरे वैकुंठन के ऊपर अत्यन्त ही विराजमान हैं। तासूं श्री गोकुलपति प्रभु यहां पधारके अपने दरशन दान सूं यहां के निवासी सेवकन कूं ही सुखी करेंगे यह निश्चय है।'' श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के या प्रकार वा आसफखान की वाणी सूं उदय भये हर्ष कूं अत्यन्त ही छिपावत ही सो देशपति अपने समीपवासीन सूं इतनो पूछतो भयो हैं, ''के वे प्रभु कहां पधारे हैं ?'' तथा वा समीपवासीन में इतवारखान विज्ञापना करत भयो है, के लाहोर में विराजे हैं।'' यह देशपति अन्तःकरण में बड़े हर्ष कूं प्राप्त होतो भयो है। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के या झूंठे पत्र वारे सगरे प्रसंग के वृत्तांत कूं सुनिके हू श्रीजी तो निरादर कर देते भये हैं, परन्तु सो पापी छीतरा तो अपने किये अपराध सों ही दामोदर

के पुत्र के संग गुजरात देश में जायके चोरन के सहस्त्र समूह सों ही मृत्यु कूं प्राप्त होतो भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले अष्टम तरंगः सम्पूर्णम् ॥८॥

नवम् स्तरंगः

श्री गोकुलेशो जयति

अथ नवम् स्तरंग लिख्यते ॥९॥

श्लोक -- **भगवानस्तु माह शुक्ला प्रतिपदा गुजरात्सं समाही पात**
प्रहरयाय भमर कमादरजलाम रुत्तै वेंष्टितो भक्तैः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के भगवान श्री गोकुलाधीशजी भादों की शुक्ल प्रतिपदा तिथि में गुजरात नाम गाम सूं प्रस्थान करिकें अलुपी गाम के कमादरगलाम ग्राम के समीप तब यहां की विषम घाटी के उल्लंघन करिवे कूं सब लोकन के रोकिवे लिये मलेच्छपति ने बैठाये जे अपने लोक हैं विनकी सम्मती लेवे के मिस सूं अत्यन्त बलवान दोषों से घिरे बिन जीवों के उद्धार करिवे कूं श्रीजी दो दिन यहां रहे। पीछे तीज कूं वो चर्मडकाली नाम गाम में गये। चौथ के दिन श्रीजी आठिठक नाम घाटी कूं बहोत सेवकों, भक्तों और नोकरन के संग पार करी। ज्यारे वीजा केटलाक चतुर माणसों मलेच्छो ना अटकववा छतां परम चतुर श्रीजीए बतावेला उपाय थी घाटी ने पार करी गया पछी ईश्वरेश्वर संदोह अने जोगी हट्टी घाटी मां प्रवेशी ने तेमने पावन करी कमादरगलाम गामनी नजीक वनमां निवास कर्यो। भक्तन के संग भमर गाम में प्राप्त होते भये हैं। तब यह भगवान पंचमी तिथि में चींगस नाम गाम कूं रात्रि में अपने निवास सूं शोभायमान करते भये हैं। वहां जल सूं भवर सूं गेहूं पीसन के सुन्दर चक्र कूं कौतुक सूं देखते भये हैं। यासूं या चक्र के सम्बन्ध वारे सगरे जन हू संसार सागर सूं उतर उतर जाते भये हैं। और लाहोर सूं प्रथम पठायो जो गांगु नाम पोहोरुवा हतो सो काश्मीर सूं वगद के या गाम में ही भक्त आसफखान की तथा भक्त राय मुकुन्ददास की वा विज्ञापना कूं सुनावतो भयो है। वो विज्ञापना श्रीजी के मुखकमल कूं प्रफुल्लित करत

ही अमृत के वींदुली के विनय सूं हू अत्यन्त मधुर जे प्रभुन के भक्त हैं विनकूं जो अत्यन्त ही रुचती भई है। यासूं श्री महाप्रभुजी नीचे ऊपर बदले अत्यन्त बलवारो दोषन सूं ग्रस्त वा वा जीवन कूं वैसे उद्धार करिवे लिये दूसरे दिन वहां निवास करते भये हैं। याके अनन्तर श्रीजी षष्टी तिथि में राजोर में पधारते भये हैं ॥ सप्तमी तिथि में थाना गाम में पधारते भये हैं। तहां प्रातःकाल शीत विशेष होय है। ''**उहां एक दिन मों तीन रितु मानजी, सहवारे जाड़ो अरु मध्यान ने घामजी ॥३१५॥ पिछले पहोर तो वरसे मेहजी, उहां प्रकार होय सदां एहजी ॥३१६॥**..... *गोपालदास भाई के ग्रंथ से लीया है ॥''* ऐसे वा थाना गाम सूं पधारके अष्टमी तिथि में ब्रह्मगला गाम में पधारते भये हैं। वा थाना और ब्रह्मगला के बीच रतन पंजाल नाम बड़ी घाटी है जामें चढ़नो उतरनो बड़ो ही कठिन है। या घाटी कूं देखिके सुन्दर चतुर बुद्धिमान जन या प्रकार के विषम मार्गन सूं जीवन के उद्धार लिये प्रभुन कूं पधराय रही करुणाशक्ति अत्यन्त प्रगल्भा है ऐसे अपने हृदय में करुणां शक्ति कूं रेणु के लेश कूं हू चाहना करें हैं। ऐसे अपने चरण कमलन सूं नवमी तिथि में पोषाना गाम कूं पावन करते भये हैं। त्याहां अत्यन्त स्वतन्त्र तब दसमी तिथि में श्रीजी कठिन घाटी पीर पंजाल कूं उल्लंघन करिके महेमद कुली नाम मलेच्छ की लढ़ी कूं पावन करते भये हैं। अत्यन्त स्वतन्त्र कृपानिधे हमारे प्रभु यवन के प्रति अपने सर्वोपर विराजमान स्वरूप को दरशन करावते भये हैं। बोहोत प्रकार वाको समाधान करते भये हैं प्रसन्न होयके वाकूं अत्यन्त बल हू देते भये हैं। उच्छल्लित भये प्रेम सूं वाने भेट किये अनार फलन कूं मर्यादा के अनुकूल चलत श्रीजी अंगीकार करते भये हैं। आगे अराड़ी भराड़ी कूं पावन करिके करुणानिधि श्रीजी एकादशी तिथि में हीरपुर कूं अपने निवास सूं पावन करते भये हैं। या गाम में ही सगरे भक्तन ने सुन्यो है के मलेच्छाधीश तो काशमीर सूं बोहोत दूर वन में मृगया खेलवे गयो है। मृगया में चित्तवारे वा मलेच्छपति कूं फेरिके आवनो पांच छः महीना पीछे होयगो यासूं यह भक्त अत्यन्त क्लेश कूं प्राप्त भये हैं ॥ के शिरीष पुष्प सूं हू अत्यन्त कोमल हमारो प्यारो या देशपति के लिये इतनी दूर लग पधारे हैं। आगे वितने ही दूर पधारवे में तो अति ही क्लेश होयगो ॥ या प्रकार के विचारन सूं दुःखी होय रहे अपने जीवन कूं देखिके ''तुम वृथा क्लेश मति पाओ देशपति इतनी दूर नहीं पधारेगो प्रभुन की इच्छा

सूं वेग ही वगद आवेगो'' **या प्रकार अमृत के समूहन कूं वरखा करि रहे अक्षरन सूं कृपासिंधो विनकूं अत्यन्त ही समाधान करते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के प्रभुन की आज्ञा अनुसार वैसे ही होतो भयो है । के सो देशपति लोकन के मुख सूं या महाप्रभुन के वेग पधारवे को सुनिकें स्वभाव सूं सुन्दर श्री मुखारविंद के दरसन अभिलाखा वारो सो मिस बनायके वेग ही वगद आवतो भयो है के अपने घर आवतो भयो है ।** द्वादसी तिथि में सबन कूं दुर्ल्लभ अपने विराजवे सूं रामु की सराय नाम गाम कूं शोभायमान करत भये हैं, और या गाम में ही महाप्रभुन के काश्मीर वासी प्रहलाददास, गोधु, जयरामदास, अनन्तदास आदि अनन्त भक्त आयके श्रीमुख के दर्शन करिके प्रेम सूं चरण कमलन में प्रणाम करिके प्रभुन की कृपा रस सों पूर्ण भरी भई दृष्टि कूं प्राप्त होयके कृतार्थ होय जाते भये हैं । आसफखान तो महाप्रभुन को भक्तहू हतो, स्वरूप हू जानतो हतो, दर्शन में उत्साहवारो हतो तोहू या विचार सूं के महाप्रभुन को स्वभाव ही ऐसो है, के जो म्लेच्छ भाषा नहीं बोले है, के या मलेच्छपति के नाम कूं हू प्रसंग पायके देशपति ऐसे ही कहे है, सो, सो नीच सन्यासी में प्रीतिवारो है, वो म्लेच्छ राजा कूं हौं सदैव ही अपने स्वार्थ के लिये ही यासूं लौकिक अर्थ की अभिलाखा सूं ही सेवा करूं हूं, तासूं हों प्रभुन के दरशन योग्य नहीं हूं या प्रकार की अपने हृदय में प्रगट भई गुप्त दीनता समूह सों ही प्रभुन के दर्शन अर्थ वा गाम में आगे नहीं आवतो भयो है । वा गाम सूं पधार रहे या प्रभुन के महा कठिन मार्ग में आपके अत्यन्त भक्त ध्यानदास जी आयके प्रातःकाल में बोहोत वार ही दंडवत प्रणाम करते भये हैं, ईश्वरेश्वर महाप्रभुजी हू वाकूं कुशल पूछते भये हैं, वारंवार समाधान हू करते भये हैं। श्री राय मुकुन्ददास सूं पठायो जो रामराय नाम प्रभुन को अत्यन्त भक्त है सो दूर पर्यंत ही प्रभुन के आगे आयके श्री महाप्रभुन के श्री मुखारविन्द को दर्शन करिके बारंबार दंडवत प्रणामकरिके उछल्लित होय रही दीनता पूर्वक विज्ञापना करिके अपने सुन्दर भाग्यनिधि बगीचान में पधरावतो भयो है । वा बगीचा में भक्त जनन ने प्रेम सूं रचना किये सुन्दर वस्त्रन के डेरा में बुधवार भादों की शुक्ल त्रयोदशी तिथि में श्री महाप्रभुजी भूषण रूप होते भये हैं । यहां भगवानदास चौधरी, वोहोरा विहारीदास, भक्त द्वारकादास आवतो भयो है । **राजपुत्रन के संग प्रभुन को अत्यन्त भक्त हरीदास तोंवर हू वहां आवतो भयो है । प्रभुन**

को दर्शन करिके कृत्य कृत्य होय जातो भयो है । के जो हरीदास तोंवर, हर्ष समूह सों अत्यन्त कीच भरे देश में हू बारंबार प्रभुन के आगे दंडवत प्रणाम करत, देहानुसंधान रहित होयके, रज में प्रणाम करिवे वारे अक्रूर भक्तन कूं हू विजय करि लेतो भयो है । या हरिदास तोंवर कूं भगवान श्री गोकुलाधीशजी बोहोत वार ही ''आवो आवो'' ऐसे कहेकर हर्ष के भार सूं प्रकट भई सुन्दर वाणी सूं समाधान करते भये हैं, के उछल रहे प्रसन्नता सूं भगवान श्रीजी कहते भये हैं के ''यह वस्त्र कीच सूं भर जायगो, विगर जायगो ।'' ऐसे हू कहेते भये हैं । ताके प्रति यह हरिदास तोंवर हू महाप्रभुन के आगे आदर पूर्वक विज्ञापना करत भयो है के ''हे महाप्रभो श्री आप ऐसे मत कहो, आपके अत्यन्त दुर्ल्लभ दृष्टि के संबंध सों यह कीच हू अत्यन्त ही पवित्र है, इनसूं मेरे वस्त्रन में दोस नहीं होयगो, किन्तु ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ है कणिका जिनके, ऐसे गुण ही आदर सहित प्रेम सहित ही प्रगट होयंगे ।'' वहां सुन्दर बगीचा में सर्वोपर विराजमान गुणसागर भगवान श्रीजी के दर्शन अर्थ आय रहे सगरे तरुण बूढ़े वाल ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र के नीच जाति के हैं, के सुन्दर कुल वारे ज्ञानी ध्यानी गुणी मूर्ख सूत व्यौपारी श्रेष्ठ बंदीजन हैं, के राजा के राजपुत्र, के राजस्त्री, विनके सेवक, दास, के गान, वाद्य, नृत्य, शास्त्र वेद में चतुर पंड़ित हैं के वे वे महंत बड़े भिक्षुक के मागध, भक्त, दास, चारण हैं के वे वे शूरवीर हैं, के विनके सेवक समंधी हैं के अनेक प्रकार के भाव समूह वारी के रूप स्वभाव वारी स्त्री हैं वैसे और हू जे वे वे जन हैं विनको सदैव ही समृद्ध होतो भयो है, तथा विनके जय शब्द प्रणामन सूं शब्द के स्तुति समूह अंजुली वंध प्रेम विजय समूह के हर्ष समूह तथा रोम हर्ष अश्रुपात स्तंभ स्वर भंग कंप स्वेद विवर्णता के मूर्छा के बोहोत वार दंडवत प्रणाम के गुण समूह को कथन यश समूह गान पराक्रम कूं वर्णन और प्रभुन को वैसे पुरुष समूह कूं के चरित्र को वर्णन के सेवा प्रेम संपदा उपदेश नौछावर तथा मंगल समूह प्रगट होते भये हैं । उछल्लित हर्ष वारे बहोत प्रकार के वाटन के प्रेम विशेष नर्म हास्य आलिंगन हर्ष ताली के अनेक प्रकार के नाद वधाई के प्रगट के कलकल आर्ती समूह सांज अनेक प्रकार के होते भये हैं । के मंगल कलश के उठावन स्नान खान भोजनादि के जे अनेक प्रकार हैं सो प्रगट होते भये हैं । तब रात्रि समय में भोजन की तैयारी होती भई है । श्री प्राणनाथ करुणासिंधो

श्रीजी अपनी भोजनशाला में रामराय की सामग्री कूं अंगीकार करते भये हैं, तथा वाके लायक घृत मिसरी आदि कूं अपने भक्तन सूं अंगीकार करते भये हैं, या प्रकार सूं श्रीजी अपनी भोजन लीला कूं प्रगट करिके के वहां आये सबन कूं अपने अपने स्थान में जायवे कूं आज्ञा करते भये हैं, और निद्रा के पर्यंक कूं शोभायमान करते भये हैं । **श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के इतनेई सूं भगवान श्री गोकुलाधीशजी असंक्षात महादोष समूह सो दृढ़ ही ग्रसित होय रहे निःसाधन महानीच के अत्यन्त प्रेम पूर्वक अनेक प्रकार के असंख्यात वारे कि या साधन सूं नभिक वारे के निकसवे सूं रहित कबहू न दूर होयवे वारे अनेक नर्कन में गिरिवे लिये सदा उद्यम वारे लाखन करोड़न परार्द्धन सूं हू अधिक जीवन कूं प्रेमपूर्वक उद्धार करि के कृपासिंधो श्रीजी निद्रा लीला कूं भली प्रकार आदर करते भये हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के जे जीव पुत्र के समंधी हते. के पिता, के भ्राता, के वांधव, के स्त्री, के वैसे पति के तथा माता के, कन्या के, तथा सास ससुर के तथा घरन के, धनन के तथा देश, राजा, राज, घोड़ा, हस्ती, सेवक तथा प्यादान के समंधी हते के जे जे और हू ता ताके समंधी हते वे सगरे ही या प्रभुन के गुणन सूं आकर्षण करे भये ही या प्रिय के समंधी ही होय जाते भये हैं । सो जाके यह श्रीजी पुत्र हैं, सोई ही पुत्रवारो है, जाके पिता हैं सोई ही पिता है, सोई पिता वारो है, जाके प्रभु है सोई प्रभु वारो है, के जाके भ्राता है, सोई ही भ्राता वारो है, और जाके पति है सोई स्त्री पति वारी है, विशेष कहा कहें जाके जो समंधी यह श्रीजी हैं सोई या समंध वारो है । सो भाग्यनिधि है सगरे गुणन सूं पूर्ण है । तासूं जे अन्य हैं सर्व समंध रहित भाग्यहीन सर्व गुण हीन ही हैं यह भाव है ॥**

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिंधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले नवम् स्तरंगः समाप्तम् ॥९॥

दशम तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ श्री दसम तरंग लिख्यते ।।१०।।

श्लोक -- **प्रातर्विमुक्त निद्रांदर मीश्वर पुस्थितं स्वरूपत्यं कांत**

करुणाशक्ति रूपाण प्रणयंवित स्वपद कमले ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहे हैं के प्रातः काल त्याग कियो है निद्रां को आदर जिनने, ऐसे अपने पर्यंक सूं उठे भये ईश्वरेश्वर श्रीजी के समीप आपकी कृपाशक्तिजी बोहोत वार बोहोत प्रकार भक्ति सूं आपके चरणन कूं प्रणाम करत कछुक विज्ञापना कूं ईच्छा करत पधारती भयी है । भगवान श्रीजी तो मंद हास्य पूर्वक वाकी और देखके कहेत भये हैं के ''**हे दीर्घनयनी हे कृपाशक्ति जो तुम विज्ञापना करिवे कूं प्रभात समय में ही पधारे हो, सो हों सगरे कुं जान गयो हूं, के याके घरमें हों वेग ही पधारूँगो, जासूं भक्तिवर्ती भाव है ऐश्वर्य धन से तां भूमीपति भाव, के राजसमंधीन होत मानरूप सांकलन सूं बांधे जे जन इहां मेरे निकट आयके मोकूं स्पर्श करिके, के दर्शन करिके, के प्रणाम करिके, एकवार बुलाय करिके के सेवा करिके कृतारथ नही होय हैं विन जीवन कूं हू उद्धार करिवे लिये विनके घरन में पधारूं हूं, परंतु यामें निमित्त मात्र की प्रतीक्षा ही विलंब कराय रही है, के कछुक निमित्त विना अनउचित है ता सूं ही विलंब करि रह्यो हू, निमित्त होयवे पर वेग ही पधारूँगो यह भाव है ।**'' ऐसे प्राणनाथ के श्रीमुख कमल सूं प्रगट भये वचनामृत कूं पांन करिके उछल्लित भयो है मुख चंद्रमा जाको, रोम हर्ष वारे भये हैं अंग जाके, ऐसी जो कृपा शक्ती जी मोन सहीत होय जाती भई है । या समय में ही या महाप्रभुन के भक्त सेवक जो राघवदास नाम कायस्थ है सो भक्ति सूं या श्रीजी के मुखारविंद को दर्शन करिवे लिये आवतो भयो है । सो या महाप्रभुन के आगे विज्ञापना करतो भयो है के ''**हे प्रभो ! या काश्मीर में जो बड़ो शूरवीर मलेच्छ पति दीलावरखान रहे है सो मलेच्छाधीशन कूं सगरे कार्य करिवे में विशेष संमत है, सो श्री आपको भक्त है सो आपके दरसन की अभिलाषा करे है । या कूं आप श्री दरसन देकर वेग ही पुरण मनोरथ करिये ।**'' श्री कल्याण

भट्टजी कहे हैं के भक्तन के वशवरती तो भगवान श्रीजी याकी विज्ञापना कूं मांनके अपने चरण कमल के धारण सूं वाके घर कूं सुगंधित करते भये हैं। अमृत के समुद्रन कूं विजय करिवे वारे आलाप कूं हू वासूं करिके वाकूं क्रत्य क्रत्य करिके मुकुन्ददास के घर में पधारते भये हैं, वहाँ वा मुकुन्ददास के नयनों में अपने दर्शनरूप चिंतामणी कूं जटीत करिके अपनी चरण कमल की रज सूं इतवारखान के घर कूं पावन करते भये हैं । सो इतवारखान तो मंद मंद हंसत ही महाप्रभुन कूं कहेतो भयो है के ''आपने कहा ग्रामीजनन कूं वोहोत धन देकर वा सन्यासी के मारवे अर्थ पठायो है ॥'' सो भगवान श्रीजी तो या वचन कूं सुनकर मंद हास्य सूं प्रफुल्लित श्रीमुख कमल वारे होय के वाकूं कहेते भये हैं के ''**ऐसे अर्थ के यथार्थ स्वरूप कूं तुम जानो ही हो सो वामें हम कहा कछु कहें । सो विरुद्ध ही हतो । मिथ्या ही हतो ।**'' और दूसरे दिन मुकुन्ददास के संग संमती करिके दरसन दांन सूं आसफखांन कूं क्रतार्थ करते भये हैं । सो आसफखान बढ़ि रहे उत्साह के वश होय रहे जो हाथन कूं पसार के ठाड़ो भयो है, विनकूं आदर सूं स्पर्श करिके श्री महाप्रभुजी क्रतार्थ कर देते भये हैं, वाके घर में बेठयो जो देशपति को खजानची जो आगानूर सो या महाप्रभुन के बोहोत गुणन को वरणन करिके आदर प्रेम सो अपनी जिभ्या कूं अत्यंत सफल करतो भयो है । और पद्मक्षत चंद्रमा कूं, चंद्र और कमल कूं विजय करिवेवारो श्रीमुख जाको है और द्रष्टि सूं अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करिवे वारो है श्रीमुख जाको, ऐसे महाप्रभुन कूं सो आसफखान तो नम्रता तथा हर्ष विशेष सूं या प्रकार कहेतो भयो है के ''**हे गोकुल मंगल, कृपासिंधो महाप्रभो, दीनबंधो गुणन के समूह मणी, डरे भये जीवन की रक्षा लिये वज्र के पिंजर सूं वह श्रीमान है कविनो के भूषण के श्रेष्ट मार्ग के रक्षक के श्रेष्ट धर्म के रक्षा के अर्थ प्रगट, तथा अनेक प्रकार के संसार समंधी रोगन सूं पीड़ित जीवन के वैद्य समुहन सो सेवा योग्य जाकी चरण रेणुं है, ऐसे भव रोग के महा वैद्य समूहन सों सेवा योग्य जाकी चरण रेणु है । हे प्रभो पाखंडरूप अनेक प्रकार के महा अंधकारन कूं नाश कर्ता सूर्यरूप के, भक्त जनरूप, सरोवर समंधी, सुंदर बुद्धि रूप कुमोदिनी, के प्रफुल्लित करवे लिये श्वेत किरण के चंद्ररूप, के अपने वैसे स्वरूप के उदय सूं तृण तुल्य कीये महाकुलाचन समूह जाने, हे वैसे महाकुल अलंकार रूप प्रभो, के कृपादृष्टि रूप खडग सूं खंडन**

किये सज्जनों के दुःख समुद्रन के मस्तक हैं या सूं गिरे रुधिर प्रवाह के समूह सूं लाल रंगवारो कियो है भूमंडल जाने है, ऐसे स्वभक्तजन दुःखनाशक प्रभो, उदय होय रहे निमर्याद दांन रूप प्रवाह में डुबाये है याचकन के दरिद्र जाने, ऐसे जाचक दरिद्र नाशक प्रभो, प्रफुल्लित हैं दांन योग्य द्रव्य जामें, ऐसे हस्तकमल की प्रसरवे वारी सुगंधी विशेष सों अत्यंत तृप्त किये हैं पंडितन के हृदयरूप भोंरान के घ्रांण जाने, ऐसे हे महोदार दाता प्रभो, दुष्ट बुद्धिरूप रात्री कूं प्रभात रूप करिवे वारी है प्रणाम जिनकी, ऐसे चरण कमल रूप पुष्पन के रस समुहन सूं आद्र कियो है शोभायमान कियो है, के जटीत कियो है भूमंडल जाने, हे ऐसे महायशस्वी प्रभो, के अपने दासन के भाग्योदय रूप शरदऋतु में प्रफुल्लित हैं नयनरूप कमल समूह जामें, ऐसे स्वरूपात्मक सरोवर के प्रवाहरूप जलन सों शांत करी है संसार संबंधी वन की अग्नि जाने हे ऐसे संसार अग्नि शामक प्रभो, तथा अपने भक्तन के मुखरूप अंगुली संमंधी मनोहर मुद्रिका में श्रेष्ट जड़ीया ने द्रढ़ जटित कियो जो आपको स्वरूपात्मक हीरा है, वाके प्रवाह समूहन सों भीतर वाहेर धवल किये सगरे लोकन में है यश जाको, ऐसे मत्त प्रवाहवारे प्रभो, कि अपने भुजारूप उदय पर्वत सूं उदय भये प्रतापरूप सूर्य के दुर्ज्जन रूप उलुक समुहन कूं दुःखी करिवे वारे, तथा पापरूप उलुकन के समुहन कूं दुःखी करिवे वारे, तथा पाप रूप अँधकार कूं हरवेवारे, के सज्जन के हर्षरूप कमलन कूं प्रफुल्लित करिवे वारे, के उद्धत पाखंडरूप चोरन के प्रचार कूं अत्यंत निवर्त करिवे वारे, के शत्रुन के घर में जल छाया शीतल पवन रहित जेष्ट अषाढ़ समंधी ताप कूं प्रगट कर रहे, के सुहृदय भक्तन के घर में कमल द्रष्टि आलिंगनादि हर्ष विशेषवारे शिषिर ऋतु समंधी शीतलता कूं वर्षा करि रहे, ऐसे किरणन सूं मिलित काहे ये संकुचित किये है वहिर मुख जनन के हर्षरूप कुमोदिनी समूह जाने, हे ऐसे प्रचंड प्रतापवारे प्रभो हे महाप्रभो पाखंडी सन्यासी महाअसुर दुर्जन समुहन ने प्रचार किये जो महापाप है विन सूं जासूं कबहू फेर न निकस सके ऐसे रसातल में डूबवे कूं इच्छा करत भुमि कूं ऐसे श्री आप वेग ही वैसे धारण करते भये हैं, के जैसे कबहु न डुबे तथा पवनाधिराज के प्रिय जैसे विचर रहे असुर के उद्धतपने सूं अत्यंत दुरे धर्मके रक्षक श्री आपही आछी रीति सों भये हो। वैसे दुष्ट सन्यासी के दुष्ट विचाररूप जो प्रलयकाल समंधी पवन हतो, जो

वेद पुराणादि रूप महा पर्वतनकूं निकार के ऊंचो डार रह्यो हतो, वाके चारों ओर प्रसरत ही भगवद मार्गरूप दीपक की दूर सों ही आपने रक्षा करी है। या मथुरांजी में क्रोधी यवन राजा के सेना समूहरूप प्रलय काल के बलसुं उछल्लित होवत ही अकेले ही हरीरूप आपही ने रसभक्ति रूप लक्ष्मी के संग निरंतर बिहार करी है, के दुष्ट सन्यासीरूप महाअसुर की आज्ञा कूं पायके, करोडन लाखन ही मलेछ, बड़े स्वामी तथा महंतन की कंठस्थित तुलसी माला कूं बलात्कार ही वैसे वैसे लोभी लालचादि सूं हू खेंच रहे हते तामें अपने कंठ में स्थित तथा अपने अंगीक्रत जीवन के कंठ में स्थित तुलसी माला कूं, श्री आप जा लीला सूं रक्षा करते ही भये हो, वा लीला कूं हों सदैव ही बोहोत स्तुती करूँ हूं। हे महाप्रभुजी आप जा पराक्रम कूं प्रगट करत ही मलेच्छ शूरवीर समुहन कूं के मथुरावासी दुष्ट समुहन कूं उछल्लित होय रहे जय सूं जाने विजय करि लियो है, ऐसे आपके वा पराक्रम कूं स्तुती करवे में को समर्थ होय सके, तथा चंचल होय रहे वेद, शास्त्र, गीता, के सगरे पुराण वा वा स्मृति तथा विनकी टीका, श्रीमद् भागवत को, के वा अनन्य भक्ती मारग कूं तथा श्री गिरिधारीजी के चरण कमल की, सेवा कथा रस तथा वा वा महोत्सवन कूं तथा मुद्रा तथा रासलीला के अनुकरण तथा यज्ञादि धर्म में नेष्टा, तथा वेध रहित एकादसी व्रतादि रूप योग्य धर्मन कूं श्री आप ही ''स्थुणानिरवनन'' न्याय सूं के जैसे द्रढ़ स्थुणां के स्थंभ चंचल करिके फेर ही दृढ़ कियो जाय है वैसे ही अत्यंत ही दृढ़ स्थापन कियो है और श्री आपने ही मानरूप मुंद्रा समूहन सूं बहिरमुख लोकन के मुख कों भुंग कियो हैं, के अपने श्रीमुख रूप पूरणचंद्र के उदय होय रहे वांणी रूप चंद्रिका के चमत्कारन सूं, सघन अज्ञान रूप अंधकार कूं श्री आपने ही बलात्कार सूं नाश कियो है। भगवान की भक्ति रूप उंचे महेल, श्री भागवत पुराण कूं श्री आपने ही श्रेष्ट भक्ति रूप स्वच्छ सुधा सूं अत्यंत उज्जवल कियो है। चारों ओर प्रसर रहे दुष्ट सन्यासी के क्रोधरूप प्रलय अग्नि के तीक्षण ज्वाला सूं निरंतर डर रहे, के हमतो भक्त नहीं है या प्रकार प्रथम जैसे अपने कूं अत्यंत भक्त में कहेवाय रहे, जे स्वामी हते वे जब दंभ लोभ समूह सूं, भगवद धर्म कूं त्याग करते तथा प्रणाम रूप श्रेष्ट लोकन के समूह दीनता सहित मुख विकार सहित ही चरणन में हू जाके स्पर्श कूं निवर्त कर रहे हैं, के ध्यान राखनो, दूर

रहेनो, स्पर्श नित्य करनो ऐसे जासूं डरके दूर होयके चले है, ऐसे महा नीच पशुवत मार्ग कूं जब वे स्वामी उपास्तना करत भये है तामें श्री आपको जो बड़ो भैया गिरधरजी है सोहूं जब अपने पुत्र तथा संबंधी सेवक समुह सहित ही लज्जा कूं छांडि के ही विनय सूं पतित मार्ग वारे स्वामीन में कछु प्रवेश करते भये हैं, श्री गिरिधारीजी हू तब चितारूप समुद्र के ही मध्य में ही प्राप्त हते, उदासीन ही होय रहे हते, और अपने निरादर होयवे सूं तुलसीजी हू मृत के तुल्य अवस्था कूं प्राप्त होय रही हती, के धर्म के मर्म के जीवन के साधन रूप अंग हू टुटवे लगे हते, धैर्य हू दूर होय गयो हतो के प्रेम रसरूप जो भक्ति मारग है, सो हू भूमी के विवंर (छीद्र) में प्रवेश करिवे कूं अभिलाशा करि रहयो हतो, हरी कथा तो अत्यंत मलीन होय रहे अपने मुख कूं हू लाज सूं नहीं दिखावती हती, श्री भागवत हू मरण विशेष कष्टवारी दशा कूं प्राप्त होय रही हती, तासूं पाखंड धर्म को जो समूह है सो गर्व के समूह सों सिरकूं उंचो करिके चलि रहयो हतो। ऐसे महाप्रलय काल में, हे महाप्रभो तब जो श्री आप दंड़ान रूं हू महासुंदर जा अपने भुजदंडन सूं सवन को ही यथा योग्य ही समाधान करते भये हैं ॥ ऐसे आपके भुजदंडन कूं स्तुति करिवे में को साहस कर शके है ? अपितु कोऊ नहीं कर शके है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लिलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले दसम स्तरंग समाप्तम् ॥१०॥

एकादश तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ श्री एकादस तरंग लिख्यते ॥११॥

श्लोक -- एवं वृते स्वास्थं सर्वेषांहा कू स्वकीयानाम्

ज्ञापरे जामापि कर्तुतद्यात्रे यसमल्ल सतीः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहे है के फेर हूं सो आसफखांन विनय करे है, के "हे प्रभो या प्रकार सूं जब अपने जीवन की स्वस्थता होयगी तब अन्य जीवन की हू स्वस्थता हू करवे लिये परम मंगलरूप भक्तन के आनंद कूं वर्षा करिवे वारी यह आपकी यात्रा उछल्लित भई है, न के मलेच्छ राजा

कूं जो श्री आपके दरशन की इच्छा हती वासूं भई है, किंतु आर्जवासी अनंत ता ता दोषवारे जीव समुहन के अन्य प्रकारन सूं न होयवे वारे उद्धार के अभिप्राय वारी आपकी इच्छा सूं ही सो यह यात्रा श्री आपकी भई है । ता ता स्थान के भाग्यन कूं स्तुति करवे में को समर्थ होय सके ? अत्यंत प्रिय प्रभो यह आपको स्वरूप जिन जीवन के नयनन में अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करत भयो है, वे जन महा भक्तन सूं हू वंदना योग्य है । हे प्रभो जा महाभाग्यवारे कूं, के कानों कू, अपने नाम उपदेश रूप चिंतामणी सूं शोभायमान करते भये हैं, विनकी चरण कमल समंधी रज हू भाग्यवारेन कूं हू दुर्ल्लभ है, तथा भाग्यवारे भक्तन के घरनके आपके चरण कमल समंधी रजरूप मेघन ने बड़ी धारा समुह वारी करी, जो सघन निधी की सखी है वाकूं स्मरण करिके हू वे जन वेग ही चारों ओर सों आद्र दृष्टिवारे होय जाय है, तथा क्रतार्थ होय जाय है । हे प्रभो श्री आपके संग संवादरूप जो क्षीर सागर को पान है, तासूं सुंदर पुष्ट भये हैं अंग जिनके, ऐसे जे भक्तजन हैं वे तो सगरे लोकन में, के सगरे वैकुंठ में हू नहीं समाय सके हैं, और मार्ग में स्थित नगरन के जे जे अत्यंत दुर्ल्लभ अत्यंत दीर्घ गोकुलभाव रूप मनोरथ हते विनकूं जो श्री आप वैकुंठन कूं हू दुर्ल्लभ जे विन नगरन में वा श्री गोकुल के प्रकार सूं अपनी स्थित तासूं पुरण करते भये हैं, सो अदयदांन में चतुर समूहन के मुकटमणी रूप, के कृपा समूहन के हू समूह, उदार समूह़न के शिरन सूं पूजन योग्य जाके चरण कमल हैं : ऐसे महाप्रभु आपमें यह आश्चर्य नहीं है, तथा संसार रूप सरोवर के श्री आप भक्तरूप भोंरान की पंक्ती सूं पान योग्य जाके मधु हैं, ऐसे कमलरूप भये हो । या संसार रूप सरोवर की सेवा कूं वहां वहां वेसे प्राप्त होयवे लिये ब्रह्मानंद के सिंधु हू यत्न करि रहे है, तथा वेसो कमलरूप श्री आप चौदह लोकन कूं, के वैकुंठ की पंक्तिन कूं, के दशोदिशान कूं हू प्रसरवे वारी अपनी सुगंधी सूं अत्यंत सघन ही पुरण करि रहे हो, और संसार नाम सों खाने के खांण सर्वोत्कर्ष है जाके अनिर्वचनीय अमूल्य मणीरूप श्री आप सवन के ही शिरोमणी रूप प्रकाशमान हो, तथा सगरे गुणन सूं मिल्यो विश्व कूं, के सगरे जगत कूं, निरंतर संकर रूप के सुख करिवे वारो सो वंश सर्वोत्कर्ष सूं विराजे है, याके मस्तक में सदा प्रकाशवारो पूरण चंद्ररूप श्री आप विराजमान है । अपनी मधुरता के लवलेश सूं सगरे भुषणन कूं मधुर कर रहयो जो पुरषोत्तम भावरूप कमल है,

सो सर्वोत्कृष्ट विराजे है । के दीर्घ किरणनसूं जाकूं प्रफुल्लित करिवेवारे श्री आपही सूर्य प्रकाशमान है, के परम रसके प्रवाहरूप धाराके वर्षा समंधी सिंचन सूं अत्यंत पुष्ट जो भूमंडल नाम अनिरवचनी बगीचा है सो सर्वोत्कृष्ट सूं विराजे है, जाके सघन शीतल छाया वारो, के श्रेष्ट अनंत फलरूप गुणनवारो, महासुंदर अपने शरणांगतन के बलसूं ही अत्यंत दीर्घ कबहु न दूर होयवेवारे, दरिद्र कूं जाने नाश कियो है, सो ऐसो कल्पवृक्ष श्री आपही प्रकाशमान है । हे महाप्रभो हों आपने भाग्यन कों चरणकमल समंधी रज पर वार डारूं हूं । जा सूं जे मेरे भाग्य प्रेम सूं तिहारी कृपाके चरण कमल कूं निरंतर सेवन करके प्रसन्न भई वा कृपा सूं श्री आप कूं पधराय के मेरे ऊपर सुंदर दरसन रूप रत्नन कूं, के सुंदर मंद हास्यरूप निधिन कूं वर्षा करि रहे, ऐसे श्री आप कूं मेरे नयनों के समक्ष करते भये हैं, दरसन करावते भये है । अहो पुण्यवारेन में को गणना योग्य ऐसो को पुण्य है, जो कैसे प्राप्त होय है, के कैसे होय है, के कैसे प्रसन्न होय है जा पुण्य को मनोहर फल श्री आपके चरणकमल समंधी रजमें प्रीति होय है, हे महाप्रभु उच्छल्लित होय रहे उत्साहरूप तीक्ष्ण अग्नी सूं मेरे कान अत्यंत ही तप्त होय रहे हैं तासूं हृदय में तिहारे वचनरूप चंदन के शीतल लेप कूं चाहना करे है । सो या मनोरथ कूं श्री आपकी रसनारूप मलय पर्वत की तटी पूरण करेगी काहा ? अहो गोकुल रत्न प्रभो, यज्ञोपवित तो सगरे श्रुती शास्त्र, पुराण, समुह जाके धारण गुण महिमा प्रकार को वर्णन करे है ऐसो है, तथा सगरे ही जनसूं पूजनीय है, सो वेतो निरदोष यज्ञोपवित तो प्रेम समूह सो हूं श्री आपुके उछल्लित होय रहे हैं, शोभा समुह के हजारन अर्बन समुद्र जाके, ऐसे श्री कंठ कूं दिनरात्र ही सेवा करि रहयो है, तामें यह अचानक श्री आप कूं तुलसी माला में सगरे लोकन में व्याप्त होयवे वारो यह आदर समुह कैसे भयो हैं ? जासूं जो आदर समूह झंझा पवनरूप होयके वा राक्षस नीच सन्यासी के गर्वरूप पर्वतन कूं मूलसूं निकार के गिराय देतो भयो है तथा याके मुखकूं उदासीनता विरूपतारूप धूली सूं अत्यंत ही मलिन करि रहयो है, कि जो मलय चंदन समंधी पवनरूप होयके सगरे भक्तन कूं आनंदित करत, तामें अयोग्य जे हम हैं ऐसे हमारे ऊपर हू विना कारण के आपकी द्रष्टि समंधी वरखा कूं हू करतो भयो है ।'' श्री कल्याण भटजी कहे है के या प्रकार विज्ञापनारूप अमृत सूं सिंचन करी विराजवे लायक भूमी कूं उत्साह

समुह समंधी शोभावारे सुंदर कानों सूं सो आसपखान देख रहयो है, के या भूमी पर कब पधारे तब ही पुरुषोत्तम के चक्रवर्ती हे सो जिभ्या रूप राजधानी सूं बाहिर पधारके वा सिंचन करे स्थल कूं शोभायमान करत भये हैं । याकी विज्ञापना कूं सुनि के श्रीजी आज्ञा करते भये हैं । ''**वैसे या यज्ञोपवित के विराजत हू तुलसी काष्ट की माला में यह ऐसो आदर समुह आज ही केवल मेने ही सर्व प्रकार सूं नहीं कीनो है, किंतु मैया के गर्भ सूं प्रगट भये सर्व बालक की मैया जब वा बालक के संग स्नान करे है तब अग्यारमें दिन के वा बालक के कंठ में वेग ही विना महुरत विचारे ही सदैव ही तुलसी माला धारण करावे है, और यज्ञोपवित तो यज्ञोपवित योग्य वर्ष विचार के अनुकुल वेद शास्त्र स्मृती आगम सुंदर पुराणन के प्रमाणन सों आठ में आदि वर्ष में धारण कियो जाय है, या प्रकार सूं वेद शास्त्रादि सूं विस्तार वारो प्रबल हमारे घर कूं श्रेष्ट पुरुषन को व्यवहार है । ता व्यवहार सूं हू श्रेष्ट पुरुषन कूं तुलसी माला ही मुख्य मानवे योग्य है, सो यज्ञोपवितादि तो या तुलसीमाला के पीछे ही है ।**'' श्री कल्याणभट्टजी कहे है तब वैसे क्रत्य के सहित प्रभुन के संवादसूं प्रगट भई है योग्यता विशेष जामें, तथा उछल्लित भये प्रेम समुहने ढांप लीनी है पुरुषोत्तमोत्तमता भाववारी बुद्धि जाकी, और या प्रभुन को कोई प्रकार सूं ही दुःख नहीं होय, या प्रकार के होयवे वारे अनंत समंधी विचारन सूं अत्यंत भ्रम रहयो है मन जाको, ऐसे क्लेश कूं पावत या प्रभुन के सुख कूं इच्छा करत ही सो भक्त श्रेष्ठ आसपखांन विनय सहित ही या महाप्रभुन के आगे विज्ञापना करत भयो है, के ''हे महाप्रभु या, मलेच्छन के चक्रवरती देशाधीश की अनुकुलता सूं, के सगरे जीवन के उंद्धार के व्रतधारी, स्वभाविक कृपा सूं इन जीवन के मंगल कूं करत, के विनके कबहु न दूर होयवे वारे तीव्र दोषन कूं हू निवर्त करत, के अपने पदमें प्राप्त करत, के हर्ष के हजारन समुद्रन कूं वर्षा करत, अपने वा गुणन सूं सगरे जीवन कूं विना मोलको दास बनावत ही, के अर्बन चिंतामणीन कूं अमृत के करोडन समुद्रन कूं करोडन लाखन निधि समूहन कूं अपने चरण कमल समंधी रज के कणिका सूं वर्षा करत विग्या अविग्या विचार के विना ही चारो ओर ही सबन के प्रति ही अपने स्वरूप कूं वेग ही दांन करत, निमर्याद लोकातीत रस समुद्र के भमरन में विहार कर रहे, श्री आप श्री गोकुल निजधाम सूं इतनी दूर पर्यंत जे पधारे हैं, वासूं ही हम जाने है ।

वैसे श्री आप वेग ही वा म्लेच्छाधीश को दरशन देवोगे ही, तथा असुर सन्यासी जाकूं प्रिय है ऐसे वा देशपति के संग संभाषण हू करोगे ही, तामें हे प्राणनाथ यह मलेच्छपति श्री आप कूं जो कछु कहे वाकूं श्री आप यदि नहीं माने, तो सो दुःख होयगो, तामें मलेच्छ चक्रवरती सो बड़ो दंडदाता है सो कहा जाने कहा न करिवे योग्य करेगो । हम तो याके पीछे ही निरंतर चले है, याके स्वभाव कूं हम जाने है के याको स्वभाव ऐसो है । **प्रथम मेरे कानों में वेध नही हते, यासूं यवनन कूं न तो कर्ण वेध होय है न तो मोती पहेरे हैं । तामें याके स्वभाव कूं देखिके या बली के दुष्ट दंड सूं डरपि के मेंने कानों में वेध करायो है, वाके प्रसन्न करिवे कूं मोती हू पहेरे है तासूं कहा हमारो यवन भाव चल्यो गयो है कहा ? किंतु यवन भाव हमारो जैसे नहीं जाय है, या सूं हे प्रभु आपको धर्म हू नहीं नष्ट होय है । जासूं जो परवश होयके करे हैं सो कीये में नहीं होय है । हे प्रभो श्री आपके शुभ की अभिलाषा वारे मेंने, जो वा प्रकार की विज्ञापना कि धृष्टता करी है सो हे परम चतुर कृपानिधि प्रभो, श्री आपु मेरी या धृष्टता कूं क्षमा ही करोगे ।''** ऐसे वा आसफखांन के वचन कूं सुनिकें धीर शिरोमणी श्रीजी मंद हास्य सहित ही आज्ञा करत भये है के **''हमारो कोऊ धर्म ही नाश नहीं होय, सगरो धर्म रहे तो अशुभ होय, तो होय वामें कछु चिंता नहीं है । तुम तो राजा ही हो । तुमकूं तो राज्य की रक्षा ही मुक्ष है । हम वैसे राजा नहीं है । किंतु धर्म के आश्रय हैं । तासूं वाकूं हम कैसे त्याग करें ? तासूं वा मलेच्छपति के संग जब वेसो वाद होयगो वामें जो उचित होयगो सो अपनी इच्छानुसार ही हम कहेंगे ।।''** या प्रकार सगरे समुहन के शिरोमणी मुकुट समंधी रत्नन की किरणन सूं लाल किये है चरण कमल समंधी नख समुह जाके, ऐसे या महाप्रभुन के वचनन कूं श्रवण करिके सो आसफखांन विशेष कहिवे में समर्थ न होतो भयो है । वाकूं सुंदर मानतो भयो है । श्री कल्याणभट्ट जी कहे है के याके पीछे सो आसफखांन प्रभुन सों जो जो पुछवे में समर्थ न होतो भयो है । **वा सगरे वृत्तांत को सबन के शुभ करता भगवान कृपानिधि श्री गोकुल के इन्द्र आछी रीति सों समुझाय देते भये हैं । वा सभा में यह प्रिय श्रीजी करोडन अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करत जा जा वचन कूं कहेते भये हैं सो आसफखांन सिद्धांतरूप वा वा वचन कूं अपने हाथन सूं लिख के राखतो भयो है । या प्रकार प्रिय श्रीजी**

वाके ऊपर अनुग्रह करिके पाछे पोहोंचायवे कूं संग आय रहे वा आसफखांन कूं आदर दे करिके, अपने भक्तजन गांन करि रहे है, अत्यंत उज्ज्वल कीर्ति समूह जाके ऐसे यह प्रिय श्रीजी अपने डेरा में पधारते भये है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले एकादस स्तरंग समाप्तम् ॥११॥

द्वादश तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ श्री द्वादस तरंग लिख्यते ॥१२॥

श्लोक -- **अथ यवन सार्वभौम स्यायास्य ईडनबतस्य**

मृगया विनोद मात्मोइव सतम मांगतस्य पछतं ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहे है के अब शिकार खेलिवे कूं छांड़ि करिके निवृत भये, के अपने घर में आये मलेच्छपति के जो वृत्तांत हे वाको हों वरणन करूँ हूं । वाकूं हे रसिका तुम सावधान होयके सुनोगे । तामें सो मलेच्छाधीश या प्रकार सूं विचार करतो भयो है, के श्री गोकुलनाथ श्रीजी हैं सो परम पुरुषोत्तम प्रसिद्ध हैं, यह हरी हैं, आदी अंत रहित हैं, सदा विराजमांन सर्वोपर परब्रह्म हैं, या जगत में दुःख समुद्र सूं असंक्षात जीवन को उद्धार करत ही लोकवत लीला कूं कर रहे हैं । विनकूं राजमद सूं कुबुद्धी पापी मेंने नही पहिचाने हैं । दुष्ट सन्यासी की माया सूं मेरो मन वंचित होय गयो है । तासूं अपने स्वार्थ कूं ही चाहनावारे मेंने वा महाप्रभु को बड़ो ही अपराध कियो है । जासूं वारंवार ही वा सन्यासी के कहे अनुसार हू चलु हू । वा सन्यासी को ही आदर करूँ हू । वारंवार नमस्कार हू करूँ हू । स्तुति हू करूँ हूं अपने सगरे शूरवीर परिवार, पुत्र, स्त्री, पौत्र सेनादि सबही वाके आधीन ही मैंने कर दिये हैं । तथा सगरे अधिकारी कामदार हू याके ही आधीन मैंने कर दिये हैं । अपनी आज्ञा सूं या दुष्ट वुद्धि की आज्ञा अत्यंत ही मैंने चढ़ाय दीनी है । यामें विशेष प्रीती भी मैंने करी है । वाकूं ही सगरे जग में प्रसिद्ध कर दियो है तथा लोकन कूं वामें ही प्रवर्त कियो है । और वा नीच

पाखंडी मूर्ख कपटी कुटील दुराचारी सन्यासी कूं पिता को कहिवे योग्य ''बाबा'' सूत्र सूं कहू हूं, तथा और लोकन सूं हू कहेवावु हूं । और वा सन्यासी के कहेवे सूं निरंतर अत्यंत पापही द्रढ़ कियो है । तथा परम कोमल साधु निष्कपट धर्म परायण महापुरुष के वचन के ही परम सुख शुभ फल कूं दिन रेन ही अत्यंत चाहना कर रहयो है, के भगवान जाकूं प्रिय है, के भगवान में जो अत्यंत प्रीति कूं धारण करे हैं के भगवान के समुह जाकूं वरे है । सर्वोपर विराजमान हैं चरण कमल समंधी रेणुं जाकी, मंगलमय जाकी लीला है, निरंतर मंगल रूप सुंदर मंगलमय जाको नाम है, के अनादि भक्ति मारग प्रभुन की सेवा कू जो स्थापन करि रह्यो है, के ऐसे प्राणनाथ भगवान श्री गोकुलाधीशजी प्रभुन में वा श्री मथुराजी में तब वैसे वैसे विद्वेश करि रहे वा दुष्ट सन्यासी, मथुरावारे दुष्ट लोक, सेनापति, अधिकारी, पाखंडी सन्यासी के अनुकूल चलिवे वारे ओर हू वा वा लोकन ने जो जो अपराध कियो है सो सगरो ही मेंने अपराध कियो है । और श्रेष्ट धर्म की रक्षा में उद्यमवारे सो परमेश्वर श्री महाप्रभु तो खेलत खेलत ही अकेले ही विना अस्त्र शस्त्र के ही सगरेन कूं ही विजय कर लेते भये हैं । तथा तुलसीमाला, सेवा मार्ग उर्ध्वपुन्ड कूं, सगरे वैष्णव धर्म कूं, के सगरे वेदोक्त धर्म कूं, ऐश्वर्य सहित ही विजय कर लेते भये है, के रक्षा करते भये है, और ऊपर कहे वा दुष्ट सन्यासी आदि सगरेन कूं अथवा सगरे शूरवीर सेना के सहित ही सगरेन के स्वामी मोकूं हू श्री महाप्रभुजी एक भ्रु भंग मात्र सूं ही भस्म करिवे में समर्थ है, सो भस्म जो नहीं करे है सो तो वा महाप्रभुन की कृपा को ही उछलनो है, और वा पाखंडी सन्यासी तथा सगरे वा सेनापतिन के संग ही जो हों अत्यंत शत्रु भयो हों तो हूं या जगत में जहां कहां सब प्रकार सूं बडे मान सौभाग्य मद सो वैसे चक्रवरती मोकूं तृण जैसे मानत ही जो वैष्णव धर्म निरंतर प्रसर रहयो है सो तो श्री गोकुलेन्द्र प्रभुन के आश्रय समंधी भुजान को ही बल है । श्री गोकुलेश प्रभुन के आश्रय, के भुजबल सो ही, यह वैष्णव धर्म प्रसर रहयो है यह भाव है, और बहोत धन देकर के वारंबार बोहोत विपदा दे देकर तथा गांम देश नगरी हस्ती घोड़ा आदि दे देकर साम दाम भेद दंडन सूं के वांछित वैसे अनन्य वस्तुन के दांन सूं के और हू उपायन सूं जिन जीवन कूं हम बड़े यत्न सूं कछुक वश कियो हतो विन सबन कूं ही यह श्री गोकुलेश प्रभु अपनी मधुर

लीला के मधुर कछुक कणिका मात्र कूं दिखायके ही वेग ही अपने कर लिये है । उछल्लित होय रहे हैं हजारन अर्बन उत्साह समुह जामें, ऐसे महावीर यह श्री गोकुलेश जी यद्यपि या प्रकार मेरे सहित सगरे विश्व कूं विना यत्न ही वश कर लियो है ॥ तथापि मेरी इच्छा कूं मिस बनाय के महा गंभीर यह महाप्रभु अपनी इच्छा के अनुकूल चलत ही अपने जीव समुहन कूं वश करत ही अपने गुणन सो ही निरंतर सुखी करत ही शरणागतन की रक्षा करत ही, के सगरे जनन के मनोरथन कूं पूरण करत ही मंद हास्य के, चरण रज समंधी कणिका सूं ही सगरे जनन में चिंतामणी समूहन कूं अर्बन निधि न कूं करोडन मुक्ति कूं, मोतीन के लाखन सूर्यन कूं के सुमेरू पर्वत के समुहन कूं तथा रसात्मक भक्तिरूप करोडन अर्बन कामधेनु के समुहन कूं वर्षा करत ही अपने यश सूं धवल कियो है विजय जाने, ऐसे प्रताप रूप सूर्य सूं सबन कूं तपावत ही तथा अपने दासन के चरण रज कूं वैकुंठवासीन के मुकुट संबंधी रत्नन की किरण समुहन कूं विना यत्न ही लाल करत ही तथा विमुख जीवन के गर्व चतुरता ऐश्वर्य बुद्धि, विद्या, बल, सहायक तेज, प्रतिभा उत्साह तथा विनके सिरन कूं हू बलात्कार ही पाताल के हूं तल में दबावत ही ऐसे महाप्रतापी श्री गोकुलाधीश प्रभो श्रीजी अपने श्री गोकुलधाम सूं प्रस्थान करके वहां पधारे है । सर्वेश्वरेश्वर परमेश्वर हूं जाके चरण कमलन की रज कूं प्रार्थना करे है, सगरे लोक जाकूं प्रणाम करे है ऐसे सो भाग्यवान वगीचा में विराजमान है । तथा अपने समान हजारन भक्त जनन सूं सेवा किये हैं चरण कमल जाके तथा जयनाद के विजय समंधी नगारान के नाद सूं पूरण कियो है सगरे जगत को सुंदर जाने, ऐसे यह महाप्रभो अपनी लीला के लेश सों ही मेरे चक्रवर्ती पने कूं के इन्द्र के पद कूं तथा वैकुंठ समंधी पति के पद कूं लेने में तो समर्थ ही है तथापि वा वा लोक में जाग रही जो तृणता है के तुच्छता है सोई ही विनकी रक्षा करे है । के विनकी तुच्छता कूं विचार के श्रीजी विनकूं नहीं लेवे है यह भाव है । और सो देशपति फेर हूं कहे है यद्यपि हों तो या महाप्रभु के श्रीमुख कमल को दरसन हूं कर्यो चाहूं हू तथा अपराधी होयवे सों हों वैसे महाप्रभु के समीप जायवे कूं समर्थ नहीं हूं । और शरणांगतन के पालकवर श्री महाप्रभुजी तो अपनी शरण में आये जीव कूं लाखन अर्बन करोडन के तासूं अधिक हू अपराधन कूं हू सहेन करे हैं । "तथापि जासूं महाप्रभुन कूं प्राय

सन्यासी के वचन कूं माने'' या प्रकार सूं में पापी ने कहयो है । तासों हो वा महाप्रभुन के प्रति अपनों मुख नहीं दिखाय सकूं हूं । तथापि वा महाप्रभुन के दर्शन के लिये उछल्लित होय रही जो मेरी उत्कंठा है सो तो मोकूं क्षणंमात्र हू घरमें नहीं बैठवे देवे है, मोकूं प्रभुन के प्रति चलावे ही है, तामें वा प्रभुन के आगे प्रणाम करिवे लिये घर सूं चलिवे की इच्छा वारे मोकूं लज्जा तो पायन में सांकल रूप होयके घर में ही रोके है, ऊँचो श्वास हू नहीं लेवे दें हैं. और यह निर्दयालु पश्चाताप तो दिनरात ही विंद्याचल पर्वत जैसे बढ़िके मोकूं दिन रात्र ही निरंतर दुःखी करे है । यामें अगत्सरूप को होय, जाके स्पर्श सूं यह दुःख निवर्त होय ? और वा महाप्रभुन में जो मैंने निरंतर बड़ो अपराध कियो है विनमें कितनेक तो प्रलय अग्निरूप होयके मोकूं निरंतर जलावे है । कितनेक तो तीक्ष्ण धार वारे खडग रूप होयके मेरे कूं काटे है, और वज्र रूप होयके मेरे सिर पर निरंतर गिरे हैं, तथा कितनेक तो लोहमुद्र होयके मेरे सगरे अंगन में दिनरात्र ही घात करे है । और तो क्षीर समुद्र रूप होय के अपने भमरन में मोकूं हू डुबाय के फेर नहीं निकरवे देवे हैं । कितनेक तो अत्यंत क्रोधी सर्परूप होयके मेरे अंगन कूं बारंबार काटत ही मोकूं अत्यंत मूर्छित करे हैं वेसे दसो हूं दिशान सूं आय रहे राजा हूं के मुकुट समंधी मणीन की किरणन सूं लाल होय रहे चरण समंधी नखन के रंगरूप महासुख समुहरूप जे हिरण समूह हैं जे चक्रवर्ती रूप निर्जन वन में कूद रहे हैं । सो वैसे और अपराध तो विन पर कूदके विन कूं वेग ही गिराय रहे हैं, ऐसो दिन रात्र ही व्याघ्र रूप ही होय रहे है, तथा अनंत डरप रहे राजा समुह मेरे चरणन में चाटुकारता, नम्रता, दीनता, विनय समुह सहित ही प्रणाम करके ताता भेटान कूं स्थापित करें हैं । विनके अंगीकार सों हू विनके ऊपर जो नयन कमल को समंध रूप मेरू पर्वत सूं ऊंचो विस्तार वारो मेरो गर्व है वाके संग प्रगट भये जे निरंतर महा सुख समुह रूप गजराज हैं जे अंकुश कूं नहीं माने हैं के सांकल सूं रहित हैं चारो ओर दोड़ रहे हैं । निरंतर सगरे लोकन कूं व्याकुल कर रहे हैं । तामें और मेरे अपराध तो गजराजन के मासन सूं ग्रास करत अत्यंत बड़ी प्रबल गर्जनावारे सिंह रूप ही होय रहे तथा अर्बन पूर्ण चन्द्रमा के मुखन कूं विजय करिवे कूं जिनके मुख हैं, डर रहे हिरण के बालक जैसे चंचल जिनके नयन हैं के ऊंचे पुष्ट कुचन सूं सुमेरू पर्वत की शोभा को जे विजय करे हैं के सुन्दर

जिनके कंठ हैं ऐसी सुंदरीन की गाढ़ आलिंगन, चुंबन, अधर पानादि रूपं बढ़ रहे वन में दुःख समूह रूप गजराजन कूं मार रहे, जे मेरे ऐसे सुख समूह रूप सिंह राज हैं तामें और मेरे अपराध तो सिंहराज के नाश करिवे में सुख रूप होय रहे हैं। वैसे और अपराध तो सिंघासन सूं मोकूं भूमि पर गिरावे है, के पर्यंक सूं नीचे गिरांवे हैं, के मेरे भोजन में विष करे हैं, ऐ अत्यंत मीठे हूं मेरे पानी कूं कडवो करे हैं, तथा और तो मेरे घर कूं वन बनावे हैं, गुणन कूं दोष समुह बनावे हैं, के आभरण कूं भारण रूप करे हैं। कितने तो मेरे उत्कृष्ट कूं निकृष्ट करे हैं, तथा स्त्रीयन कूं शस्त्र रूप करे हैं। वामें हों काकी शरण जावूं यामें मोकूं को हित कहे, तथा अपराधन सों दुःखी हों रुदन हू नहीं कर सकूं हूं, और अत्यंत लजावत ही कोऊ सूं पूछ हूं नहीं सकूं हूं, वामें अल्पबुद्धि हौं उपाय विचारवे कूं समर्थ नहीं हू। अथवा क्षण क्षण में अत्यंत बढ़ रही या लाज कूं वेग ही अत्यंत दबायके आज वा शरणांगत के पालक, क्षमा के निधान, वा महाप्रभुन के ही शरण को हों प्राप्त होवुं सो मेरी रक्षा करेंगे। **तथापि यह बड़ो दुःख है के या महाप्रभुन में मेरो ऐसो शुद्ध भाव जब प्रगट होय जाय तब सो दुराचारी दुष्ट नीच बड़ो पापी सन्यासी प्रथम उज्जेन में रात्री समय में दिखाये जे भयानक रूप वारो राक्षस है विन सूं मोकूं अवश्य ही दुःखी करवावेगो। बड़ो अन्याय भयो। सो दुष्ट सन्यासी तो अत्यंत उदासीन के चिंता सूं विकल हतो परन्तु मूर्ख मेंने ये मानके न योग्य वाकूं बड़ो प्रतिष्ठित बनाय दियो है। अथवा अत्यंत कृपासिंधो श्री गोकुलाधीश प्रभु हैं सो शरणांगत मोकूं ता दुष्ट सन्यासी के राक्षस समुहन सों अत्यंत ही रक्षा करेंगे। जासूं सर्व समर्थ हैं। सो महाप्रभु जी सरीखे के मोकू हू शुभ फल करे हैं। तथापि दुष्ट सन्यासी के तो कर्तव्य अकर्तव्य कूं विचार हू नहीं है। तासूं अत्यंत कोमल सूधे शरणांगत मात्र जीवन के हित में तत्पर तथा अपने हित कूं न विचार के ही परहित में सदा निमग्न हृदयवारे महासुंदर गुण सागर सर्वाधार महाप्रभुन में सो दुष्ट सन्यासी व्याकुल उदास होयवे सूं कछु तुच्छ मंत्र देवता के वाम मार्ग सूं साधना किये और हू राक्षस पिशाच, भूतन सो कछुक अपकार करे सो तो मोकूं या महाप्रभुन के भक्त समूह कों ही अपने नाश सूं हू अधिक ही दुःखी करेगो यासूं अपने अपराधन सूं हो महादुःखी होवत हूं। सबकूं छांड़ि के प्रभुन में दिखाये अपने सगरे भावकूं मलेच्छ चक्रवरती**

के योग्य वहेवारन सो अत्यंत गुप्त करत ही और अपने हित के, के अपने भाव के, थोरे से हूं योग्य हित कूं न करत ही निरंतर लौकिक रीति सों ही प्रभुन में वृतांत कूँ करूँगो । श्री कल्याणभट्टजी कहे है या प्रकार श्री गोकुलेश प्रभुन के तत्व कूं जानके हू वेसी श्रीजी की मनुष्य लीला समंधी माधुरी के समुहन सों अत्यंत दुर्ल्लभ प्रेम की परमकाष्टा कूं प्राप्त भयो सर्वोपर शोभायमान भाग्यवारो तथा निष्कारण उछलित होय रही कृपा सूं भक्त समूहन को चक्रवरती रूप भयो सो देशपती अपने स्थान सूं वा श्री महाप्रभुन के मुखारविंद को दरशन करिवे लिये के चरण कमलन कूं प्रणाम करिवे लिये नहीं जातो भयो है किंतु प्रथम जैसे ही अपने घर में ही स्थित होतो भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लिलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले द्वादस स्तरंग समाप्तम् ॥१२॥

त्रयोदश तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ श्री त्रयोदश तरंग लिख्यते ॥१३॥

श्लोक -- **सोयव मठाधिश्वरेः परितशुररां: सुमहोत्साहरेः**

सुत न शरणक्षोहिणी सेव्यैः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के बड़े शूरवीर, बड़े उत्साही, बोहोत अक्षौणी सूं सेवित देशपति के देशान कूं विनय करिवे वारे राजा तथा विनय प्रेम सूं मिले वे असंक्षात विजय किये राजाधिराज कि दिशान के स्वामी जाको चारों ओर सों सेवन करि रहे हैं ऐसो सो मलेच्छ चक्रवर्ती सुन्दर राज सिहासन पर विराजमान होवत ही वहाँ आय रहे बड़े शूरवीर कि ईश्वरेश्वर के मध्यान के सूर्य सम्बन्धी तेजन कूं हू विजय करिवेवारे महा तेजस्वी आसफखान कूं देखिके अत्यन्त विस्मित होयके वाकूं कहेत हैं के ''तुम हजारन अमृत के समुद्रन कूं पान करिके विनमें विहार करिकें कि कहा कल्पवृक्ष के पक्व फल समूहन कूं खायके, के कामधेनु के दूध के पेंड़ा खायके, के मंदराचल के शिखरन पर चढ़िके के कहा रोहण पर्वत के सुन्दर मणी समूहन कूं लूट के, के अपनी भुजान सूं मंथन किये क्षीर समुद्रन सों अमृत निकार के, कि

कहा अपने तरल वेग सूं अविद्या सहित पवन कूं हू विजय करिके कि अपने तेज सूं जेष्ठ, अषाढ़ के हू प्रचण्ड सूर्य कूं हू अपनो करिके इन्द्र कों वलात्कार ही वाकी प्रिय, अप्सरान कूं खेंचिके ही कहा कल्पवृक्षन की सघन छायान में तुम विश्राम करिकें के विजय किये हैं देवी के वाहन सिंह, सो विदारण किये इन्द्र के हाथी के कुंभ सम्बन्धी मुक्तान सों बनवाये हार कूं अपनी स्त्रीन कूं गले में पहेरायके कि वा बैकुंठ समूहन के सिर पर चरण कूं धारण करिके ही तुम आये हो ? जासों तिहारे भीतर बाहर ही हर्ष के हजारन समुद्र उछल रहे हैं यह विना कारण के नहीं हैं । तासूं सो अवश्य कहिये । आसफखान, जैसो स्वरूप तिहारो मैंने आगे कबहू नहीं देख्यो है, सो कहा तुम कूं स्यमंतक मणी मिली है, के चक्रवर्ती पद मिल्यो है, के योग सिद्धीन को समूह मिल्यो है के परमेष्टी पद मिल्यो है जासूं तुमकूं आज मैं दर्शन करिके वा राज सिंहासन पै प्रथम जैसे बैठके नहीं ठहेर सकूं हूं । कोऊ मोकूं जबर सूं उठावे है । कोऊ कारण सूं मेरी रसना तेरी स्तुति करवो चाहे है । कोऊ मोसों अजान्यो कारण तिहारे आगे अंजुली बंधवावे है, के प्रणाम कूं न जानवे वारो मेरो मस्तक तिहारे चरण कमलन कूं ग्रहण कर्यो चाहे है और तेरे दृढ़ दास भाव तथा मेरे स्वामी भाव के होने पर हू मेरो चित्त तेरे को स्वामी और मोकूं दास बनायो चाहे है । तामें मेरो चित्त अमृत समुद्र के मध्य में प्रवेश वारो जैसे होय वैसे ही आनन्दित होय रह्यो है, के हर्ष के आंसू जिनसूं झरें हैं ऐसे यह मेरे नयन श्रृंगार रस के महासागर में आछी तरह सूं पिसे चन्दन रूप पर्वत समूहन सूं अंजन कूं धारण कर रहे हैं, के तिहारे आलिंगन रूप अमृत के समुद्र समूहन कूं पान करिवे लिये ही यह मेरो हृदय उछल्लित होय रहे आनन्द समूह सों तिहारे आगे ही उठिके आये हैं कहा ? और प्रिय वचन गान वीणा नाद तथा चारण, बंदीजनन की स्तुति रूप योग्य अहारन कूं छांड़िके यह मेरे कान सन्देह रूप तृष्णा समूहन सूं हरिवे वारे तिहारे मुख रूप क्षीरसागर सों प्रगट भये सैकड़ान अमृत समुद्रन के पान करिवे अर्थ ही अत्यन्त व्रत कूं मानो करि रहे हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के इतनी सुनिकें मंद हास्य वारो है श्रीमुख जिनको ऐसे सो आसफखान या देशपति कूं कहेत भयो है के ''श्री विट्ठलनाथजी के पुत्र करुणासागर श्रीजी यह परम पुरुषोत्तम हैं । सो ऐसे चारों ओर सूं सुन्यो जाय है । सो दीन जनन के बंधु हैं । सगरे जगत कूं शुभ करवे वारे

हैं, के कलिकाल सूं बढ़ि रहे पापन सूं अत्यन्त निवर्त होय रहे धर्म कूं जो अपने चरण कमल सम्बन्धी रज सूं विश्राम भवन रूप हैं जाके चरण कमल की रज धर्म के महा सुख पुष्टि के करिवे वारी है, के अवतार तथा सगरे अवतारी हू जिनके भाग्य तथा महिमा कूं वांछा करें हैं ऐसे श्रीजी के जे अपने भक्तजन हैं वे अत्यन्त दुर्ल्लभ पावन मनोहर चरणकमल के धारण सूं भगवान की भक्ति रूप मार्ग कूं सर्वोपर विराजमान ही करते भये हैं, के वैसी रसात्मक भक्ति वारे वा वा भक्त समूहन के संग श्रृंगार रस के सार रूप समुद्र समूहन ने अपनी इच्छानुसार वा वा प्रकार सूं विहार करि रहे जा श्रीजी के वा रस की धारा सम्बन्धी कणिका के लेश जिनके माथे पर गिर्यो है तासूं ही वे वे जन ब्रह्मा शिव इन्द्रादिकन कूं बिलाई, मूंसा कूं जैसे भक्षण करे है, ऐसो अत्यन्त कराल हू काल या श्रीजी की माला धारण सूं सगरे जगत में चारों ओर प्रसिद्ध भई है महिमा जाकी, ऐसी तुलसी कूं जे जन या प्रसिद्ध लक्ष्मी कूं हू तृण सूं हू अत्यन्त तुच्छ जानते हते, वे जन हू रोम हर्ष वारे मस्तकन सूं ही अत्यन्त आदर करें हैं वा श्रीजी की आज कृपा रूप कल्पवल्ली सूं वा श्रीजी कों भक्तन के संग ही आज मेरे घर पधारनो भयो है । वा श्री गोकुलपति को जो रूप है सो मेरे नयनन में अमृत के लाखन समुद्रन की वर्षा करत भयो है तथा वाको जो श्रीमुख कमल है, के पूर्ण चन्द्रमा में हू मलिन दर्पण की बुद्धि को करतो भयो है । जाके महासुन्दर श्रीमुख को दर्शन करिके पूर्ण चन्द्रमा हू मलिन दर्पण जैसे प्रतीत होय है यह भाव है । तथा वाके नयनन की जो शोभा है, सो हिरण कूं मोद तथा मीन, चकोर, कमलादिकन कूं तो तिरस्कार रूप समुद्र के महा भमर में ही डार देती भई है, तथा मणी जटित कुण्डलन की जो शोभा है, सो मेरे मन कूं निमर्याद कोऊ अनिरवचनीय आनन्द सागर में डुबावती भई हैं । क्षणु पीछे सूखे वस्त्रन सूं बोहोत वार पोंछतो भयो हू सो अपनी वा आरद्रता कूं नहीं त्याग करे हैं, और चिरकाल सूं आदर किये स्वच्छ वा श्रीजी के कपोल युगल हैं सो मेरे नयनन में प्रगट भये हर्ष सम्बन्धी आंसुन की धारा के मिस सूं वैसे भाग्यन सूं रहित जीवन कूं रुदन करावती भई है तथा वा महाप्रभुन की प्रसर रही जो भक्तन के नयन रूप कुमुदनियन कूं प्रफुल्लित करवे वारी दंत पंगति की चांदनी है, सो वा श्रीजी के श्रीमुख कूं चन्द्र रूप कहे हैं, तथा अनुभव तो वा चन्द्रमा सूं हू अत्यन्त विशेषता कूं ही कहें हैं । तथा श्री महाप्रभुजी

को जो अधररूप जो माणिक है सो मेरे घर को लाल रंग वारो ही कर देतो भयो है, तथा वा श्रीजी के मन्द हास्य हैं वे तो वा मेरे घर कूं वेग ही धोयके वैसे उज्ज्वलही कर देते भये हैं । तथा कृपा रस सों भरी जो वा श्रीजी की दृष्टि है सो मोकूं वैसो पुष्ट करती भयी है । जासूं सगरे लोकन में नहीं समाय सके है, तथा वा श्रीजी के कृपा भरे वचन हैं सो मेरे कानों कूं चिन्तामणी समूहन कूं अत्यन्त सुन्दर शोभायमान करिके विनके अमृत के समुद्रन कूं पूरण करते भये हैं । तथा वा श्रीजी पुरते भये हैं । तथा वा श्रीजी की जो मुरती है सो मेरे घर को भूषण रूप होय है । ''पृथ्वी है सो वैकुंठन के ऊपर ही है'' वा वाणी कूं बलात्कार ही प्रमाणित करिके कि सत्य करिके ''पृथ्वी वैकुंठन के नीचे है'' वा वाणी कूं अप्रमाण ही कर देती भई हैं, तथा मेरे अनेक प्रकार के संदेह रूप सघन अंधकार की पंक्ति कूं महाप्रकाशात्मक वचन रूप किरण समूहन कूं नाश कर रह्यो जो वा श्रीजी को श्रीमुख है, सो अपने चन्द्र भाव कूं ही स्पष्ट कहेतो भयो है । तथा वा श्रीजी के निमर्याद सुन्दर जे भुजदंड हैं चौदह लोकन कूं जाने तृण जैसे गिन्यो है ऐसो जो सत्य को, के धैर्य को, उछलनो है तासूं इकट्ठो कियो है उद्यत भाव जिनने, ऐसे जे नयन सम्बन्धी विलास हैं, के भ्रुअन के जे वे वे विलास हैं, के वक्षस्थल की जे पूरण विशालता है, महासुन्दर कपोल पलकन के जे उल्लास हैं, वे सगरे ही आकाश को स्पर्श करिवे वारे तरंग समूहन सों दबाये हैं सगरे लोक जिनमें, ऐसे महा अगाध्य के, बड़े भमरन वारे दान, दया, रमण की इच्छा धर्ममय ऐसे वीर रस के समुद्रन कूं ही उदय करते भये हैं । जे थोड़े से हू स्मरण भाव सूं हू सगरे लोकन कूं दान में, के दया में, रमण में, के धर्म में अत्यन्त ही वीर बनाय देते भये हैं । और वा श्रीजी के चरण कमल सम्बन्धी शोभा है, के सौभाग्य है, सो अपार लक्ष्मी है, सो मेरे घर में आनन्द के समूहन कूं सगरे तीर्थन कूं, के पवित्रता कूं, के सगरे धर्म समूहन कूं, के खान, प्रेम रस के सागर की सौजन्यता, कांति समूहन के चिन्तामणि समूह सगरी निधि ऐश्वर्य, शक्ति, प्रकाशमान गुण समूह, चतुरता, दया, सुन्दर स्वभाव सन्तोष हू उत्कर्ष विजय कीर्ति, प्रताप कूं वैसे और हू सगरे शुभ फलन कूं मेरे घर में भर देते भये हैं । तथा मोकूं हू सो विलक्षण बनाय देते भये हैं, के जैसे वैसो हू तिहारे नयन तथा भावन कूं वा प्रकार गोचर भयो है, के जासूं तुमने मेरे में या प्रकार के भाव किये हैं, के वचन कहे हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के ऐसे आसफखान के वचन सुनिके

भक्तिभाव सूं श्रेष्ठ मलेच्छ चक्रवर्ती सो देशाधिपति प्राप्त भयो है चमत्कार विशेष जामें ऐसो होयके यद्यपि या महाप्रभुन के दर्शन में उत्साही होतो भयो है। तथापि अपने भाव के प्रागट में वा दुष्ट सन्यासी सूं डरप के कछू हू न कहेतो भयो है ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले त्रयोदस स्तरंग समाप्तम् ॥१३॥

चतुर्दश तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ श्री चतुर्दश तरंग लिख्यते ॥१४॥

श्लोक -- **अभवः प्रगटोनाथं, प्रकटान करो निजोन्भक्तान व्यधिथाः**

प्रगटाः श्रीमद् गोकुल रसन्मृगेः क्षणा अपिताः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी श्रीजी के आगें विनय करें हैं के -- "हे प्रभो ! श्री आप प्रगट भये हैं तथा अपने भक्तन कूं हू आपने प्रगट कियो है के श्री गोकुल की रसिक मृगिनी हू आपने प्रगट करी है, विनके संग अपनी रासलीला हू आपने जीवन में प्रगट करी है तथा विनके प्रति अपने में सुन्दर भक्ति हू दान करी है विशेष कहा कहूं, के हे गुणसिन्धो, महाप्रभो श्री आपमें हू प्रवेश करिके वा लीलान के वर्णन करिवे वारे या लीलासिंधो नाम ग्रन्थ कूं स्वयं प्रगट कियो है, के कृपासिन्धो आपने या अपने सगरे भक्तन के प्रति विनके पुरुषार्थन कूं सिद्ध करिवे वारे या लीलासिंधो के रस पान में परम उत्साह को दान काहे कूं नहीं कियो है ? हे परम उदार समूहन के मुकटमणि रूप प्रभो ! विनके प्रति या उत्कंठा कूं वेग ही दान करिये। जासूं महदजन अदय दान में श्री आपके ही परम निपुण चरित्र कहे हैं ॥" या प्रकार श्री कल्याणभट्टजी श्रीजी के आगे विनय करे हैं। अथवा प्रसंग कहे हैं। याके अनन्तर श्री महाप्रभुजी आश्विन मास की कृष्ण पक्ष द्वितीया के दिन भोजन लीला कूं करिके विश्राम लीला कूं हू करिके उठिके कृपाशक्ति की विज्ञापना कूं स्मरण करिके तथा मलेच्छपति की वैसी इच्छा के मानो अनुकूल ही चलत, तब पापी मलेच्छाधीश

नीच जीवन कूं उद्धार करिवे लिये महा वेगवारे घोड़ाराज पर सवार होते भये हैं। तब अपने देखवे सूं, के मन्द हास्य सूं, मधुर वचनन सूं तथा वैसे और हू प्रकारन सूं, अपनी इच्छा सूं, मलेच्छ पापी जीवन को उद्धार करत ही, प्रस्थान करते भये हैं। तब प्रसन्न भये अनन्त भक्त चक्रवर्तियों के मुख कमलन सूं प्रगट भये जो "जय" शब्द हैं सो सगरे ही विश्व कूं प्राप्त होय जाते भये हैं। तथा वा श्रीजी की इच्छा के अनुकूल चलत ही सो शब्द रूप अपने सुनिवे वारेन की, के विनके शब्दन सूं, के विनके दासन सूं, वैसे निमर्याद होयके, वा जीवन कूं उद्धार करते भये हैं। तथा वन्दीजन, के चारण, मागध, सूतादिकन के वैसे और जनन ने हू किये जे या श्रीजी के निरन्तर स्तोत्र हैं वे हू वा श्रीजी के अनुकूल चलत ही या निमर्याद रितु को आश्रय करिके या पापी अधम मलेच्छ जीवन को उद्धार करते भये हैं। तथा वा श्रीजी के प्रति आशीष दे रहे ये ब्राह्मण तथा श्रीजी के घोड़ा के खुर सम्बन्धी रज कि (खन) खनादि के, लगाम के नाद, के चरणन के शब्द, तथा दौड़ रहे जनन के मालादिकन के चमत्कार हैं के अंगन के आभरण के जे प्रकाश हैं, के अंगन की सुगंधी के समूह हैं तथा प्रभुन के दरशन, स्पर्श, स्मर्ण, प्रणाम, सेवादि के जे जे प्रकार हैं, के वा श्रीजी में जे भक्ति आदर विनय अनुगमन प्रेम प्रिय वचन सो वे हू कमर बांधिके सावधान होयके, या उद्धार रूप कार्य में प्रवर्त भये हैं। तथा प्रभुन के किये जे वे वे उपायन के संग्रह आसा दानादि हैं वे सगरे ही वीर बोहोत प्रकार सों ही, बोहोत पराक्रम कूं करते भये हैं। और छत्र, चमर, ध्वजा, पताका के प्रभुन के दास, सेवक वे वे भक्त के विनके अनेक प्रकार के मनोरथ तथा तिलक, शंख, चक्र, कमल, गदा रूप मुद्रा, तुलसी माला,मोती, सुवर्ण, मणिकन की माला, पाग, वागो, कमर पटुकादि, के धोती, अंग वस्त्र, उपरना, पनही के सुन्दरता तथा और हू वे वे गुण समूह सगरे ही बड़े ही उत्साह सूं पराक्रम करते भये हैं। कि महा मलेच्छन के हू उद्धार कूं करते भये हैं। तब मती, विचार, अहिंसा, सत्य, अपरीग्रह के दानादि सम्बन्धी द्रव्य कूं लेनो अस्तेय ब्रह्मचर्य, शौच, संतोष, तपस्या, ध्यान, योग, आसन, प्राणायाम, धारण ध्यान, प्रत्याहार, के विषयन सूं रोकनो, शाम, दाम, समाधि, मैत्री, करुणा, मुदीता, उपेक्षा, श्रद्धा, वस्तु विचार, क्षमा, वैराग्य, विद्या, प्रबोध, नीदिध्यासन, मनन,

श्रवण यह सगरे ही प्रभुन के बल कूं प्राप्त होय जाते भये हैं । तथा तब प्रायः कलियुगार्त लोभ, क्रोध, मोह, दंभ, अहंकार, मत्सर, मद, मान तथा मिथ्याबुद्धि कलह, चर्वाक मत के दिगंबरादिक जे मत हैं वे सब ही नाश होय जाते भये हैं । तथा या महाप्रभुजी ने वैसे अपने स्वरूप सों के वा वा हजारन प्रकार सूं खंडन किये जे चाव के दिगंबरादि के जे मत हैं विनकी अत्यन्त गम्भीर अपार रुधिर की नदी प्रसरती भई है, के वैसे विजय के अर्थ घोड़ा पर सवार होय रहे के वैसे प्रागट्य रूप मनोहर कवच सूं सज रहे, के भक्त रूप हजारन अर्बन सेना सूं मिले सो प्रमाण रूप चर्म कूं, के स्वरूप रूप खडगन कूं धारण करि रहे, के अनुभव रूप धनुष वाणादि कूं, जय ध्वनि रूप नगारान के समूहन कूं, के बढ़ि रहे भगवद गुण लीला गान रूप गोमुख समूहन कूं यथायोग्य रीति कूं धारण कर रहे, महा उत्साही वीर वरन के चक्रवर्ती पधार रहे वा श्री महाप्रभुजी कों प्रेम सूं दर्शन करिवे लिये इत-उत सूं आय रही रस वारी मृगनयनीन के जे स्नेह भरे कटाक्ष समूह हास्य वचन, भ्रु-विलास के विलास, लज्जा, प्रेम, वेग, मधुरता, सुन्दरता, भाव विशेष, गुण लीला दृष्टि अंग के नर्म वचन आभरण किरण गान तरुणता चतुरता प्रगल्भता कोमलता स्वभाव मधुरता दक्षता धैर्य उत्साह गमनागमन अभेद निष्कपट भाव विनय मान आदर शीलमुख विकास दास भाव है वैसे और हू जे जब तब वहां वहां वे भाव प्रगट भये हैं । जे वा वा भक्तन के नैन हृदयादि में अत्यन्त सम्बन्ध वारे भये हैं । जे महाप्रभुन के सम्बन्ध सूं महाप्रबल विनने जे पराक्रम कूं किये हैं । याके समूहन सूं गणना करिवे में को समर्थ होय सके है ? श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के विश्व के मंगलरूप श्री महाप्रभुजी सगरे जीवन के उद्धार की इच्छा कूं जब वैसे करते भये हैं । जन्म प्रकरण में प्रथम वर्णन करी जो महाप्रभुन की इच्छा शक्ति, कृपा शक्ति, प्रभुता शक्ति, भक्ति शक्ति, ज्ञान शक्ति, कार्य शक्ति वैसे उत्तम आनन्द शक्ति हैं ये सगरी शक्ति हू तब वैसे ही अत्यन्त पराक्रम कूं करती भई हैं । कि जैसे श्री महाप्रभुजी विनके ऊपर अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं ॥ या प्रकार श्री गोकुल रूप क्षीर सागर के चन्द्ररूप श्रीजी संसार सागर सूं राजा, राजपुत्र, शरणी, बन्दीजन, सूत, चारण, राजसीजन, सेनापति, राज सेवक, वैसे देशपति के वा वा विद्या के जानवे वारे, के वा वा कार्यन के अधिकारी,

खजानची, घुड़वाल, सेनापति, हाथीन के पति और हू वा वा सेना के अधिकारी, सुनार, जडीया, हाथी दांत के क्रय विक्रयादि कार्य में चतुर वा वा ग्राम के पति, सभापति, गुणी, गायक, वैद्य, कवि, गणिका, मन्त्री, व्याघ्र, मृगन के अधिकारी तथा मृगया में संग जायवे वारे, मृगया में चतुर के कायस्थ तथा और हू वे वे बड़भागी राजा व्यौपारी, शूद्र, ब्राह्मण, बली, दुर्बल, प्रसिद्ध सुन्दर कर्म वारे गुणज्ञ, के वा वा दिशा के पालक, वा वा संग्राम में चतुर, के मलेच्छ, रसोइया, मलेच्छपति, पासार्क (नास्तिक) तथा विनकी स्त्री, मैया, बहेन आदि कूं तथा वा वा नाम वारे वा वा जाति वारे वा वा कार्य करिवे वारे लाखन अर्बन करोड़न जीवन कूं उद्धार करिके श्रीजी बिना यत्न के, बिन जीवन सूं अधिक जीवन को उद्धार करते भये हैं, तथा वहां वा श्रीजी ने जे कूकर कीट पतंगादि जीवन को उद्धार वैसे कियो है वाकूं गणना करिवे में अत्यन्त बुद्धि वारो हू समर्थ होय सकेगो कहा ? किन्तु कबहू नहीं होय सकेगो, और जीवन की रसना में, कानों में, हदय में हू, अत्यन्त प्रगट होयके श्री गोकुलप्रभुन के नाम ने जो पराक्रम कियो है, के जा जा जीवन कूं जितने जीवन कूं जैसे जैसे उद्धार कियो है वाके वर्णन करिवे में को ईश्वर हू समर्थ होय सके ? अपित कोउ नहीं होय है । तथा मद्यप, सुवर्ण चौर, मातृगामी, भगिनी गामी, मित्र द्रोही, ब्राह्मण घाती, आचार्य, माता घाती तथा चांडाल, नीच जाति वारे, भक्त द्रोही, हूण, किरात, यवन, आमीर, पुलिंद, खसो, कंक, पापी भोगाशक्त, दुःखदाई तथा ज्ञान वैराग्य रहित के ब्रह्मचर्यादि रहित, सर्व धर्म भ्रष्ट, नीच शांख्ययोग सूं हू विमुख, क्रोधी, लोभी, अत्यन्त मत्सर, शठ पर-स्त्री रत, मूढ़ पर-अपकार परायण सर्व पापाशक्त, चांडाली रजस्वला भोगी तथा मदिरा पान प्रिय, मांस भक्षक तथा दासी गामी, दंभी ब्राह्मण, के और हू वैसे महापापीन कूं पाप आदि के हरण आदि सूं योग्य बनायके वेग ही अपने पद में प्राप्त कर देते भये हैं । जा श्रीजी में धारण करी है बुद्धि, ऐसे जीव नरक में नहीं जावें हैं, के जाके चिन्तन में स्वर्ग हू विष रूप प्रतीत होय है, जामें मन लगायवे वारो जीव कूं, ब्रह्म पद तुच्छ प्रतीत होय है । तथा जो निर्विकार श्रीजी मलिन बुद्धि वारेन के हू चित्त में स्थित भयो थको मुक्ति को दान करे है । या महाप्रभुन के नाम तत्काल ही पापन कूं जराय देवे हैं । संकेत सूं, के हांसी प्रसंग सूं,

के नर्म वचन सूं, के अविज्ञा सूं हू प्राणपति श्रीजी के नाम को जो ग्रहण करे है, सो सगरे ही पापन कूं नाश करे है । यह विद्वान जानें ही हैं । **परस्वोगीस्वो दुटयो** कुटो के नागादि सूं डस्यो के अग्नि आदिसूं तातो भयो के चोरादि सूं ताड़ना कियो भयो है, जो जन महाप्रभुन के नाम कूं भली रीति सों कीरंतन करिके पीड़ा कूं नहीं प्राप्त होय है । अज्ञान सूं के ज्ञान सूं उत्तम श्लोक प्रभुन के कीर्तन कियो जो नाम है, काष्ट कूं अग्नि जैसे जराय देवे है, वैसे ही पुरुषन के पापन कूं जराय देवे है । या महाप्रभुन के नाम कूं पापन को निवर्त करिवे में जितनी शक्ति है वितने पापन कूं चांडाल हू यत्नपूर्वक ही करिवे में समर्थ न होय सके है, और भगवान के नाम सम्बन्ध वारी जो जिभ्या है केवल एक जपन कर्त्ता पुरुष की ही नहीं रक्षा करे है, अपितु भगवत नाम कूं सुनाय के सगरे हू जगत को पावन करे है, और सदैव मोह रूप अग्नि के उछल रहे ज्वालान सूं प्रज्वलित होय रहे लोकन में जो नर वा महाप्रभुन के नाम रूप मेघ की छाया में प्रविष्ट भयो है सो नहीं दग्ध होय है । घोर कलियुग में हू जे जन या महाप्रभुन को नाम ही मेरो जीवन है । कलियुग में और प्रकार सूं मती नहीं है, गती हू नहींहै । कीर्तन किये भगवद नाम सूं विकार (आर्द्र) कूं जो नहीं प्राप्त होंय हैं सो हृदय वज्र को स्वरूप है, हृदय में जब विकार (आर्द्रता) होय है तब नयनों में जल प्रगट होय है, के रोमावली प्रफुल्लित होय है । मुहूर्त मात्र, के क्षणमात्र हू जो जन श्री गोकुलेश प्रभुन के नाम कूं कीर्तन नहीं करे है, सो महा हानी है, सो महा शून्यता है, सो महा भ्रम है । वा श्री गोकुलेश महाप्रभुन के जे सगरे भक्त हैं जिनके नाम आदि हू, के विनके चरण कमल सम्बन्धी रज आदि हू, ता जीवन के उद्धारन में बड़े पराक्रम कूं करते भये हैं । या प्रकार महावीर, शूरन के मुगटमणि सूं लाल होय रहे चरण जाके, शुद्ध है यश जाको, ऐसे जो पुण्डरीकाक्ष हरी, अजीत सर्वाधीश, अच्युत, जगन्नाथ उत्तम श्लोक गुणसागर अप्रेम, अनन्त, अजन्मा, नित्यासिद्ध, इन्द्रियाधीश, सर्व प्रभु, सर्व साक्षी, परम भगवान श्री विट्ठलेशनन्दन, निमर्याद महा दयालु श्री गोकुलाधीश श्री महाप्रभुजी हैं । सो सगरे जीवन के उद्धार कूं करत मुख्य सार्वभौम जहांगीर के द्वार (दरवाजे) भूमि कूं शोभायमान करते भये हैं । ऐसेश्री महाप्रभुन को दर्शन करिके वे सगरे अवतारी तथा अवतार हू महाप्रभुन के पराक्रम

कूं हू देखिके विस्मय कूं प्राप्त होय गये हैं । वे अत्यन्त अधिक प्रफुल्लित रोमावली वारे हू होय गये हैं । हृदय में सुन्दर बोहोत प्रकार सूं स्तुति करे हैं । के आप में यह कहा आश्चर्य है ऐसे कहें हैं ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लिलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले चतुर्दश स्तरंग समाप्तम् ॥१४॥

पंचदश तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ श्री पंचदश तरंग लिख्यते ॥१५॥

श्लोक -- **अथ श्रीकृष्णदास भाई सुन्दरदास च नाथभाई**
च केशवदास पुरुषोत्तमदास, ध्यानदास चः ॥१॥

याको अर्थ -- अब श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, ''के कृष्णदास भाई, के सुन्दरदास, के नाथ भाई, के केशवदास, के ध्यानदास, के विश्राम जलघरीया, के कल्याणजी साह, के राज के भाणेज मदसूदन भट्टजी, के वैसे और हू जे राज के पास भक्त हैं वा सबन को ही प्रणाम करूं हूं । अहो जिनकी कृपा सों प्राणनाथजी ने अमृत के समुद्रन सों अत्यन्त मीठी या लीला में अंगीकार कियो है । या समय में जो भक्त वा वा कार्य को करत ही महाप्रभुन के पास ही ठहेरे है इन सबन को ही अपने प्रभुन में वात्सल्य रस को समुद्र ही उछल रह्यो है तासूं यद्यपि या महाप्रभु की सामर्थ तो बाधा रहित अत्यन्त ही है। अतुल्य ही है, तोहू वात्सल्य वस सूं तो सामर्थ इनकूं नजर नहीं आवे है । तासूं पदपद में ही, के स्थल स्थल में ही, के बात बात में ही, या मलेच्छराज जहांगीर सूं, याके लोकन सूं हू होयवे वारे अनिष्ट को हू विचार करें हैं, के यह श्री महाप्रभुन में कछु अनिष्ट न करे, ऐसे संशय वारे होय रहे हैं । तासूं अपने प्रभु को शिक्षा ही देवे हैं के यह मलेच्छन को राजा दुष्ट सन्यासी का पक्षपाती है तासों तुलसी माला सों शोभायमान कंठ वारी के ऊर्द्धपुंड तिलक सों के मुद्रान सों शोभायमान हमारे प्राणनाथ आपको, सो देखके वैसे वैसे कहेगो ही । राज आप तो सुन्दर बुद्धि वारे हैं तासों आपकों यों ही कहेनो और भाँति सों नहीं कहेनो, चूकनो नहीं । ऐसे वा महाप्रभुन में भक्तवर सीखन कों हू अर्पण

करें हैं। तामें श्री गोकुलाधीशजी भगवान महाप्रभुजी मंद मुसकान करत विनको यों समाधान ही करें हैं। ''यामें तुम काहे कों चिन्ता करो हो ? तुमारी चिन्ता सों कहा होयगो, सो प्रभु स्वयं शुभ ही करेंगे, जानें नहीं के यह समय कैसो होयगो, सो मेरे को यामें कहा कहेनो, के मैं कहा कहूंगो ? तासूं यों कहेनो, यों न कहेनो, यह तुमारी शिखामन कहां लों बन सके है ॥'' ऐसे या प्रकार सूं श्री महाप्रभुजी राज द्वार पर विराजमान हैं। ईश्वरन के ईश्वर हैं तोहू मनुष्य सूं मानुष रूप धर्यो है। तासूं मनुष्य लीला की माधुरी के समूहन को बरंसाय रहे हैं। के तासूं सगरे हू जगत कों मधुर जैसे ही बनाय रहे हैं, के सुन्दर ही बनाय रहे हैं, के अत्यन्त प्रसन्न ही कर रहे हैं। के सबन को अत्यन्त जागरण ही कराय रहे हैं, के चमत्कार वारो हू कराय रहे हैं, के प्रफुल्लित करि रहे हैं। के कितनेक कों तो वश ही करें हैं। कितनेन कों तो नीम जैसे कडवो ही बनाय रहे हैं, कितनेन को तो महाप्रभुन में प्रेम लग गयो है, यासूं याके बिना और सब ही करवे लगे हैं यह भाव है। तथा कितने तो सुन्दर उज्जवल हो रहे हैं और कितने तो अपने को शोभायमान करि रहे हैं, कितने तो नम रहे हैं, कितने तो उत्साह वारे होय रहे हैं, कितने तो मंगल रूप होय रहे हैं, के मंगलन को करें हैं, कितने तो आप ही महाप्रभुन के दास रूप ही बन रहे हैं। तब असंक्षात रजपूतन के संग हरीदास तोंवरजी और हू या मलेच्छ चक्रवर्ती जहांगीर के आश्रित, के जन, के दास, अनेकान और हू लोक इहां ठाड़े हैं। वैसे अनेकान राजा, राणा, लोक हैं, शूरवीर हू, अनेकान यहाँ ठाड़े हैं, अपने को प्राणनाथ में भक्तिभाव बढ़ ही गयो है। राजा के गुणन सों मन विवश होय गयो है, तासूं वे सब श्री महाप्रभुन को उछल्लित प्रेम सों देख ही रहे हैं, कि विचार हू करें हैं, अहो यह मलेच्छन को चक्रवर्ती राजा है सो तो बहुत ही उग्र है, के क्रोधी है, के नीच सन्यासी को ही पक्ष करे है, तामें हजारन अर्बन अपने प्राण हू जाके चरणरज के लेश पर हू वार डारे, ऐसे प्राणनाथजी श्री महाप्रभुजी तो केवल धर्म परायण ही हैं। सत्य प्रतिज्ञा वारे हैं, परम सकुमार हैं, सुख के सागर हैं। ऐसे महाप्रभुन को या जहांगीर के संग जब संवाद होयगो, देखो वामें कहा होय, कोऊ भगवान है, तो असार हू संसार को उत्कर्ष, कि शोभा के मंगल समूह कि सुन्दरता की माधुरी, कि लक्ष्मी, प्राण रूपी संसार को मणी रत्न, कि आधार, कि माखन रूप कोमल,

कि जीवन रूप है, तो ये ही श्री गोकुलनाथ प्रभु ही हैं, याकी ही रक्षा करें, तो वा प्रभु की रक्षा सों ही, या संसार की, वैसे ही हम हू सबन की हू रक्षा होयगी । हां हां यह मलेच्छ चक्रवर्ती राजा यह जहांगीर वा दुष्ट सन्यासी के पक्षपात सो, श्रेष्ठ धर्म के विमुख होयवे सों, अपने ही खोटे अभाग्यन सों कि हमारे ही प्रबल पापन सों के या चौदह लोकन के अभाग्य, के मंद भाग्य, के विस्तार सों ही या महाप्रभुन के विपरीत (प्रतिकूल) मन में कछुक विचार कूं करे, कि कछुक बुरो करे, के कहे हू सही,तब तो याकूं के याके सब सम्बन्धी लोकन कूं हू हम यम लोकन में पहोंचाय देंयगे, के मार ही डारेंगे । इतने ही सूं के मरवे सूं ही कहा होयगो ? यह हमारे मन को दुःख, के सन्यासी को मान निवर्त होय जायगो का ? मानो ना । यह तो योग्य एतो ऐसे है के श्री गिरिधारीजी या दुष्ट सन्यासी कों, याके उपद्रव कूं दूर करिके याके खोटे विचार कूं आप ही दूर करें तो बने । परन्तु सो हू या महाप्रभु के पराक्रम सों ही भक्त समाजन के अहोभाग्यन सों ही या रस सागर महाप्रभु की स्वरूप माधुरी सों ही, या प्राणनाथ में मलेच्छ चक्रवर्ती जहांगीर को सब सों विशेष प्रबल प्रेम होय जाय, वा प्रेम सों ही यह कार्य ही होय, तो तब ही उचित है, योग्य होय है । तासूं सगरे गुणवारे सुन्दर मनोहर धर्म परायण बुद्धिमान सदा स्वच्छ, सबके उपकारी, मंगल रूप या महाप्रभुन में यह जहांगीर प्रसन्न नहीं होयगो कहा ? अत्यन्त ही प्रसन्न होय जायगो । तब सगरे ही कार्य सुख सों ही जोग्य होयंगे ही । तब सगरे कार्य सरेंगे । योग्य तो ये ही है । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कें या प्रकार परस्पर मिलके विचार करें हैं । बोहोत प्रकार सूं समाधान हू करें हैं । आपस में स्वयं अपने बल को बढ़ाय हू रहे हैं । प्रीति सूं बारंबार प्रणाम हू करें हैं । बहोत प्रकार सों वारनो, न्योछावर हू करि रहे हैं, के न्योछावर कूं प्राप्त होय रहे हैं, के वारणे हू जाय रहे हैं । अहो प्राणनाथ को प्रेम इनमें ऐसो बढ़ि गयो है, के वा प्रेम ने ही वा महाप्रभुन के प्रबल मनोहर वा वा गुणन ने ही इन हरीदास तोंवर आदि सबन को अपने वश ही कर लियो है, के अपने प्रभुन के दास रूप ही बनाय लियो है । जासूं जन्म सूं लेकर अब लों हू देशपति जहांगीर ने इनके ऊपर अनेक ही उपक़ार, बड़े बड़े उपकार किये हैं या सब उपकारन कों यह वेग ही भूल गये हैं । जाने हू नहीं हैं, न अपने को जहांगीर को दास मानें हैं । किन्तु अपने कों

या प्राणनाथ को दासरूप जाने है, यह आश्चर्य नहीं माननो, यासूं कृपा के सागर श्रीमान गोकुल रत्न श्री महाप्रभुजी या कलियुगी जीवन के प्रति विन विनके अत्यन्त दृढ़ लौकिक सम्बन्ध को हरिके निवर्त करिके फल रूप अपनो सम्बन्ध दृढ़ करिवे कों ही प्रगटे हैं । सो अपनो सम्बन्ध ही देवें हैं । यासों ही सबन को विजय करिके सदैव ही सर्वोपरि विराजमान हैं, ऐसे प्रभुन के सम्बन्ध सों लौकिक सम्बन्ध को वे हरीदास तोंवर आदि छांड़िके वा लौकिक सम्बन्धी जहांगीर को हू प्रभुन के विपरीत होयवे में मारिवे को निश्चय करें हैं, तामें आश्चर्य कहा है । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, के याही सुन्दर समय में चक्रवर्ती जहांगीर के घर के पास ही श्री महाप्रभुजी विराजमान होयके प्रकाशमान हैं । यह सुनिके बड़ो सेनापति, के फौजदार, जो आसफखान है सो अपने घर सों दौड़के ही आय गयो है । याके हृदय में हजारन करोड़न प्रेम के अतुल अपार ही विचारन के समुद्र के आवर्त, के भमरन में डूब रह्यो है मन, तासूं सामने विराजमान महाप्रभुन को न देखकर आगे ही चल रह्यो है, तब महाप्रभुन को दास जो गोधु नाम है, सो जोर सूं ही जाकूं सावधान करे है, के श्री महाप्रभुजी तो यहां विराजमान हैं । तब श्री प्राणनाथजी के श्रीमुख चन्द्रमा कूं प्रेम सों निरख के जितने दीर्घ हर्ष के समूहन सों प्राप्त भयो है, वितने या हर्ष के वस वा आसफखान को अपने हृदय पर जो हाथ धरनो है के भ्रुअ के विलास हैं, वे अत्यन्त हू चतुर भक्तन के आगे भलीभाँति सों प्रगट कहि सकें हैं का ? अपितु सगरो ही अर्थ कहेवे में नहीं आवे है । कोऊ समर्थ नहीं है । अहो दरशन में विघ्न पड़ेगो या भय सों दंडवत प्रणाम हू नहीं करे है । आसफखान प्राणनाथ के आगे नयनन सों ही कछुक प्रणाम करे है । सो प्रणाम हू कहां करे है, के इच्छाशक्ति सों प्रथम ही वा वा कार्यन को प्रेम सों करिवे की इच्छा कर रही जो प्रभुन की प्रभुता शक्ति है याकूं रोकिके, छिपायके वा हर्ष को हू छिपाय देवे है । श्री प्राणनाथजी हू या समय के उपयोगी ता ता कार्य कूं करिवे लिये अपने लोकन के मनोरथ समूहन को पूर्ण करिवे लिये वा अपने लोकन के आगे आज्ञा करें हैं, ''के या अवसर में आसफखान को हू वा आपको के बात के प्रणामादि हू करिवे को अवकाश नहीं है, यह जतावे है ।।'' तासूं ही आपके कृष्णदास, नाथ भाईजी आदि हू भक्त लोक हू, तब तब वा वा समय में, वा वा सेवा के करिवे के अवसर कों हू प्राप्त

भये हैं । यासूं ही आसफखान हू, जो प्रभुन के वे वे काम, जो विचारे हैं विनमें वा देशपति को प्रभुन में के आपके दास सेवक सम्बन्धीन के हू अनुकूल करिवे की इच्छा करत, देशपति के पास ही वाके स्थान के भीतर प्रवेश करे है । श्री प्राणनाथजी तो वाके द्वार पर ही विराजे हैं । वहां विराजवे सूं ही सगरे द्वारपालन के, के वैसे और हू लोकन के प्रबल दोषन कों काटवे लिये ही इच्छा करी है, तासूं कछु विलम्ब हू करि रहे हैं । तासूं यह भक्त आसफखान तो या प्रभुन को ही वहां छांड़िके आपके ही कार्य के लिये भीतर गयो है । तब जायके या मलेच्छ चक्रवर्ती जहांगीर कूं जाकी माधुरी प्रथम कही है ऐसो श्री महाप्रभुन के पधारवे की लीला कों सुनावतो भयो है । सो जहांगीर तो अत्यन्त शुद्ध हृदय वारो श्रेष्ठ भक्त है । अपने दोनों कानन सों या प्राणनाथजी के पधारवे की महामधुर लीला कूं यासों पान करिके प्रभुन के लिये हृदय में उछल रहे अपने अत्यन्त प्रेम कों दबावत ही दुष्ट सन्यासी की दुष्टता सूं, के डर सों, राजाधिराज के आगे नहीं गयो है तथा मेरे ऊपर राज ने इतनी कृपा करी या विचार सों हृदय में उछल्यो जो सात्विक भाव, तामें स्तंभ भाव अत्यन्त बढ़ गयो है, तासूं रुक्यो हू उठ नहीं सक्यो है । श्री प्राणनाथजी अपनी इच्छानुसार बाहिर वारे सगरे जीवन के उद्धार को करिके जब भीतर वारे हू जीवन को उद्धार करिवे की इच्छा करी है । तब आसफखान को कोई भलो दास ता मलेच्छ चक्रवर्ती के भवन सों बाहेर आयके हाथन कों बांधिके महाप्रभु आप अब राजभवन कों भीतर ही पधार के पावन करिये, या प्रकार सों विनय करे है । या विनय कों सुनिके श्री प्राणनाथ जी भीतर पधारे हैं । वामें श्री आपके संग चलि रहे मदसूदन भट्ट को मलेच्छ राजा की मर्यादा पालन करि रहे जो मूर्ख द्वारपाल ने निवारन कियो है कि रोक्यो है, वा मूर्ख को तो श्री महाप्रभुन के मुखारविन्द सों निकस्यो जो कछुक वचन है सो वचन ही दूर करि देतो भयो है ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लिलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले पंचदस स्तरंग समाप्तम् ॥१५॥

षोडश तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

अथ श्री षोडश स्तरंग लिख्यते ॥१६॥

श्लोक -- **तत्र प्रविश्य भगवल्वि दत्र मुख्याति गूढनापि भावं**
अत्यर्थमेव तुष्य भूपाद दानो गुणांस्ता स्तान : ॥१॥

याको अर्थ -- अब श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के भगवान श्री गोकुलाधीशजी या मलेच्छ चक्रवर्ती जहांगीर के वा राजभवन में प्रवेश करिकें वा जहांगीर के, देशपति के गूढ़ ही भाव कूं जानें हैं। तासूं अत्यन्त ही प्रसन्न होवत वाके वा वा गुणन कों ही अंगीकार करत परम दयालु होयवे सों वा अत्यन्त बड़े हू वाके दोसन कों न जानत ही लौकिक में देशपति के मिलन की जैसी रीति है वा रीति के अनुसार चलत ही अपने भाणेज मदसूदन भट्ट के हाथन सों सुन्दर पवित्रा, के दोय नारियल, के नव रुपैया लेकर मलेच्छ चक्रवर्ती देशपति जहांगीर के लिये देवें हैं, और मनोहर आशीष कूं हू देवें हैं। तब सारंगदेव नाम राजा बड़े आदर सों आयके श्री हस्त सों लेकर, सो तब ही आदर सों देशपति कों अर्पण करे है, के देवे है। सो देशपति तो दुष्ट सन्यासी के संग सों भये अपने अपराधन सों अत्यन्त ही लजावत के आपके क्रोधभर सों डरपत ही वैसे पश्चाताप रूप समुद्र के प्रकाश कों प्रसर रहे, के ऊँचे ही तरंगन में ऐसो गिर्‌यो है के जामें फेरि निकरिवे की आशा हू नहीं करी है के माथो ऊँचो करवे में हू समर्थ नहीं होय है। अहो ब्रह्मा, के शिव आदि को हू दुर्लभ वा महाप्रभु के वा दर्शन कों, पाप के लेश, केवल कृपा सों भये अपने घर में पधारवे कों हू अनुभव कर पवित्रा दान के मिस सों अपने कूं पवित्र करिवे को विचार के, दोय श्रीफल के मिस सों चतुर पुरुषन सों जानवे योग्य, या लोक के परलोक, ऐसे दोनों लोकन के फलदान को विचारके हू तथा नव रुपैयान को सुन्दर दान के मिस सों अखंडित अलौकिक महा नवनिधि को दान ही राज ने कियो है यह विचारके अहो हों तो सब रीति सों अयोग्य हूँ मेरे कों आपने आशीर्वाद दियो है, यह विचारकें जामें विस्मय, के हर्ष, के लाज के समूहन सों पश्चाताप रूप समुद्र ही बढ़ि रहे हैं, के प्रेम समूह के हजारन, अर्बन तरंग, भमरन के

उच्छलन सों जो मनोहर है के जो अपने जन्म के सफलता समूह के विचार सों हू सुन्दर है । के जे अपने भाग्यादि को, के धन, तन, घर, नेत्र के प्रभुता, गुण के बड़ाईपने आदि को, के और हू अपनी सगरी वस्तुन कों सफल कर रही है । के जामें राज की निमर्याद कृपा समूह की विशेष भावना होय, के या प्राणनाथ की कृपा भर सों जो सबके ऊपर ही चरण धारण करि रही है । के जो राज की कृपा सों ही प्राप्त भई है, जामें राज की सुन्दरता, उदारता, कि उन्नतता, कि गंभीरतादि की भावनादि विशेष सुन्दर है वामें रोम हर्ष के ध्यान, जड़तादि अनेक सात्विक भाव उपजे हैं ऐसी वस्तुन सों अतीत जाको वरणन होय सके, चतुर जाकूं मन सूं हू प्रसन्न ही कर सकें, ऐसी कोऊ कोऊ अनिर्वचनीय अवस्था कूं होतो देशपति प्राप्त होय है । तब चिरकाल सूं पीछे वो लोकातीत अवस्था सूं उठ्यो के बाहिर आयो हू सो देशपति वा श्रीजी के श्रीमुख कमल की लक्ष्मी है, के चंचल भ्रुअ के विलास हैं, के कपोलन की जे उछल्लित कांति है, के दंत पंक्तिन सूं निमर्याद प्रसर रहे जे चांदनी के समूह हैं, के विद्रुम कूं जानें विजय कियो है ऐसे अधर सूं जे प्रगट होय रहे, जे सरस्वती के प्रवाह हैं, कि लाल कांति है, कि वैसे मणी जटित कुण्डलन सूं उदय होय रहे, जे करोड़न सूर्य के जैसे प्रकाश हैं, मणी, मोती, तुलसी, मणी माला सूं उदय होय रही जे माधुरी है के चक्र, कमल, शंख, गदा रूप मुद्रान के धारण की जे चातुरी है, धूमिल करी है अष्टमी के चन्द्रमा की शोभा जाने, ऐसे श्री मस्तक सम्बन्धी कांति के जे समूह हैं के कुम कुम, चन्दन सूं लगाये सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड की जो उछल्लित शोभा है, के भाल देश में शोभायमान अत्यन्त सूक्ष्म काजल, टीकी की रेखा की जो कोमलता है, मनोहरता है, के चंचल अलकान के उदय होय रहे जे यमुनाजी के प्रवाह समूह, के कारी कांति है, के लोकातीत विलास वारो शोभायमान जे सुन्दर श्वेत पाग है, याकेजे किरण समूह हैं के मुख रूप कमल पर भ्रमरान को पंक्ति रूप, मूंछन के उदय होय रहे जे विलास सागर हैं, के वक्षस्थल में विलास वारी जे मुक्ता है, विनसूं उदय होय रही जे गंगा है, के उज्वल कांति है, पदक सम्बन्धी मणीन सूं उदय होय रहे जे कांति दंड समूह हैं तथा भुज दंड रूप काम के कलस, भीतर सब लोक ताको दर्शन करें हैं, ऐसो उछल रह्यो जो उज्वल विलास को समूह है, वाकी जे आकाश कूं स्पर्श करि रही तरंग हैं, के शोभा समूह रूप महा

खडग सूं, स्वतह ही कल्पवृक्ष सम्बन्धी कोमल सगरे पल्लवन कूं अत्यन्त जय करने पर हू, सर्व प्रकार सूं उछल रहे वीर रस के ऐसे स्वभाव सूं ही अत्यन्त मनोहर चंचल सुन्दर मणी जटीत द्रव्य मुद्रिका रूप सुन्दर कमर पटुकान सूं कसी बांध्यो है कमर जाने, ऐसे जे अंगुली रूप चिर प्रवाह हैं, वा श्रीजी के अंगन सूं उछलित होय रहे जे सुन्दरता रूप अमृत के अर्बन, खर्बन समुद्र हैं, वे अमृत समुद्रन के विजय सम्बन्धी हर्ष के भार सूं उदय भयी पुष्टता सूं, शोभायमान जे मनोहर मन्द हास्य हैं, के कल्पवृक्ष सम्बन्धी पुष्पन सूं हू आकर्षण किये हैं भौंरा समूह जानें, ऐसे जे श्रीअंग, अंगराग, भूषण, वस्त्र, श्रीमुख रूप कमल की सुगन्धी है, के भ्रुअ कूं हू,के वा सुमेरु कूं हू, केशन सूं मानो पकड़ के ही जबर सो ही या स्वरूप के चरणन में गिराय रही, के संभ्रम हर्ष के गम्भीर अपार असंख्यात समूहन को दिन रात्र ही वरषा कर रही, के संभ्रम हर्ष के, के उद्यत समूहन सों भ्रुअ विलास सों हू वेग ही दंड दे रही तथा सगरे पुरुषारथन के शिर सम्बन्धी मणी गणन को, कि दरपन सों लाल होय रहे चरण रज वारी, के मन्द हास्य सों हू अपने कृपापात्रन को मेरु सों, के सप्त लोक सों, के वैसे सबै वैकुण्ठन सों हू अत्यन्त ऊंचे, उत्कृष्ट, पद में प्राप्त कर रही, के सगरे चक्रवर्ती हू या महाप्रभुन के प्रणाम में हू योग्यता रहित हैं या विचार सूं ही ब्रह्मादिकन कूं हू अत्यन्त दुर्लभ जो दृष्टि है, ऐसी दृष्टि सों तृणमय किये हैं महाशूरवीरन के समूह जाने, और उल्लंघन किये हैं, के कुलाचाल के समूह, के जगत के स्थिर उत्कृष्ट, के समूह जामें, के नहीं गणना करी है देव पुरोहित वृहस्पति की हू बुद्धि जाने, के अमृत के समुद्र समूहन कूं विजय करिवे वारे, रसलीला के करोड़न समूहन सूं जो पूर्ण है, के जो निरन्तर सर्वोपर विराजमान है ऐसे स्वरूप के पल्लव में निरन्तर उछल रहे जे धाम हैं, के प्रकाश हैं तथा भीतर विराजमान हैं सगरे भुवन जिनके, के अत्यन्त दुःख सों होयवे वारे हू कार्यन के सिद्ध करिवे में हू दृढ़, कस बांधी है कमर जानें, के वा आस्या प्राप्ति के विलम्ब सों ही, जे विलम्ब करि रहे हैं कि वा अनुभाव समूहन सों सेवित हैं चरणकमल सम्बन्धी रज, रज के कणिका हू जिनके ऐसे वा महाप्रभुन के स्वरूप सम्बन्धी कबहू न सूखवे वारो अनुभाव है, तथा तृण तुल्य जैसे किये हैं शरद ऋतु सम्बन्धी चन्द्रमा की सुन्दर, अत्यन्त सुन्दर चंचल चांदनी के गर्व समूह जिनमें, के शुभ किये

हैं वैसे दुष्टन के मलीन हृदय पर्यन्त जिनमें, ऐसे वा महाप्रभुन के यश हैं, के निर्दोषता के दीप अत्यन्त (अपार अगाध) के अपने में डुबाये हैं सगरे सगरे भुवन जिनने ऐसे जे वा महाप्रभुन के वे वे गुणसागर हैं और वा श्रीजी के दक्षिण श्रीहस्त में विराजमान जो तीन्यो हू कालन में मंगल करिवे वारे तीन रेखान के मनोहर स्वस्तिक हैं के गूढ़ रसदान की कीर्ती कूं व्याख्यान करि रही जो यव रेखा है के रसिक सुन्दरीन के ताप कूं हरिवे वारो, के भक्तन में आनन्ददायक, जो कमल रेखा है, के धर्म के चार्‌यो और हू चरणन कूं स्थापन करि रही गौपद के चार रेखा हैं, के अपराध समूहन के छेदन में चतुर जो सुन्दर चक्र रेखा है, वा वा पाप समूहन को निवारण करि रही जो मनोहर दंड रेखा है, तथा श्रीजी के वांये श्री हस्त में विराजमान जो लौकिक रूप रस, स्पर्श, गंध, नाम वारे विषयन को जबर सों ही खंडन करिवे वारो मनोहर पंच वाण रेखा है, के अलौकिक मधुर, अम्ल, कटु, कषाय, लवण, तिक्त रूप श्रेष्ठ रसन को दान करि रह्यो जो षटकोण रेखा है तथा अपने सगरे भक्तन कूं तीनों हू काल में, काल, कर्म, स्वभावन सूं रक्षा करि रह्यो जो, के या महाप्रभुन के हर्ष कूं देवे वारी जो त्रिकोण रेखा है तथा वेग ही पुष्टिमार्ग सम्बन्धी चार्‌यो ओर पुरुषार्थन कूं देवे वारी विंराजमान चतुष कोण रेखा है, के लोकातीत, वांछित फलन की रक्षा करत ही जो कामवल्ली रेखा है, वैसे मोह की वृद्धि कूं करिवे वारी, जो वा श्री हस्त में जे मोहवल्ली रेखा है वा श्रीजी के दक्षिण चरण कमलन में वर्तमान जो सरस सुन्दरीन के ताप कूं हरिवे वारो तथा सगरे भक्तन कूं अत्यन्त शीतल करिवे वारो जो कमल चिह्न है, के निज जनन के वायु रूप पर्वतन कूं, के वृक्षन कूं काटवे वारो जो मनोहर वज्र रेख है, भक्तन के अंतराय रूप पर्वतन कूं चूर्ण करिवे वारी गदा को जो रेखा है, के अपने दासन के मंगल करन रूप जो पताका सहित श्रेष्ठ तोरण रेखा है तथा दूर सों हू भक्तन के शत्रुन के मर्म में छेद करिके, छेद कूं भेद करि रह्यो, के परम शोभा सूं मनोहर जो गुण सहित धनुष की रेखा है और रसिक सुन्दरीन के मन के वश करिवे में चतुर नागवल्ली की जो रेखा है तथा या श्रीजी के वांये चरण में विराजमान जो सगरे स्वजन कूं निर्भय करिके निवास कराय रह्यो अत्यन्त सुन्दर दिव्य ध्वजा की रेखा है, तथा विषय रूप गड़ा में गिरि रहे अपने भक्तन के चिन्ता रूप हस्तीन कूं वलात्कार ही रोक रह्यो, जो अत्यन्त सुन्दर अंकुश

को चिह्न है, के आठ दिशान के वासी, भक्तन के प्रति महासिद्धि कूं दान करि रह्यो जो मनोहर आठ दल वारे रसात्मक कमल की रेखा है, के त्रिलोकी वासी सुन्दरवर के विजय सम्बन्धी कीर्ति समूहन कूं स्पष्ट प्रगट कर रह्यो जो यव को चिह्न है के भक्तन के शत्रु सम्बन्धी मस्तकन के काटवे में अत्यन्त चतुर विराजमान जो सुन्दर जाके चिह्न हैं तथा भक्तन के प्रति विनके दान करिवे अर्थ लाखन अमृत के सागरन सूं निरन्तर पूर्ण मनोहर मंगल कलश को जो चिह्न है तथा भक्तजन के चित्त में प्रीतम के मिलन की अधिक उत्कंठा रूप काम कूं प्राप्त करि रह्यो,जो पुरुष को चिह्न है, सो प्रथम कहे श्रीजी के श्री अंग सम्बन्धी सौन्दर्य अनुभाव रेखादि है विनके उछल्लित होय रहे सर्वोपर विराजमान जो प्रगल्भता है, विनसों सगरो ही दबायो, के परवश भयो, सो मलेच्छ चक्रवर्ती जहांगीर वा महाप्रभुन के दर्शन करवे कूं हू चिरपर्यन्त ही समर्थ होतो भयो है । तो विशेष निवेदन करिवे लिये के आगे उठिवे लिये के हाथन कूं बांधिवे लिये कैसे समर्थ होय सके ? तामें निमर्याद कृपादृष्टि की वरसा करि रही वा महाप्रभुन की दृष्टि सूं ही प्राप्त भई है योग्यता जाकूं, ऐसो सो देशपति उछल्लित होय रहे हू अपने भाव कूं छिपावत ही मलेच्छाधीश सम्बन्धी भाव कूं प्रगट करत ही महाप्रभुन की कृपा कूं वांछा करत ही गूढ़ अर्थ वारे श्लेष वचन कूं कहेतो भयो है ।।१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लिलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले षोडश स्तरंग समाप्तम् ।।१६।।

सप्तदश तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

अथ सप्तदश तरंग लिख्यते ।।१७।।

श्लोक -- **साध्यागतं मवद्विईगितोत् समाकर्ण्य भगवानपि**

संश्लेष्ट तमवादि दाग तं साधुः ।।१।।

याको अर्थ --श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के सो देशपति या प्रकार सूं श्लेष सूं पूछतो भयो है के ''आप सुख सों पधारे हैं'' तब या वचन को सुनिके श्रीजी हू वेग ही श्लेष वचन सों आज्ञा करत भये हैं कि ''हां हम सुख सों ही पधारे

है'' । तब सो परम बुद्धिमान हर्ष कूं छुपाय के मिथ्या क्रोध सों ही या प्रकार कहेतो भयो है के ''आपने हमारी आज्ञा नहीं मानी है तथा मथुरादि में निवास वारे मेरे सगरे अधिकारी, सेनापति तथा सन्यासीराज की आज्ञा हू आपने नहीं मानी है । आप तो धर्म परायण है, तासूं अबहू आपकूं उचित है के या सन्यासी के वचन कूं मानें । तासूं तुलसी की जो माला है वाकूं आप नहीं पहिरें'' । भगवान श्रीजी तो वा देशपति के श्लेष वचन कूं सुनिके या वाणी सूं वा देशपति पर क्रोध नहीं करते भये है । किन्तु आज्ञा करते भये है के '' और के वचन सूं, के तिहारे वचन सू, के या दुष्ट सन्यासी के वचन सूं उचित तो हम सगरो ही आतेजस्य ही मानेंगे । तामें श्रुति समूह, पुराण समूह, श्रेष्ठ स्मृती, आगम समूह, शास्त्र संहिता, रामायण, इतिहास आदि के श्रेष्ठ श्री महाप्रभुन के अनुकूल नहीं होय, अत्यन्त अनुचित होय सो तुलसी माला को त्याग, या दुष्ट सन्यासी के वचन सु हम कैसे करें । जो अपनो सब सुखकारी सनातन धर्म है सो कहा त्याग कियो जाय है ? कि काहू कबहू ने त्याग कियो है ? किन्तु कबहू नहीं कियो है । कहा त्याही अत्यन्त पतिव्रता स्त्री को कोऊ त्याग करे है कहा ? और चतुर्थ आश्रम सन्यास के अंगीकार करवे में हू सदा धारण योग्य यज्ञोपवीत को त्याग को उपदेश कियो है । के शास्त्र में कह्यो है, पर तुलसी माला को त्याग तो कबहू नहीं है, नहीं कह्यो है ॥'' श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के अमृत कू हू विजय करवे वारे प्रिय महाप्रभुन के वचनामृत सों के कृपारस के समूहन सूं भरी कृपादृष्टि सु वा मंदहास्य सूं बढ़ गई है योग्यता विशेष जाकी, निरन्तर धीर्य कूं प्राप्त कियो है, बोहोत वार अभिषेक कियो के या महाप्रभुन के लोकन मे अपने निगूढ आशय कूं स्पष्ट करायवे लिये यासूं प्राप्त होय रही है वैसी प्रगल्भता जामें, के भीतर गूढ है प्रीति जामें, ऐसो सो श्रेष्ठ बुद्धि वारो देशपति लज्जा के भार सूं या महाप्रभुन को देखवे में समर्थ नहीं होयके शिर कूं झुकायके मिथ्या क्रोध सों ही विज्ञापना करतो भयो है । कि '' यदि ऐसे है तब मथुरा में हमने प्रार्थना करी हती तब आपने ''धर्मवारो वचन, हम सन्यासी को कबहू उल्लंघन नहीं करेंगे'' या अर्थ वारो वचन आपने काहे कूं लिख दियो हतो ?'' ऐसे वा देशपति के गूढ भाव कूं हृदय मे धारण करिके प्रसन्न होते भये हैं । भाव के ग्राहक कृपा के सिन्धो दोषन की उपेक्षा करिवे

वारे महाप्रभु रंच हू क्रोध नहीं करते भये हैं । निमर्याद अमृत के समुद्रन सों वा सगरी सभा कूं भीतर बाहर आर्द्र करत प्रफुल्लित कमल जैसे मनोहर नैन वारे प्रिय श्रीजी आज्ञा करत भये हैं के "तब हमने यह विचार्यो हतो के सन्यासी तो हमकूं सदा सर्व प्रकार सूं विविधि प्रकार के बोहोत धर्म को ही उपदेश करेगो, पाप को उपदेश कबहू नहीं करेगो, यासूं या सन्यासी के धर्म वारे सदा हितकारी वचन कूं कबहू नहीं टारेंगे । या अर्थ वारो सांचो पत्र तब हमने लिख्यो हतो, और यह सन्यासी तो वा धर्म उपदेश कूं नहीं करे है किन्तु तुलसी मालादि के धारण सूं वा भगवद् धर्म के त्याग रूप पाप कूं ही सदा उपदेश करे है, तासूं या सन्यासी के अधर्म रूप वचन कूं हमने अत्यन्त ही त्याग कियो है, के नहीं मान्यो है । सो श्रुति आगम, स्मृती, सदाचार, पुराण, इतिहास रूप प्रमाण के अनुकूल वामें कहा दोष को लेश है ? के वामें कछू हू दोष नहीं है ॥" या प्रकार मलेच्छपति कूं तृण, के भूसा जैसे मानके, सिंहराज जैसे श्रीजी गर्जना करते भये हैं । तामें हस्ती, घोड़ा, मनुष्य, रत्नन के स्वामी, सूर्य सूं, प्रगल्भ तेज वारे, क्रूर दंड करता वा सगरे भूमंडल के इन्द्र, वा जहांगीर सूं डर रहे जे बल सम्पदादि सूं वा देशपति के समान हू, पुत्र, के यवन, सेनापति, राजा, ऐसे राजपुत्र तथा वैसे याके सेवक, दास हे, के बड़े राजा, भटपति, के वा वा देशन के पति, के सेना समूहन के स्वामी, के मंत्री वा वा कार्य के अधिकारी, के सदैव सर्वकाल में वाके निकट निवासी कृपापात्र हे, के अनेक प्रकार की सेवा करिवे वारे, के वासूं प्राप्त भई अनेक विभूति वारे हैं । तथा वा देशपति के संग एकांत में विराजमान जो वाकी प्राणप्रिया नूरमोहोल है, वाके भैया के पिता हैं वे सगरे ही विस्मय रूप महासागर के समूह में फेरि निकसिवे में रहित डूब रहे हैं, तथा विनमें वात्सल्य समूह हू प्रगट होय रह्यो है, के या महाप्रभुन को देशपति के संग हठ करिवे कूं निवर्त करिवे लिये इच्छा हू प्रगट भई है, के वा देशपति के संग गर्जना पूर्वक बोलिवेकूं निवर्त करिवे की इच्छा प्रगट भई है, परन्तु श्री भगवान श्री महाप्रभु जी तो बिन सबन की ओर न देखवे सूं विनकूं निरादर करत ही केवल वा मलेच्छपति के संग ही श्रेष्ठ धर्म के स्थापन करिवे वारी अनेक प्रकार की वार्ता करि रहे हैं । जामें अत्यन्त गूढ़ भाव वारो सो मलेच्छपति भीतर तो बोहोत प्रसन्न होतो भयो है ।

तथा बोहोतवार ही प्रभुन के आगे प्रणाम करे है, तथा अपने सर्वस्व कूं हू वारणे करे है, के अत्यन्त कांपे हू है, विवर्णता कूं हू प्राप्त भयो है, तथा निमर्याद अपार दास्य रस के सागर में निमग्न होयके, या महाप्रभुन के ऐसे आदर समूह के प्रभाव कूं प्राप्त होय रहे, अपने जन्मकूं सफल मानतो भयो है, तथा महाप्रभुन के धर्म कूं बोहोत मानतो भयो है। या अवसर में मूर्ख भीतर को दुष्ट कुटिल पापी तथा वा असुर सन्यासी को पक्षपाती जो सारंगदेव नाम राजा है, सो वा मलेच्छपति के क्रोध कूं महाप्रभुन में बढ़ायवे की इच्छा करत कहेतो भयो है के ''आपकूं ऐसो हठ चक्रवर्ती के संग उचित नहीं है ॥'' यह सुनकर महासेनापति भक्त सो आसफखान है सो वा पापी सारंगदेव को धमकावत ही कहेतो भयो है के ''वा दुष्ट सन्यासी के नाश किये अत्यन्त प्रिय धर्मकूं स्थापन करि रहे पुरुष श्रेष्ठ श्री विट्ठलनन्दन श्री गोकुलाधीशजी कूं या मलेच्छपति के संग अमृत कूं विजय करिवे वारो प्रगट भयो है विन जगत कूं पावन करिवे वारो सगरे लोकन को मंगलदायक परम सुखदायक कलियुग सम्बन्धी पापीन के नाश करिवे वारो मनोहर संवाद होय रह्यो है तामें अत्यन्त तुच्छ नीच तुमकूं यहां बोलवे की योग्यता कहा है ? तासूं हे नीच बुद्धि तथा दुष्ट जनन की संगत सों नष्ट होय गये हैं सगरे मंगल जाके, के दुष्टन की संगति में तत्पर है अन्तःकरण जाको, ऐसो दुष्ट पापी, तुम या स्थान सूं बाहिर निकस जावो।'' ऐसे सो भक्त श्रेष्ठ आसफखान वा दुष्ट सारंगदेव के मुख में धूल डालके प्रथम अपने घरकूं शोभायमान करत श्री करुणासिंधो श्री गोकुलाधीश प्रभुन सों प्रथम सूं हू या पवित्र तुलसी माला में मुख्यता कूं स्थापन करिवे वारो अत्यन्त मनोहर वचनामृत समूह कह्यो हतो वा वचनामृत कूं युक्ति सों, सो सुन्दर विचार वारो भक्त आसफखान वा मलेच्छपति कों तथा सगरे सभा वारेन कूं सगरी त्रिलोकी कूं हू पावन करायवे लिये प्रगट करतो भयो है। या प्रसंग सूं वैसो ही होय जातो भयो है कि सगरो ही जगत पावन प्रसन्न होय जातो भयो हतो। वहां हास्य वचन सहित सो मलेच्छपति प्रभुन के प्रति कहेतो भयो है के ''यदि श्री आपकूं तुलसी काष्ट की माला में ऐसो पक्षपात है, सो यदि त्याग हू नहीं करनो है, तो या तुलसी काष्ट की माला सूं पक्षपात निकारके यासूं हू सुन्दर स्वर्ण मणी मोती की माला में आप काहे कूं पक्षपात नहीं करें हैं ?'' तब परमेश्वर

श्रीजी हू मन्द हास्य पूर्वक ही या जहांगीर के प्रति कहेते भये हैं "या सुवरण, मणी, मोतीन की माला में हमारो पक्षपात नहीं है, किन्तु या तुलसी माला में ही हमारो पक्षपात अत्यन्त है, परन्तु श्रृंगार समय में है, और समय में नहीं है । और धर्म कूं सिद्ध कर रही वा तुलसी काष्ट की माला में तो सदैव ही निरन्तर ही हमारो पक्षपात है ॥" या वचन कूं सुनकर अत्यन्त प्रसन्न भयो सो यवन चक्रवर्ती अपने महाप्रभुन के धर्म परायण भाव कूं प्रगट करायके वा महाप्रभुन के यश कूं निरन्तर बढ़ायवेकूं फेर हू मिथ्या आग्रह करत ही वा महाप्रभुन कों कहेतो भयो है के "यदि धर्म के साधन लिये आप श्री तुलसी माला में अत्यन्त आदर करें हैं तो धर्म के साधन लिये रुद्राक्ष की माला में आप आदर काहे कूं नहीं करो हो ?" तब भगवान श्रीजी वाकों आज्ञा करत भये हैं के "भगवद् धर्म में प्रीति वारे,के वा वैष्णव मार्ग कूं इच्छा करि रहे हम वैष्णवन कूं सो रुद्राक्ष उचित नहीं है । सो रुद्राक्ष तो महादेव के व्रत धारण करिवे वारे, के विनके दास तुच्छ वा वा फल कूं वांछा करिवे वारेन में ही उचित है । विनकी महिमा कूं हम नहीं कहें हैं । वाकूं जो पूछेंगे तो वाके प्रति **भववृत धरा ये च तान्समुनुव्रत पाखंडीन सो मयंतु सच्छास्त्र परीपंथीन** जे महादेव के व्रतधारी हैं, के जे विनके दर्शन के अनुकूल विचरवे वारे हैं, वे श्रेष्ठ भगवद शास्त्र सूं विमुख होयके पाखंडी होय जाय । या प्रकार को श्रीमद् भागवत को वचन तथा रुद्राक्ष की माला, **का कंतानुघृत भस्मत्रिपुंडकान सेवान्यासु सुप्रदान द्रष्दाराया सवासा जल मांविशेत ॥१॥** रुद्राक्ष की माला जिनके कंठ में है के भस्म त्रिपुंड कूं जे धारण करें हैं ऐसे शैव उपासी पतन कूं देखके हू सवस्त्र ही जल में प्रवेश करे । सवस्त्र स्नान करे है । या प्रकार को महाभारत को जो वाक्य है स्पष्ट अर्थ वारो, सो वाक्य ही सर्व प्रकार सोचके वैसो और हू कहेगो ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लिलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले सप्तदस स्तरंग समाप्तम् ॥१७॥

अष्टदश तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

अथ अष्टदस तरंग लिख्यते ।।१८।।

श्लोक -- **ईदमाकर्ण्य श्रेष्ठ भक्तवरं सार्वभौमेसः विज्ञापयाव**

भूव स्पष्टपितुं धैर्यमरम धीशस्य ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के वा प्रकार श्लेष वारे महाप्रभुन के वचन कूं सुनकर सो देशपति महाप्रभुन के धैर्य समूह कूं स्पष्ट करिवे लिये विज्ञापना करतो भयो है । के ''विशेष आग्रह सों, कहा के भाव योग्य या सन्यासी के वचन सूं, के अब हू हमारे वचन सूं तुलसी माला कूं अब त्याग ही करें ।।'' ऐसे वाके तात्पर्य कूं निश्चय करिके मंद हास्य सूं प्रफुल्लित श्री मुखारविन्द वारे भगवान श्रीजी मेघ जैसे गम्भीर वाणी सूं वा देशपति कूं कहें हैं के ''भगवान के प्रसन्न करिवे की बुद्धि सूं अनेक प्रकार के फलन के सिद्ध करिवे की अभिलाखा सूं के पावन, के नाश करिवे सूं, के लोक संग्रह अर्थ लोकन के उद्धार अर्थ तथा और कार्यन अर्थ हू जे तुलसी काष्ट की माला कूं धारण करें हैं, वे जन छोटे के बड़े और जन के कहेवे सूं या तुलसी काष्ठ की माला कूं त्याग करें हैं का ? किन्तु वे तो धैर्य वारे होय हैं वे तो सदा विपदा में हू या तुलसी माला कूं नहीं त्याग करें हैं । वासूं ऐसो को है जो अगम, निगम, पुराण, इतिहास, श्रेष्ठ संहिता रूप असंक्षात शास्त्रन कूं कछु न गिनत ही पाप सहित विश्राम करे कि ऐसो कोउ नहीं होय है । जे धैर्य वारे हैं वे तो प्राण, धन, सुख, स्त्री, पुत्रादि कूं के घर के अत्यन्त प्रिय और पदार्थन कूं हू धर्म की रक्षा अर्थ त्याग ही कर देवें हैं । धर्म के अर्थ कर्ण जात्यतादि कूं त्याग करतो भयो है । **शीबीराज** मांसक कूं तथा **जीमूतवाहन** अपने जीवन कूं, के **दधीची ऋषि** अपनी अस्थीन कूं त्याग कर देतो भयो है । तासूं जे धर्म की अभिलाखा वारे हैं विनकूं अत्याज्य कहा है ? कि धर्म की अभिलाखा वारे को पदार्थ कूं त्याग नहीं कर सके हैं ? किन्तु सबही त्याग कर देवे हैं । धर्म नहीं त्यागे हैं, यह भाव है । **जीमूतवाहन** नाम एक गन्धर्व हतो सो नाग आदिन के भक्षण करिवे वारे **गरुड़** सूं कोउ नाग कूं दया सूं रक्षा करत वा **गरुड़** कूं भक्ष रूप अपने कूं बनायके वा नाग

कूं दूर करिके याके ठिकाने स्वयं ठहेरतो भयो है । जहां आयके नाग के भ्रम सों, सो गरुड़ आयके **जीमूतवाहन** कूं भक्षण करत ही वाके धैर्य कूं देंखके विचार करवे लग्यो के यह तो नाग नहीं है । कोऊ पुरुषराज ही है । ऐसे विचारंत भक्षण करिवे सूं रुक जातो भयो है । तब गरुड़ कूं वैसो देखके **जीमूतवाहन** कहे हैं के अब हू नाड़ीन सूं रुधिर बहे है । मेरे देह में अजहू मांस है । कि मैं देखूं तिहारी तृप्ति अजहू नहीं भई है । तासूं हे गरुड़ मेरे भक्षण करिवे सूं तुम काहे कूं विराम करो हो ? या वचन कूं सुनिके अत्यन्त पश्चाताप करत सो गरुड़ स्वर्ग में जायके वहां सूं अमृत लायके वा पर सिंचन करत **जीमूतवाहन** कूं दुःख सों पीड़ा रहित ही कर देतो भयो है । तामें प्रथम जैसे सुन्दर, सुखी वा **जीमूतवाहन** कूं प्रणाम करिके सो गरुड़ जैसे आयो हतो वैसे ही चल्यो जातो भयो है । तथा **रतीदेव** नाम राजा को यश या लोक - परलोक में प्रसिद्ध है । सब गान करें हैं । तामें अत्यन्त निर्धन धीर कुटम्ब सहित ही दुःखी होय रहे, के जलपान कूं न करि रहे वा राजा के ऐसे क़रत अड़तालीस दिन गुजर जाते भये हैं, तामें कष्टित है कुटुम्ब जाको के क्षुधा, तृषा सूं प्रगट भये हैं, कंप जामें ऐसे वाके पास प्रातःकाल में कछुक घृत-पायस संयोगवत, या जल भगवद इच्छा सूं प्राप्त भयो । तब भोजन की इच्छावारे वा **रतीदेव** के पास वा समय में अतिथि ब्राह्मण आय गयो । तब तो **रतीदेव** सबन में भगवान को दर्शन करत सहृदय आदर देकर वाके प्रति बांट देतो भयो है । तब सो ब्राह्मण भोजन करिके चल्यो गयो । याके अनन्तर बांट करिके भोजन की इच्छा वारे वा राजा के पास एक शूद्र आय गयो । तामें भगवान को सुमरण करत वा शूद्र के प्रति बांट देतो भयो है । शूद्र के जाने पर एक अतिथि और ही बोहोत श्वान संग लायके वहां आयके यों कहे है कि "हे राजा या कूकर के संग ही हौं भूखो हूं ! मोकूं अन्न दान करिये ॥" तब सो राजा हू बोहोत मानपूर्वक आदर देकर शेष अन्न जो कछू हतो सो दे देतो भयो है । वा कुत्ता के प्रति तथा वाके स्वामी के प्रति प्रणाम हू करतो भयो है । तब एक पुरुष कूं तृप्त करिवे वारो पानी मात्र वाकी रह्यो । तब एक चांडाल आय गयो । सो कहेतो भयो है के हौं अत्यन्त नीच हूं मोकूं जल दान करिये । वाकी वा दीन वाणी कूं सुनकर सो बड़ो गृहस्थी सो रंतीदेव राजा कृपा सूं अत्यन्त ताप कूं प्राप्त होयके या अमृत वचन कूं कहे है । हों ईश्वर सों आठ सिद्धि

वारी हू परगती कूं नहीं वांछूं हूं, मुक्ति कूं हू नहीं वांछूं हूं किन्तु सगरे देहधारीन के भीतर स्थित होयके हों ही विनकी पीड़ा कूं प्राप्त होवूं । जासूं वे दुःख रहित ही होवें । अहो जीवन रूप या जल कूं जो मैंने तुयो है तासूं जीवन की अभिलाखा वारे याके दीनजीवन के क्षुधा, तृषा, श्रम तथा अंगन कूं श्रम, दीनता, व्याकुलता, शोक, विषाद, मोह यह सगरे ही दुःख निवर्त होय गये हैं । ऐसे कहे सूं स्वयं तृषा सूं मरत हू स्वाभाविक दयालु राजा वा चांडाल के प्रति पानी कूं देतो भयो है । तब फल की अभिलाखा वारेन कूं फल देवे वारे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, विष्णु की माया सूं रचना कीये तीन्यो ही वहां आयके अपने स्वरूप को दर्शन करावते भये हैं । और आशक्ति रहित अभिलाखा रहित सो राजा तीनों देवतान के आगे प्रणाम करिके वासुदेव भगवान में भक्ति सूं केवल प्रणाम ही करतो भयो है । या प्रकार श्री महाप्रभुजी रतीदेव केप्रसंग कूं कहेकर स्वयं आज्ञा करें हैं । ''हम तो अन्य कोउ कारण सों ही तुलसी माला पहिरें हैं । यासूं याकूं कबहू नहीं त्याग करेंगे । तामें यदि सूर्य अस्ताचल सूं उदय होय के उदयाचल में अस्त होय, के समुद्र स्थल बन जाय, स्थल समुद्र बन जाय, के पर्वत तो धूलि को लेश होय जाय, वज्र तृण होय जाय, तृण वज्र होय जाय, अग्नि शीतल होय जाय, के शीतल अग्नि होय जाय, चन्द्रमा सूर्य होय जाय, के सूर्य चन्द्रमा होय जाय, के नीम को वृक्ष कल्पवृक्ष होय जाय, के कल्पवृक्ष नीम होय जाय, कामधेनु बकरी होय जाय, के बकरी कामधेनु होय जाय, सुन्दर जो मणि पत्थर को टूंक होय जाय, पत्थर के टूंक मणी होय जाय, आकाश हू भूमि पर गिर जाय, के सुमेरु परमाणु होय तोहू हम तुलसी माला आदि कूं कबहू त्याग नहीं करेंगे ॥'' श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि या प्रकार मृगराज जैसो शब्द कहकर महाप्रभुन के वचनामृत कूं सुनकर अत्यन्त क्रूर दंड करिवे वारो बली, क्रूर सन्यासी कों थोरे अपराध पर हू मारवे वारो वा सन्यासी को पक्षपाती मलेच्छ चक्रवर्ती यह जहांगीर देशपति या महाप्रभुन के प्रति कहा दुष्ट कड़वो वचन कहेगो ? के बोहोत सेना कूं हुक्म देवेगो, कछु और हू अनिष्ट कहेगो कहा ? या प्रकार सूं विचार करत सगरी सभा हू भय सूं ही कंपायमान होय जाती भई है । तामें महाप्रभुन के जे भक्त सभा के भीतर ठहेरे हते, के बाहेर ठहेरे हते, वे सगरे ही महाप्रभुन में बढ़ि रहे वा फल सूं छिप गई है या महाप्रभुन की असाधारण महिमा समूहन में,

ऐसे होयके अत्यन्त ही डरपते भये हैं । तामें हरीदास तो बोहोत वार ही वा वा प्रसंग कूं सुनायके बिन भक्तन के हृदय कूं अत्यन्त ही समाधान करतो भयो है । तोहू रुक गये हैं वाणी समूह जिनके, के बोहोत बोलचाल न करत ही वे सगरे चित्र लिखे से ठहेरे हैं । और सो मलेच्छ चक्रवर्ती तो या महाप्रभुन के क्षीर समुद्र रूप श्रीमुख सो उदय भये वचन रूप अमृतन सूं अत्यन्त नहायके, के रोहण पर्वत को उदय भये सुन्दर रत्न सूं अलंकृत होयके, कल्पवृक्ष सूं उदय भये क्षीरन सों पुष्ट होयके हस्तीन के कुंभन सूं उदय भये मुक्तानं सूं शोभायमान होयके, के सो उदय भई गंगाजी के जलन सों पवित्र होयके उदयाचल सों उदय होय रहे सूर्य के किरण सों प्रकाश वारो भयो, के मन में निरन्तर प्राप्त भयो है हर्ष समूह जाके उच्छल्लित होय रहे हैं रोम हर्ष जाके ऐसो ही सो देशपति यद्यपि जड़ ही होय जातो भयो है । तथा या प्रकार सूं विचार करिके या अत्यन्त कोमल सुधे, सगरे लोकन के हितकारी, शरणागत मात्र जीव के हू हित करिवे में अत्यन्त आशक्त मन वारे, के अपने हित विचार कूं हू दूर करिके परहित करिवे में तत्पर हृदय वारे, के महा सुन्दर गुणसागर, सर्वाधार मोकूं या प्रकार सूं विजय करिके तुलसी माला ऊर्ध्वपुंड तिलकादि सूं शोभायमान ही होय रहे अपने दास, सेवक समूहन के संग अपने निजधाम श्री गोकुल में विराजमान होंयगे । तब बोहोत दूर रहिवे सूं वा महाप्रभुन में सो दुराचारी नीच, पापी, कर्तव्य, अकर्तव्य विचार सूं रहित, जो नीच सन्यासी है सो अत्यन्त उदास होयके पाप मार्ग सूं सिद्ध किये तुच्छ मन्त्र देवतान सूं, के राक्षस, पिशाच, भूतन सूं, के मेरे गूढ़ आशय कूं न जान रहे मेरे मलेच्छ अधिकारी सेनापतिन सूं, के मथुरा वासी अत्यन्त दुष्टन सूं कछुक अपकार करो तो सो अपकार मोकूं के या महाप्रभुन के दासन कूं हू अपने मृत्यु सूं हू विशेष ही दुःखी करेगो । यासूं मेरो जो, के अपनो नहीं बने है तो लों या महाप्रभुन को वा दुष्ट सन्यासी सों कछुक दूर विराजनो ही युक्त है । और जब मैं वहां जावुंगो तो या सन्यासी की दुष्टता कूं के अपने मलेच्छ अधिकारी, के मथुरावासी, दुष्ट लोकन की दुष्टता कों या महाप्रभुन के भक्ति भार सूं निर्भय होय रहे अपने सों के वा वा कार्यन में लगाये परम विचार वारे अपने चतुर जनन सूं युक्ति पूर्वक निवर्त करिके फेर निवास करवावुंगो । या प्रकार सूं श्री महाप्रभुन

कूं बुलवायके आदर पूर्वक ही फिर निवास करवावुंगो, या प्रकार सूं बारंबार विचारके सो मलेच्छाधीश अत्यन्त दुष्ट सन्यासी के दृढ़ पक्षपात सूं उछल रहे मिथ्या क्रोध सूं श्री महाप्रभुन में गोकुल त्याग करायवे कूं इच्छा करत भयो है । तथा श्री गोकुलराज परमेश्वर सूं के या महाप्रभुन के महा अनुभाव वारे वैसे वा वा भक्तन सूं डरप के या महाप्रभुन के देखवे में हू समर्थ नहीं होयके सिर कूं झुकायके लज्या के भार सूं मानो भूमि में ही प्रवेश करवे की इच्छा करत कि ऐसे ऐसे विचार करत ही मन सूं कोउ निश्चय सूं नहीं प्राप्त भयो है, के तब करिवे में हू कछु समर्थ नहीं भयो है । श्री गोकुल के अधीश प्रिय श्री महाप्रभुन कूं सो अत्यन्त तुच्छ देशपति उत्तर देवे में कैसे समर्थ होय सके ? और सरस्वती हू या तुच्छ मलेच्छाधीश के मुख सूं वैसे वचन कूं कहायवे में हू बोहोत डर रही है । तब वा सुन्दर समय में कृपा शक्ति तो एकान्त में आयके महाप्रभुन कूं प्रणाम करिके स्मरण करावती भई हैं के श्रीमद् गोकुल में जो प्रिय श्री यमुनाजी की प्रार्थना कूं सुनकर वाके प्रति ऐसो कह्यो हतो के काश्मीर सूं श्री गोकुल में आयके गंगाजी के तट पर निवास करिवे सूं वा गंगाजी के मनोरथ कूं हम पूर्ण करेंगे। यह स्मर्ण करायके तथा हाथन कूं बांधके या महाप्रभुन के आगे हू निवेदन करती भई है के "हे प्राणनाथ ! यह देशपति आपको भक्त है, श्री आप में पलपल में बढ़ि रहे वात्सल्य सूं महात्म ज्ञान रहित होयके या दुष्ट सन्यासी कूं आपके अनिष्ट कूं सन्देह करत के ऐसो न होय के दुष्ट सन्यासी महाप्रभुन पर कछु अभिचार करे या संशय सूं ही कछुक काल गोकुल कूं त्याग कर या दुष्ट सन्यासी सूं दूर ही निवास कूं वांछा करे है । तामें श्री आप सूं तथा श्री आपके भक्तन सूं अत्यन्त डरपत ही वैसो विज्ञापना करवे में समर्थ नहीं होय है । सो हे महाप्रभु याकी विज्ञापना कूं आप सुनें, और मानें । यहां सूं वेग ही अपने घर में पधारके गंगा के तीर पर निवास करिके वाके मनोरथ कूं हू आप पूरण करें । हे महाप्रभु ! इतने सूं श्री आप जो या प्रकार वैष्णव धर्म कूं आदर करोगे तो वाकी महिमा अत्यन्त ही प्रसिद्ध होय जायगी के प्रिय श्री महाप्रभुजी या धर्म की रक्षा के अर्थ ही अत्यन्त प्रिय अपने घरन कूं के वा घर सम्बन्धी असंख्यात विभूति हैं जिनके कणिका कूं ब्रह्मा शिवादिकिन कूं हू दुर्लभ है ऐसी विभूति कूं हू त्याग कियो है । तथा या दुष्ट कूं त्याग

कर श्री आप हू गंगा के तीर पर ही विराजेंगे। तासूं सगरे बुद्धिमान हू अब दुष्ट के संग सूं डरपेंगे'' ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लिलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले अष्टदस स्तरंग समाप्तम् ॥१८॥

ओगणीसमो तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ ओगणीसमो तरंग लिख्यते ॥१९॥

श्लोक -- **इति विज्ञापयमोनां करुणाशक्ति निजासमन**
सूधान स्प्रिन्वान्मदं प्रेयानथविज्ञा सान्समीयस्था ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के या प्रकार विज्ञापना करि रही अपनी कृपाशक्ति के अनुकूल चलत ही मन्द हास्य कूं प्रगट करत भये हैं। तब सो परम चतुर करुणा शक्ति अपने पास विराजमान जो लीला शक्ति है जाकों कार्य शक्ति हू कहें हैं वाकी ओर देखती भई है। तब कृपा शक्ति के कृपा कंटाक्ष सूं प्राप्त भयो है बल जाकूं ऐसो सो लीला शक्ति के आगे दंडवत प्रणाम करिके अत्यन्त डरपि रहे वा देशपति के वात्सल्यता सूं मिलके सुख सों मिथ्या सों क्रोध कर उछल्लित भई या वाणी कूं प्रवर्त करती भई हैं,के यदि आप तुलसी माला कूं नहीं त्याग करें तो सन्यासी सूं विलक्षण धर्म वारे आप हमारी या विज्ञापना कूं सो मानें। वा सन्यासी के समीप स्थिति अपने गोकुल गाम कूं छांडके कहूं और ठौर में बिराजें। या प्रकार अपने मुख सूं निकसी वाणी कूं सो देशपति विचार के लज्जा के भार सूं झुकि रहे शिर कूं बड़े यत्न सों धारण करतो भयो है तब भगवान प्रिय श्रीजी मंद हास्य करत ही आज्ञा करत भये हैं, के ''हम घर में के गाम में के विभूति ऐश्वर्य में अन्य जैसे आशक्त नहीं हैं। एक अपने शुभ धर्म में ही आशक्त हैं। वाकों तो कोऊ के हू वचन सों नहीं ही त्यागेंगे और गाम घर सम्पदादि कूं तो यदि स्वयं ही हम अत्यन्त संग्रह नहीं करें हैं। सो गाम घर सम्पदादि तो यहीं स्वयं आवे तो आवें, जाय तो जाय, परन्तु एक धर्म ही मत जाओ। जाके जाने पर सगरो सर्वस्व ही नष्ट होय जाय है, के जाके विराजवे पर सब ही स्थिर रहें

हैं । यह धर्म ही हमकूं अत्यन्त प्रिय है । सो यदि तुम वा सन्यासी के अनुकूल होयवे सों के कोऊ अन्य हेतु सूं हमारे गोकुल के त्याग कूं प्रार्थना करो हो तो सो हमने अंगीकार कियो है । धर्म की स्थिति रूप अमृत के समूह में सदा निमग्न होय रहे धर्म परायण जो जन हैं विनकूं गाम, घर, सम्पदा कूं जो त्याग है सो अणुमात्र हू पीड़ा नहीं देवे है । आपदा समें में हू धैर्य कूं करिके चतुरता सों निरन्तर रक्षा कियो जो धर्म है सो अत्यन्त प्रसन्न होयके ही या गाम, घर, सम्पदा कूं व अपने रक्षक जनन कूं पूरण करे है । और वितने सूं हू विश्राम नहीं करे है । किन्तु सर्वोपर विराजमान जाकी चरणरज है ऐसे भगवान कूं हू निरन्तर प्रसन्न करे है । जब सो भगवान प्रसन्न होय हैं तब ऐसो परम सुख कहा है के जो प्राप्त न होय । के सगरो सुख कहा है जो न होय । सगरो सुख स्वयं ही होय जाय है । के बढ़ि जाय है ।।'' श्री गोकुल पर्यन्त वैभव त्याग के अंगीकार में चन्द्र जैसो जाको महा उज्ज्वल आनन्ददायक हास्य है ऐसे विराधिवीर श्री गोकुलाधिपतीय के विजय सूं प्राप्त भये वचनामृत कूं सुनके, तासूं प्राप्त भई है लज्जा जामें के झुकि रह्यो है माथो जाको, कछु कहिवे में समर्थ न होयके उदासीन होयके अत्यन्त पश्चाताप कूं करत अत्यन्त डरत ही सो मलेच्छ चक्रवर्ती वा श्रीजी के मनुष्य लीला सम्बन्धी सुन्दरता, धैर्य, चतुरता, विनयशील गंभीरता, धीर्यता, धर्म तात्पर्यन सूं, के वा प्रिय के मन्दहास्य नयन विलास कुंडलों के चमत्कार तथा भ्रुअ के विलास समूह सों के तेज प्रभाव भाग्य उज्ज्वलता क्षमा तथा पुरुषोत्तम समूह के विजय सूं वा श्रीजी के महा सुन्दर स्वरूप सों के सगरे जीवन के नयन मन कूं याके वश कर रहे या स्वरूप के अत्यन्त मनोहर सौंदर्य सूं उछल्लित होय रहे पाताल समुद्र में निमग्न होयके चित्र में लिखे जैसे कछुक काल तो चेष्टा रहित ही होयके ही स्थित होते भये हैं । अहो यह धैर्य, यही शील, यह ऐसो मनोहर रूप, यह गम्भीरता, यह क्षमा, यह कृपा, ऐसो बल, यह निर्दोष सुन्दरता, यह निर्दोष उदारता, के ऐसी निर्लोभता, ऐसो ज्ञान, महिमा धर्म के, ऐसो पांडित्य, सत्येष्ट उत्कृष्टता कहा कहूं, कोऊ ने देखी है ? कि सुनी है ? ये असंक्षात के वैसे और हू सगरे असंक्षात गम्भीर गुण या प्रिय में विहार करि रहे हैं । या प्रकार के विस्मय रूप समुद्र सो देशपति दृढ़ आलिंगन कूं प्राप्त होतो भयो है । ऐसे विस्मय रूप समुद्रन में निमग्न होतो भयो है । श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के ''याके

अनन्तर या दुष्ट सन्यासी के भय सूं वा देशपति ने छिपायो हू जो भाव है सो अपनी मधुरता सूं महाप्रभुन को वश करत तृण समूह सों आच्छादन कियो जो अग्नि जैसे बल सों ही प्रगट होयके वा देशपति सों कहेवावती भई है । "तो श्री आप कहां रहेंगे ?" तब श्री महाप्रभुजी आज्ञा करत भये हैं कि "अपने देश में ही रहेंगे ॥" यह सुनिके सो देशपति महाप्रभुजी के वा अपने देश अड़ेल में पधारवे के, बड़े यत्न कूं विचारकें कहेतो भयो है के " सो तो बड़ो दूर है वहाँ आपको पधारनो उचित नहीं है तासूं कोई और ही वांछित स्थान आज्ञा करिये ॥" तब वा देशपति के प्रेम सूं विवश वश होयके ही आज्ञा करते भये हैं के "भाग्य वारे तुम ही जहां कहोगे हम वहां ही विराजेंगें ॥" यह सुनिके सो देशपति श्रेष्ठ भक्ति सों प्रेम सहित कहेतो भयो है कि "हौं तो नहीं कहूंगो ॥" यह सुन, अत्यन्त ऊँचे प्रेम वारे श्री महाप्रभुजी हू अपने मन्दहास्य रूप हास्यन सूं श्रीमुख कमल को शोभायमान करत आज्ञा करत भये हैं कि, "ऐसे है तो हम हू तुमकूं नहीं कहेंगे ॥" तब उछल्लित होय रही है भक्ति जामें, ऐसो सो भक्ति प्रवर देशपति कहेतो भयो है के, "कहां श्री आप पधारके वा पुरुषोत्तम के स्थल कूं अलंकृत करिवे की, अमृत के समुद्रन की वरखा करत आज्ञा करत भये हैं कि यदि तुम वहां ही पधारो तो, तब महाप्रभुजी आज्ञा करत भये हैं, "यदि तुम कहो तो वा जगन्नाथ पुरी में रहेंगे, बसेंगे ॥" यह सुनिके बुद्धिमान देशपति वा प्रभुन के जगन्नाथपुरी में ही पधारवे में बड़े यत्न कूं विचारके फेर कहेतो भयो है के "काशी में निवास करोगे का ? यह सुनिके भक्तवत्सल श्रीजी वाकूं वेग ही स्वयं ही अंगीकार करते भये हैं । याके अनन्तर बड़े भाग्य समूह सों प्राप्त होयवे वारी महाप्रभुन के दर्शन दान रूप जो कृपा, अमृत की वरखा है, वाकी निवृत्ति को विचार के श्रीजी के दर्शन संवाद आदि सों जो कृपा अमृत की वरखा मो पर होय रही है, सो तो अब श्रीजी के पधारवे सूं न होयगी यह विचारके सो देशपति व्याकुलता की पराकाष्टा कूं प्राप्त होयके महा सुन्दरवर श्री गोकुलपति के वैसे विप्रयोग काल के गुजरवे अर्थ वा श्री महाप्रभुजी के श्री हस्तकमल सूं प्रगट भये महा सुन्दर या श्रीजी के स्वरूपात्मक श्री अक्षरन सूं शोभायमान पत्र के दर्शन स्पर्श मस्तक में धारण, बोहोत मानपूर्वक अपने घर में विनकूं पधरावनो, हृदय में राखनो, हाथ में लेनो, बांचनो, प्रणाम, सेवन समीप राखनो के आदरादि करनो जो है सो मुख्य उपाय

है विरही काल के गुजरवे में यासूं अन्य उपाय नहीं है । यह विचार के ही छिपे भये प्रेम नम्रता ताप समूह सों ही मिल्यो सो भक्त श्रेष्ठ देशपति मानो अविश्वास सों ही मिथ्या अविश्वास सूं कहेतो भयो है कि "यदि श्री गोकुल कूं छांड़िके आप काशी में रहेंगे तो वैसो पत्र श्री आप हमकूं देवें जाको दर्शन करिके तब करिवे योग्य आगे को सगरो कार्य हम वेग करेंगे ॥" श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के या प्रकार वा भक्त के भक्ति वारे वचन कूं सुनिके वाके छिपे भाव कूं जानवे वारे श्री महाप्रभुजी वा देशपति में उछल्लित होय रहे महा अनुग्रह के भार सूं विकल होयके, ठाड़े होयके लिखवे में असमर्थ होय जाते भये हैं । तासूं कृपा समूह सो मुख सों आज्ञा कूं हू करते भये हैं के "हम ठाड़े होयके लिखें नहीं हैं ॥" तब यह सुनिकें प्राप्त भयो है बड़ो हर्ष जाकूं, ऐसो सो भक्तप्रवर देशपति अपने मन में बोहोत वार प्रणाम करिके प्राणपति के आगे विज्ञापना करतो भयो है । "श्री आप मनोहर आसन पर विराजमान होयके इच्छापूर्वक धीरे ही धीरे लिखें ॥" यह सुनिकें श्री प्राणनाथ श्री महाप्रभुजी पधारके वा स्थान कूं अत्यन्त ही शोभायमान करते भये हैं । वहां वा देशपति सो आदरपूर्वक पठायो जो दीप सेवा में अधिकारी है, रूपे के दोय शाखा वारे दंड दीपक कूं लायके महाप्रभुन की सेवा करतो भयो है । तब श्री महाप्रभुजी हू वा दीपक के प्रकाश में या प्रकार अर्थ वारे पत्र कूं लिखते भये हैं, के "अपने धर्म में दृढ़ तत्पर ही हम गोकुल कूं छांड़िके अपने धर्म सहित काशी में निवास करेंगे ॥" या प्रकार के अर्थ वारे पत्र कूं देखके यह देशपति विस्मय, हर्ष, प्रेम, उत्साह, लज्जा, ताप, भय वारो, के चिन्ता, पश्चाताप, खेद, विशेष वारी अनिरवचनीय अवस्था कूं प्राप्त होतो भयो है तथा विस्मय के भार सूं व्याकुल भयो सो देशपति कहेतो भयो है "के गोकुल के त्याग अर्थ वारो पत्र आपने स्वयं कैसे लिख दियो है । परन्तु हमकूं तो दुष्ट लोकन ने कह्यो हतो के "श्री गोकुलनाथ जो सगरी सम्पदा के स्थान अपनी गोकुल कूं कबहू नहीं त्यागेंगे ॥" तामें कितनी दमड़ी में मिलवे वारी तुलसी काष्ठ की माला के अर्थ ही अपनी ऐसी सम्पदा वारी श्री गोकुल कूं त्याग करि रहे, श्री आपने तो विन दुष्टन के सो वचन कूं विना यत्न ही मिथ्या कर दियो है तथा महिमा है या धर्म में, सबन सूं विशेष, ऐसो को धर्म कियो है । यासूं या धर्म में प्रिय श्रीजी अत्यन्त ही प्रसन्न होय रहे हैं । श्री कल्याणभट्टजी कहें

है या प्रकार अपार गम्भीर विस्मय रूप महा समुद्र में निमग्न होय रहे के बड़े यत्न सूं बारम्बार निकसि रहे वा देशपति कूं कृतार्थ करिके भजनन सूं गान कियो है उदार यश जाको ऐसे श्री महाप्रभुजी अपने डेरा में पधारते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले ओगणीसमो स्तरंग समाप्तम् ॥१९॥

बीसमो तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

अथ बीसमो तरंग लिख्यते ॥२०॥

श्लोक -- **भक्तवरः सतु देशाधिपतिः प्रेयोवियोगेन**

अत्यर्थ मनासिना जे क्लेश अंतःपुरे गत्याः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के भक्त श्रेष्ठ देशपति आप श्रीजी के वियोग सूं अपने मन में अत्यन्त क्लेश कूं पावत ही अपने अन्तःपुर में आयके अपनी पटराणी में श्रेष्ठ वा नूरमोहोल नाम वारी अपनी प्यारी कूं कहेतो भयो है। के "हेप्रिय ! तुमने नयनन सूं श्री गोकुलाधीश प्रभुन को दर्शन कियो है ? के जो श्रीजी सौन्दर्य प्रभा सों आशक्ति, उदारता, पराक्रम, तेज, गुण, यश, उज्ज्वलता, पवित्रता, श्रेष्ठ धर्म, धैर्य, आचार, गौरव, महिमा, लक्ष्मी, विद्या, प्रगल्भता, उत्साह वीर रस, ब्रह्मनीति (ऊर्जितता) विरह, मधुरता, करुणालता, दीनता की वैसे और हू वा वा गुणन के, के निरलोभता के निधान हैं तथा सबन कों प्रिय हैं । सब जीवन को उद्धार करिवे वारे हैं, के वैकुण्ठ जाके चरण की रज कूं प्रणाम करे है, ऐसी सगरी सम्पदा रूप वारी गोकुल कूं हू जो श्री गोकुलेशजी ने तुलसी माला के लिए क्षण सूं हू त्याग कर दियो है, ऐसे अत्यन्त योग्य श्री गोकुल प्रभु कूं तुमने आदर विशेष सूं सिर सूं प्रणाम कियो है के नहीं ?" तब तो परम चतुर नूरमोहोल तो कहेती भई है, के "एकान्त में ठहेरे के पलक रहित दृष्टिन सूं वा श्रीजी को मैंने दर्शनही कियो हैं, के वाके वचनामृतन कूं सो कान रूप दोनान सूं अत्यन्त ही पान किये हैं तथा या प्रभु की धर्म वार्ता हू अनुभव करी है तथा हृदय सूं सिर सूं प्रणाम हू वाके आगे करी है । तासूं अपनो जन्म ही सफल कियो है । ऐसी सम्पदा वारी हू

श्री गोकुल कूं आपने त्याग कियो है, सो या महाप्रभुन में आश्चर्य कछू नहीं है। जासूं जहां ही यह प्रभु हैं वहां ही श्री गोकुल होय जायगी, और यह प्रभु चाहना कर रही लक्ष्मी कूं अत्यन्त आदर नहीं करें हैं। परन्तु सो परम चतुर लक्ष्मी ही प्रिय के चरण कमल में, के रज में ही लोटे हैं तथा यह महाप्रभु अत्यन्त तृषित, अत्यन्त दीन हमारे नयनों में फेर कहा, अपने श्रीमुख कमल सम्बन्धी शोभा, के माध्वीक जल समूहन कूं महामद वारो करिवे वारो अमृत रस कूं वरखा करेंगे कहा ? सो गुणसागर हमारे मुख के आभरण रूप, कृपा रूप, सुवर्ण सूं अपने वचन रूप, चिन्तामणीन के समूहन कूं जटित करेंगे कहा ? हे प्रिये हमारो यह राजकुल सदैव ही जलरूप चिन्तामणीन के समूहन सूं, तीर्थन के अत्यन्त प्रभाव सूं निरन्तर मरु भाव कूं धारण करे है, सो यहां पधारे श्री महाप्रभुन की चरणरज सम्बन्धी सघन, जो रज है, सो निरन्तर चारों ओर जलन की वर्षा सूं या हमारे राजकुल मरु कूं वेग ही मरु रूप सों रहित करेगो कहा ? और या महाप्रभुन के मणि जटित कुण्डल तथा मुक्ताहार, हीरा वारी मुद्रिकान के जे किरण समूह हैं विनने मेरे नयनन में ऐसो प्रकाश कियो है, के जो प्रकाश विराज हू रहे, हू या महाप्रभुन को सदैव ही जहां कहां ही वेग ही दर्शन करावे है तथा वा महाप्रभु सों अत्यन्त वर्तमान पदार्थ के हू दर्शन कूं रोके तथा वे सुन्दरी धन्य हैं के जो वा रस सागर प्रिय के संग नम्र हास्यन सूं प्रेम सहित निरन्तर ही संभाषण करें हैं, के जीवन के संग यही श्री महाप्रभु हू प्रेम सहित हास्य पूर्वक संभाषण करें हैं ॥'' या प्रकार कह रही वा अपनी प्रिया कूं वहां छांड़िके बाहिर आयके सो देशपति वा कानवीस सूर्य ध्वज जाति वारे गोविन्ददास कूं पुत्र बलभद्र के सहित आदर सूं ही बुलवाय के प्रिय के वियोग रूप बढ़ गये झंझावायु सूं निवृत्त होय रहे पूर्वापर अनुसंधान सूं भ्रम वारो भयो सो देशपति वासूं पूछतो भयो है के ''श्री गोकुलेश प्रभुन ने कहा कह्यो हतो ? तब मैंने कहा कह्यो हतो ?'' यह सुनिके सो वो कानंवीस बलभद्र हाथन कूं बांधके वा लेख पत्र कूं देखके जो श्री महाप्रभु जी ने कह्यो हतो के जो वा देशपति ने कह्यो हतो सो सुनायके अपराध सूं हू रहे वा मलेच्छपति को समाधान करतो भयो है। तब देशपति फेर हू पूछतो भयो है के 'काशी' को नाम मैंने प्रथम कह्यो हतो, के वा महाप्रभुन ने कह्यो हतो ? तब वा कानवीस ने उत्तर दियो के 'काशी' को नाम प्रथम आपने ही लियो

हतो। यह सुनिके विस्मय सूं सो देशपति कहेतो भयो है, फेर बोहोत वार ही कहेतो भयो है, "अहो, वैकुण्ठ सों हू मनोहर वैसो श्री गोकुल मानो वासूं बीश गोकुल कूं जैसे प्राप्त भयो होय वैसे ही श्री महाप्रभुजी, मो पापी के लिये बिना यत्न ही त्याग कर दियो है। तथापि जो समर्थ हैं विनकूं को विदेश है ? तथा जो महात्मा हैं विनकूं अत्याज्य को है ? के ऐसो वैभव है जाकूं त्याग न कर सके ? और जे कंदर्प हैं विनकूं अकार्य को है ? के ऐसो को कार्य है जाको न कर सके ? तथा जो प्रिय वक्ता हैं विनकूं पर कि शत्रु को है ? के कहा श्री गोकुल प्रभु मेरे पर नाराज होयके पधारे हैं ? परन्तु जे महात्मा दीनबन्धु हैं विनके मन कूं क्रोध मलीन नहीं कर सके है। और मेरे दोषन कूं नहीं विचारके मेरे ऊपर वे प्रसन्न भये होंय, जासूं विनको ऐसो ही स्वभाव है सो बोहोतवार ही महापुरुषन ने अनुभव कियो है ॥" यह सुनिके बलभद्र तो यह कहेतो भयो है, "वे तो सदैव ही अलौकिक स्वभाव वारे हैं, वासूं सबन पर हू सदैव ही अत्यन्त प्रसन्न रहें हैं और तुमारे ऊपर तो वे महाप्रभुजी अत्यन्त ही सन्तुष्ट हते, सो मैंने निश्चय कियो है, जासूं तिहारे हृदय में कोऊ मनोहर छिप्यो भयो भाव है, तुमारे ऊपर श्री महाप्रभु तथा भूतल में विराजमान वा श्रीजी के सगरे भक्त हू अत्यन्त प्रसन्न होय हैं।" श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, के याके अनन्तर वा महोदार, महा सुन्दरवर प्रिय श्रीजी के वियोग रूप अग्नि की ज्वाला सूं विकल होय रह्यो वो देशपति महाप्रभुन के डेरा में जायके विनके दर्शन करिवे कूं अधिक अभिलाखा करतो भयो है। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के पान कियो है, कृपाशक्ति ने दान कियो, वा श्री महाप्रभुन के श्रीमुख सम्बन्धी शोभा रूप मधु को जानें, ऐसे वा मलेछ भक्तवर देशपति के नयन हैं, सो वासूं अन्य अर्थ के देखवे में जो शिथिलता कूं के उत्साह के अभाव कूं धारण करें हैं सो उत्कृष्ट है श्रीजी के वैसे वचन रूप चिन्तामणि के समूहन कूं सर्व प्रकार सूं पूरण, के जे वा देशाधिपति के कान हैं सो वे, वो नयन जैसे देशपति के अन्य वचन के सुनिवे में बधिर होय सो युक्त ही है। तथापि प्रीतम के श्रेष्ठ गुण समूहन सूं भरे वा देशपति के हृदय में मानों अवकाश के न होयवे सूं जो हर्ष वामें नहीं समावे है, सो उतकृष्ट ही है। तथा वैसो प्रीतम के श्री अंग सम्बन्धी सुगंधी के अमृत समूहन कूं पान कर रह्यो जो वा देशपति को घ्रांण यही है, वाकूं जो कस्तूरी अगररस, चोवा, कपूर, चन्दन आदि के

सुगंधी रूप क्षार जल में जो अरुंची भई है, सो योग्य ही है । और वा देशपति के नयन रूप चकोर वा श्रीजी के मन्द हास्य रूप चन्द्र सूं उदय भई कांति रूप अत्यन्त कड़वी घाम समूह कूं कैसे पान करे ? कब्हू नहीं कर सके है, ये भाव है । सो वो देशपति वा महाप्रभुन के श्रीमुख चन्द्र को दर्शन करिवेलिये के वा महाप्रभुन के चरण कमल युगलन में प्रणाम करिवे लिये वांछा करत हू, परन्तु मलेच्छ संग, मलेच्छन सूं वहेवार मलेच्छन की वाणी, या श्री महाप्रभुन कूं प्रायः नहीं रुचे है । यह अत्यन्त विचारके वा डेरा में आयवे कूं न समर्थ होतो भयो होय के, वा श्री महाप्रभुन को स्मर्ण करायवे सूं पवन सूं वा प्रिय के वियोग अग्नि कूं बढ़ाय रहे वा अपने घर में स्थित होयवे में समर्थ न होवत ही, या विरह काल कूं वैसे वैसे गुजारवे लिये मृगया के मिस सों मछी भवन नाम वारे स्थान में जातो भयोहै ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले बीसमो स्तरंग समाप्तम् ॥२०॥

एकबीस तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

अथ एकबीस तरंग लिख्यते ॥२१॥

श्लोक -- **अभ्यांगतस्य श्री विर महाप्रभो गोकुलाधिपते**
म्लेछ पुरुहुतष्टंदाधीप तादृशनिर्जयादी शंतुष्टे ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि महाप्रभु श्री गोकुलाधीशजी जब अपने डेरा में पधारे हैं तब मलेच्छ चक्रवर्ती वैसे विजय सूं प्रसन्न भये तासूं उछल रहे उत्साह विशेष कूं दे रहे, के आनन्द समुद्रन में न्हाय रहे, हर्ष के पहेरे हैं रोम हर्ष रूप कंचुक समूह जिनने, के पूर्ण है वा समय सम्बन्धी शोभा जिनमें के पूर्णता सूं नाच रहे हैं, के लूट रहे हैं, के अत्यन्त हंसि रहे हों नारायणजी, केशवदासजी, नाथभाई, कृष्ण पारेख आदि वैसे और हू जे असंख्यात भक्त हैं सो गान भेट, मंगल नृत्य, वस्त्र, भूषणादि तथा अनेक प्रकार की न्योछावर वारे महोत्सव कूं कर रहे हैं । मलेच्छ समूहन सों सेवित हैं चरण पीठ सम्बन्धी भूमि जाकी, के विजय कियो है सगरो भूमण्डल जाने, ऐसे

महाप्रतापी महाभाग्यवान देशपति के जे वे वे गुण हैं, के गूढ़ विनय वारे भाव हैं, के मधुरता है,के श्लेष वचन हैं, निवेदन के प्रकार गूढ़ वात्सल्य है, श्री हस्ताक्षरन के जो आदर सहित ग्रहण, के मनोहर लोक विचारातीत महामधुर प्रकार, के तथा अपने निकट निवासी सो रूपा की दोय शाखा वारी दंड दीप कूं, सेवा के संकोच भये लज्या नम्रता के मस्तक झुकावनो है, तथा वैसे अत्यन्त प्रतिष्ठित हू अपनी विजय सम्बन्धी मनोहर रस समूह की जो भेट है, के अत्यन्त गूढ़ मर्म कोमल मन्द हास्य है,के गूढ़ पश्चाताप समूह के हर्ष, वैसे वियोग वैसे व्याकुलता, अत्यन्त दृढ़, अत्यन्त मनोहर, गंभीर जे असंक्षात भक्त समूह हैं, वे सगरे ही कृपा सागर सर्व शिरोमणि महाप्रभु श्री गोकुलपति के हृदय सूं दूर न होते भये हैं । किन्तु वा हृदय में ही अचल होयके ही सदैव ही निवास करते भये हैं । तथा प्रातः समय में अपने श्रीमुख कमल के दर्शन अर्थ अत्यन्त उत्साही आसफखान के घर में भगवान श्री महाप्रभुजी पधारकर अत्यन्त उत्साही, अत्यन्त नर्म आसफखान के मनोरथ कूं अत्यन्त ही पूर्ण करते भये हैं और काशी निवास कूं न इच्छा करि रहे, काशी जायवे की इच्छा वारे वा देशपति कूं फेर हू महाप्रभुन के विरोध दुःख के संभव कूं विचार रहे वां वा भक्त समूहन के अनुकूल होयके विनके प्रेमवश सों प्रिय श्रीजी शूकर क्षेत्र में निवास करि रहे वहां सदैव के जे महाप्रभुन की लीला दर्शन सम्बन्धी मनोरथ है, विनकूं पूर्ण करिवे अर्थ इच्छा करत, के वहां के निवासी भक्तन की भक्ति सूं के प्रबल भाग्यन सूं अत्यन्त आकर्षण किये भये ही अमृत के हजारन समुद्रन सूं वा आसफखान कूं मानो न्हवावत ही वा शूकर क्षेत्र में निवास करिवे लिये आज्ञा करत भये हैं । तब सो आसफखान या श्री महाप्रभुन के अनुग्रह वचन कूं दीनता सहित होय रहें मस्तक सूं, के दोनों कानन सों, के अन्तःकरण सों, आदर सहित प्रणाम करिके दोनों हाथन को हृदय में धारण करत "हां हां श्री आप सुखेन निवास करें ॥" ऐसे कहेतो भयो है, "के महाप्रभु श्री आप जहां निवास की इच्छा करें वहां ही निवास करें ॥" यह चक्रवर्ती की निरन्तर इच्छा हती, सो अत्यन्त बुद्धिमान, के आप में गूढ़ सुन्दर भक्ति वारो देशपति ऐसो वचन मोकूं तथा औरन कूं हू कहेतो भयो है । सो सदा मंगल वारे श्री आप अपनी इच्छा के अनुकूल चलत ही अपने निवास सूं शूकर क्षेत्र में पधारें" । थोड़े ही दिन सूं श्री आपके निकट आये देशपति के पत्र सूं या प्रकार को

जो अभिप्राय है सो अत्यन्त ही स्पष्ट होय जायगो, याके अनन्तर सो भगवान श्रीजी वा आसफखान कूं बोहोत आदर सों आश्वासन करिके अपने डेरा में पधारते भये हैं। आश्विन तृतीया में अपने डेरा में पधारते भये हैं। आश्विन कृष्णा तृतीया में अमृत घड़ी कूं निरधार करिकें इहां सूं प्रस्थान करिवे कूं हू, तामें ज्योतिष शास्त्र कूं जानवे वारे जे महाप्रभुन के भक्त प्रसिद्ध परमानन्द जानी हैं, सो महाप्रभुन के आगे महूरत के लिए विज्ञापना करत भयो है। सो वाकूं मानके वा परमानन्द के कहे आश्विन मास की कृष्णपक्ष की एकादशी मेंश्रेष्ठ गुण वारे मुहूरत कूं कृपानिधान प्रभु निरधार करते भये हैं। श्रीमहाप्रभुन के श्रीमुख चन्द्र सों उछल रहे निमर्याद शोभामृत के समुद्र समूहन सों पान करिवे अर्थ पल पल में वहाँ आय आयके वा देशपति के सेवक तथा नगरवासी जन राजा, राज सम्बन्धी, भक्त श्रेष्ठ तथा वा स्त्री गणन को बड़ो ही समृद्ध होतो भयो है, राजद्वार में हरिबंशी नाम सूं प्रसिद्ध श्री महाप्रभुन को भक्त दुर्गदास है सो कृपा सागर महाप्रभुन के सदैव ही अनुकूल चलतो भयो है, और यह हू कहेतो भयो है, "के प्रथम अज्ञान सों मैंने जाकूं श्रेष्ठ गुरु जानके आचार्य कियो हतो, वाने तो सन्यासी के भय सूं तुलसी माला त्याग करी है, तासूं ही मैंने हू वाकूं त्याग ही कर दियो है और श्री आपके तो सगरे ही वृत दृढ़ है, श्री आप तो परमेश्वर जगत गुरु हैं, सत्य प्रतिज्ञा वारे हैं, तासूं अब मैंने आपको ही आश्रय लियो है, ऐसे कहेतो भयो है। और काश्मीरवासी सगरे जन, कवित, शास्त्र, सवैया, करणी, वैद्य, जोतसी, गुणी सब ही श्री महाप्रभुन के दर्शन कूं आवें हैं। बिन सबन कों ही श्री महाप्रभुजी अमृत के समुद्रन की वर्षा करि रही अपनी वाणी सूं यथा योग्य ही आदर करते भये हैं, कि पावन करते भये हैं, के कृतार्थ करते भये हैं। तथा वा काश्मीर में जगदीश्वर श्रीजी लोकन के उपकारार्थ वा काव्य, व्याकरण कूं और विष्णुधर्मोत्तर कूं हू अंगीकार करते भये हैं तथा वा देशपति की सेवा में तत्पर जो कोउ महाप्रभुन को दास, भाग्यवान सुतार है, सो दोय पीढ़ा, सुन्दर शोभायमान पादुका तथा पुस्तकन के पूठा हू अर्पण करतो भयो है। दीनबन्धु श्रीजी तो कृपा सों ही विनकूं अंगीकार करते भये हैं। याके अनन्तर श्री महाप्रभुजी अपने भक्त रघुनाथदास की विज्ञापना कूं मानके याके घर में पधारते भये हैं। सो श्रेष्ठ रघुनाथदास महाप्रभुन कूं सोना जरी के वस्त्रन सूं, के इन्द्र गोप जैसे लाल रंग वारे, अन्य देश के वस्त्रन

कूं भेट करत भयो है, सो श्रीजी वाके अत्यन्त शोभायमान घर कूं शोभायमान करते भये हैं । के भक्त श्रेष्ठ रघुनाथदास महाप्रभुन के आगे बोहोत प्रकार की भेटान कूं के सुन्दर कुलीन घोड़ा कूं प्रेम सों भेट करतो भयो है, और हू जे वहां राजा, राजपूत विनके दासन में असंख्य प्रिय हू आये हते, वे हू प्रेम सूं अपने अपने मनोरथ अनुसार विविध प्रकार सूं भेट करते भये हैं । तथा आसफखान के निकट रहिवे वारे जो मुकुन्ददास हे, सो यहाँ आयके भक्ति सों वा महाप्रभुन के आगे प्रणाम करतो भयो है, कृत्य-कृत्य होतो भयो है । सेठ, बोहरा के घर में बोहोत भक्त भगवदी उतरके निवास करते भये हैं, विनकूं सो सेठ बोहोरा अत्यन्त प्रेम सों सेवन करतो भयो है, वाके अनन्तर नवमी तिथि में सेठ बोहोरा की विज्ञापना कीये भये हू श्रीजी वाके घर कूं पावन करते भये हैं । सोहू बोहोत प्रकार के वस्त्र भेटान कूं बोहोत विनय वचन पूर्वक अर्पण करतो भयो है । रात्रि में सो महाप्रभुजी अपनी कृपा सों वाके घर में ही शयन करते भये हैं । दशमी की रात्रि में हरीदास तोंवर के घर में पधारके सो महाप्रभुजी याके घर कूं शोभायमान करते भये हैं ।।१।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले इकबीसमो स्तरंग समाप्तम् ।।२१।।

बाबीसमो तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

अथ बाबीसमो तरंग लिख्यते ।।२२।।

श्लोक -- **एकादश्यांतु विभुः पातरसो विहीत कर्त्तव्यः तांबूल**
पसनदान प्रिय वचन निरीक्षणादि बिनिन्त्तराः ।।१।।

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के एकादशी के दिन श्री महाप्रभुजी प्रातःकाल के सगरे कार्यंन कूं करिके बीड़ा वस्त्रादि प्रिय वचन दर्शनादि वहां के जीवन कूं देकर, आदर सहित घोड़ा राज पर सवार होयके, अत्यन्त दूर पर्यन्त पोंहोंचाय के आय रहे यहां के निवासी भक्तन कूं अपने घर के प्रति जायवे के लिये आज्ञा करिके विदा करिके, तृप्त नहीं भये हैं नयन कमल जिनके, ऐसे तां भक्तन सूं बारंबार दर्शन दे करिके सो कृपानिधि श्रीजी प्रस्थान करते

भये हैं, मार्ग में अत्यन्त दीर्घ महा भाग्य वारे या एक देवदारु के वृक्ष कूं आसय हर्ष सहित ही देखते भये हैं सो ताके मूल के कोटर में एक बड़ी सिज्या बिछी है तहां एक अजा हू बांधि है, और वस्त्र, पात्रन कूं पसार के एक पुरुष हू रसोई करि रह्यो है। ऐसे वा वृक्ष कूं देखिके वहां की वार्त्ता कूं करत ही सबन कूं दुर्ल्लभ अपने विराजवे सूं रामू की सराय शब्द सूं प्रसिद्ध ग्राम कूं शोभायमान करते भये हैं। द्वादशी तिथि में ही हीरपुर में विराजके त्रयोदशी में ही अराड़ी भराड़ी कूं शोभायमान करते भये हैं। या त्रयोदशी में मार्ग में विषम घाटी पर आय रहे अपने भैया रघुनाथजी के पुत्र गोपालजी कूं देखते भये हैं। तब प्रेम सूं स्वयं करुणा सागर श्रीजी वा घाटी सूं उतरके अपने चरणन में दण्डवत प्रणाम करि रहे वा गोपालजी कूं आलिंगन करते भये हैं, तब आर्द्र हृदय वारे होयके श्रीजी रुदन करि रहे वा गोपालजी सूं मिलिके समाचार पूछते भये हैं के, "हमारे श्रीमद् गोकुल में श्री गिरिधारीजी आनन्दित हैं ? तथा और हू सगरे गोकुलवासी सुखी हैं ?" तब सो गोपालजी सगरे गोकुल के वृत्तांत कूं सुनावतो भयो है। तामें बड़ो भैया गिरधरजी वा दुष्ट सन्यासी के प्रसन्नता अर्थ जन्माष्टमी पर्व वेध वारी करी है, ऐसे हू कहेतो भयो है, ये सुनिकें श्री महाप्रभु जी वा पर क्रोध कूं करते भये हैं, तथा याकी बुद्धि की निन्दा करते भये हैं। वा दिन में शीत वर्षा अधिक हती, तो हू अत्यन्त अर्थ वारो जगदीश श्री महाप्रभु सगरे नित्य कर्म कूं करते भये हैं, और प्रिय श्री महाप्रभु जी अपनी श्री गोकुल में भक्तराज श्री मोहन भाईजी आदि सगरे महेद हीप्रेम आदर सहित कान रूप दौनान कूं पसारके पान करि रहे, तामें यह वार्ता मोकूं सुनावते भये हैं, के या दुर्गम अत्यन्त विषम घाटी में राजाधिराज हू प्यादा होयके बड़ी सावधानी सूं ही बड़े यत्न सूं ही मार्ग में चले हैं। विनकी विशेष बात कहें कि "वा मलेच्छ चक्रवर्ती कूं प्राणन सों अधिक प्यारी मनोहर सगरे अंग वारी मृगनयनी, चन्द्रवदनी, सूर्य कूं न देखवे वारी, ऐसी स्त्री हू वा अत्यन्त दुःखदायक मार्ग में, हस्ती, रथ, डोला, सुखपाल के न अवसर होयवे सूं स्वयं ही वे कोमल पायन सूं चलत लाठीन कूं हाथ में गहिकें गिरि रहेहैं वस्त्र भूषण जिनके, दूर कियो है परदा, के ऊपर की घूंघट वारी चादर जिनने, दूर होय गये हैं दास भक्त जिनके, अत्यन्त थकित भई श्वांसन कूं भरती, बारंबार गिरती परती, फेर उठके फेर चलती, के विचार रहित होयके, जा कोऊ पुरुष के हू हाथ के

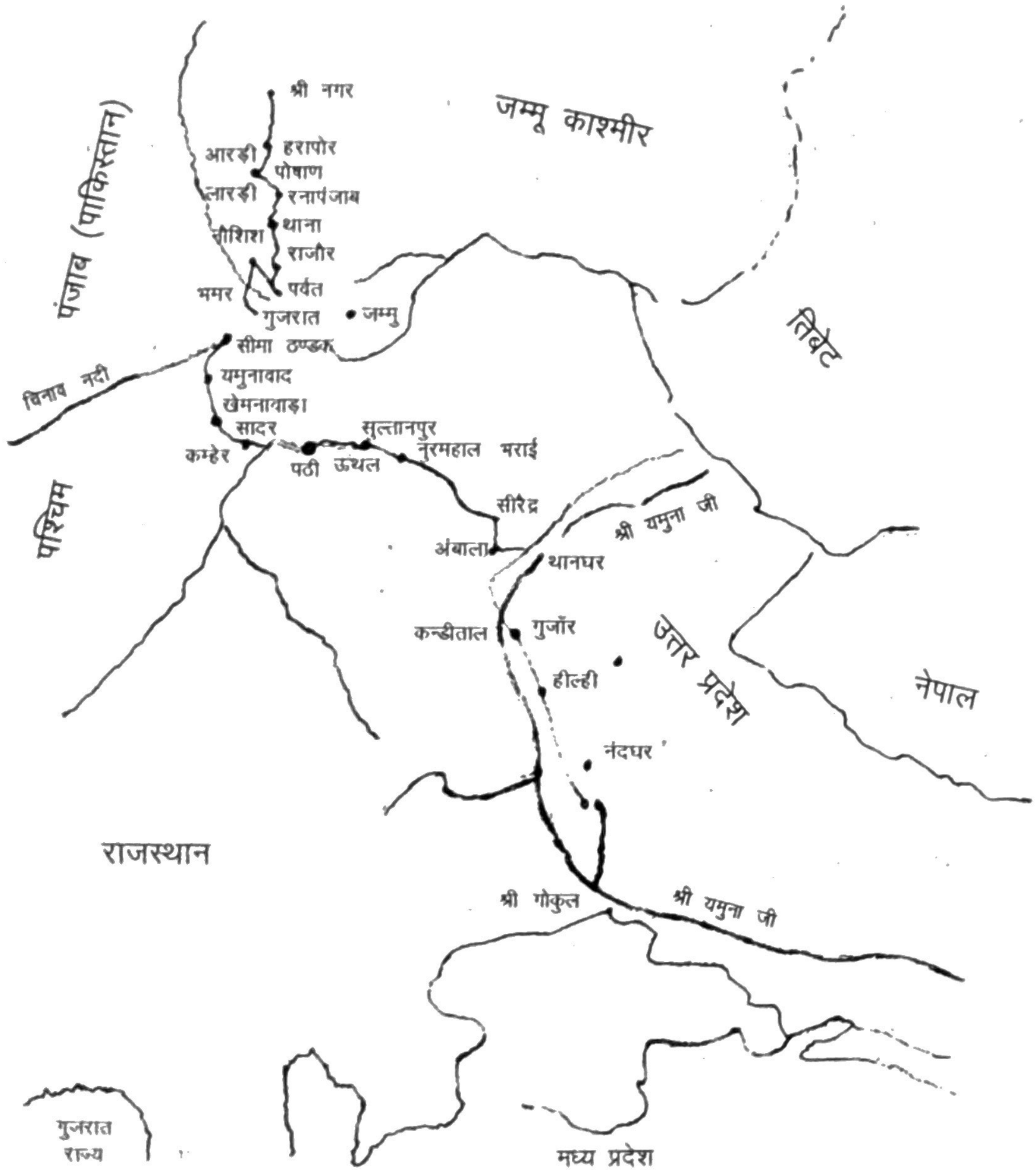
आश्रय लिये, पकरवे की इच्छा करती के अपनी रक्षा के अर्थ विनसूं अपेक्षा करो, हाहाकार करत, प्रार्थना करत बोहोत ही दुःखी होती हतीं, विनमें कितनीक सुन्दरीन कूं तो हमारे ही सेवक दास कृपा विशेष सूं हाथन में गहिके बड़े यत्न सूं वा घाटी के पार उतारते भये हैं। विनमें कोऊ एक तो चंचल स्वभाव वारी सो हंसत हंसत ही हमारे निकट आयके आश्चर्य आनन्द गर्व के भार सूं हमकूं या प्रकार सूं कहती भई है, "के हे प्राणनाथ ! बोहोत मंगल भयो है, के आप श्री गोकुल सों काश्मीर पधारे हैं, हे प्रभो ! केवल मेरे भाग्यन सों ही या काश्मीर सों श्री गोकुल की ओर पधारो हो, यह बड़ो मंगल भयो है, के श्री आपके संग ही या अत्यन्त दुर्गम मार्ग में चलिवे मैं हू बड़ो आनन्द है कि चक्रवर्ती की ऐसी ऐसी महासुन्दर स्त्रीन कूं बोहोत वार ही चाहना समूह सों ही, चिरपर्यन्त ही हाथ में स्पर्श सों प्राप्त भयो हू नहीं, नहीं, तो कहां और, कहां हम दोनोंन को ऐसो मिलाप कहां होतो ?" या प्रकार सूं श्रीजी सुनावते भये हैं। श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं के प्रीतम श्रीजी ने प्रकाश किये रस के महासागर में वा समय हम सगरे शुद्ध हृदय भक्त वामें स्नान करते भये हैं, के तरते भये हैं, डूबते भये हैं, के बाहिर हू निकसते भये हैं। या प्रकार घाटी के प्रसंग कूं कहेकर अब प्रथम प्रसंग कूं कहें हैं, के वहां सूं प्रिय श्रीजी श्री महाप्रभुजी महेमद कुलीनी लढ़ी कूं प्राप्त होयके क्षीर पंजाल कूं उतरके चतुर्दशी तिथि में पोसान नाम गाम कूं प्राप्त होते भये हैं। अमावस्या में ब्रह्मगला में पधारते भये हैं वा ब्रह्मगला सूं पधारे श्री महाप्रभुन के मार्ग में महमदपति आजमखान आयके मिलके धर्म परायण भाव कूं अत्यन्त सराहना करत भयो है तथा बुद्धिमान सो खान, वा दुष्ट सन्यासी की निन्दा करतो भयो है। उछल्लित कृपा वारे भगवान श्री महाप्रभुजी वाकूं आशीर्वाद देते भये हैं। प्रतिपदा तिथि में थाना गाम में पधारे श्री महाप्रभुजी रात्रि में स्वप्न में गढबैई शब्द सूं प्रसिद्ध, अपने उज्ज्वल श्रेष्ठ भक्त विष्णुदास कूं देखते भये हैं, तासूं अत्यन्त प्रसन्न होयके अपने भक्तन में स्वप्न कूं प्रगट करते भये हैं। तब वे भक्तजन यह कहते भये हैं, के "भमर की घाटी में याकूं मलेच्छन ने रोक लियो हतो, हे प्रभो सगरे पुरुषार्थन कूं सिद्ध करवे वारे श्री आपकी कृपा कूं प्रगट करायवे लिये आपके संग चलिवे में समर्थ न होय रह्यो हतो ॥" यह सुनिके मन्द हास्यन सूं शोभायमान श्रीमुख वारे होयके श्रीजी विनकूं अत्यन्त प्रसन्न करते भये हैं और

वे भक्त हू अपने प्राण रूप श्री महाप्रभु जी कूं प्रसन्न करते भये हैं । थाना गांम सूं यह श्री महाप्रभुजी द्वितीया तिथि में राजोर नाम गाम में पधारे हैं । तृतीया तिथि में चोंगस नाम गाम में पधारे हैं । चतुर्थ तिथि में नौसरा में, पंचमी तिथि में भमर में पधारे हैं, वहां हरष सों बारंबार महाराज, महाराज, वल्लभदेव, वल्लभदेव जलहल तूं ब्रह्मदेव जीवन,जीवन, आधार, आधार ऐसे बारंबार कहेत महाप्रभुन कूं स्तुति करत अत्यन्त उत्कंठित है, हृदय जाको, तथा चिरकाल के वियोग सूं कृश ऐसो भक्त विष्णुदास गढवै प्रिय श्री महाप्रभुन के आगे आयके प्रणाम करतो भयो है । प्रिय श्रीजी अपने भक्त कूं देखिके सो कृपासिंधो निरन्तर ही प्रसन्न होते भये हैं । और चतुरन में श्रेष्ठ सो श्री महाप्रभु प्रीतम श्रीजी शांत होय रहे अपने भक्तन के विश्राम सुख के अर्थ और दिन ही या भमर गाम में निवास करते भये हैं तथा सप्तमी तिथि में यह श्री महाप्रभुजी दौलत नगर के निकट ही तापीपुर निवासी भक्तन के पठाये पत्र लायवे वारे दूत कूं देखते भये हैं । वाके हाथ सूं पत्र लेकर, बांचके ता भक्तन पर अत्यन्त ही प्रसन्न होते भये हैं, तथा पूछते भये हैं के ''वहां हमारो काश्मीर में पधारवो कौन ने कह्यो हतो ?'' तब वा दूत ने कह्यो, ''कि वा तापीपुर में खानिखान नाम वारो जे सेनापति रहे है, वाने अपने जनन के आगे कह्यो, ''कि श्री गोकुलनाथजी मालादि के धारणादि रूप धर्म कूं मलेच्छपति की सभा में स्थिर करिवे कों काश्मीर पधारे हैं'' वाके मुख सों अधिकारीन में मुख्य सुन्दरदास सुनिके ताराचन्द सेठ श्री महाप्रभुन के भक्तन के प्रति कहेतो भयो है तब अत्यन्त चिन्ताकुल होय रहे आपके तां भक्तन सूं पत्र देकर हूं पठायो हूं । सो महाप्रभो ! अब श्री आप सों बिनके अर्थ कृपापत्र कूं अभिलाखा करूं हूं ।।'' तब श्री महाप्रभुजी हू ताकूं अपनो कृपापत्र देकर गुजरात में पधारते भये हैं, तासूं अष्टमी तिथि में चोमाखडग कूं पधारे हैं, नवमी तिथि में एमुदाबाद में पधारके, वहां गोपालदास की विज्ञापना कूं मानके वाके घर कूं पावन करते भये हैं तथा वा गोपालदास ने भेट करी सेज्या पहेरामनी कूं हू श्री महाप्रभुजी अंगीकार करते भये हैं, तलाब पर भोजन लीला करी है । दशमी में श्री प्राणप्रियजी शाददश गाम में पधारे हैं । एकादशी में लाहोर में पधारे हैं । यहाँ सूं ही भक्त श्रेष्ठ ताराचन्दजी अपने प्रेम सूं प्रेरणा कियो भयो महाप्रभुन की प्रसन्नता के अर्थ अपने मनोरथ अनुसार घर में वा वा कार्य कूं करवे लिये आगे सों ही चलतो भयो है, और श्री महाप्रभुजी द्वादशी

तिथि में भगवानदास के घर में पारणा कूं करिके प्रस्थान करिके कछुक दूर पट्टी गाम में पधारके त्रयोदशी तिथि में वहां ही निवास करते भये हैं । तथा यह भगवानदास और ताकी स्त्री हू प्रथम सूं हू अधिक आदर सों महाप्रभुन की सेवा कूं करते भये हैं । तब वहां सूं चतुर्दशी तिथि में प्रिय श्रीजी सुलतानपुर में प्राप्त भये हैं, तथा पूरणमासी तिथि में तलवल गाम में पधारे हैं, वहाँ परमानन्द के घर में स्थित होते भये हैं, सो अत्यन्त ही सेवा करतो भयो है । यहां सूं द्वितीया तिथि में दोला गाम कूं प्राप्त होते भये हैं, तृतीया तिथि में सीरन्द्र कूं, चतुर्थी में अम्बाला कूं, पंचमी तिथि में कुरुक्षेत्र में पधारते भये हैं । षष्टी तिथि में कर्णावली गाम कूं, सप्तमी में गुनौर में पधारते भये हैं । श्री महाप्रभुजी मार्ग में नरेरा गाम सूं श्री गोकुलवासी सगरे भक्तन के प्रति अपने पधारवे के तथा विनय के वृत्तान्त कूं सुनायवे लिये जेता नाम पहेरुवे कूं अपनो लेखपत्र देकर श्री गोकुल में पठावते भये हैं, और अष्टमी तिथि में यहां सूं श्रीजी सगरे पंडितजन जाकूं इन्द्रप्रस्थ कहें हैं, वा दिल्ली नाम गाम कूं शोभायमान करते भये हैं । काश्मीर में बोहोत प्रकार सों ही मुकुन्ददास ने जे अपने दिल्लीवारे घर कूं पावन करिवे लिये जो विनय करी हती सो दिल्ली में मेरे घर में पधारनो, वाकूं हू पावन करनो, वाके अर्थ श्री महाप्रभुजी वाके घर में ही निवास करते भये हैं । वहां श्री महाप्रभुजी ने ध्वोधि तीर्थ प्रेष्ट में नहायके पधार रहे, बगीचा में दण्डवत प्रणाम करि रहे कृष्णदास राजा कूं देखते भये हैं । तब वा कृष्णदास सूं पूछते भये ही, श्रीजी कृपा सों ही काश्मीर के वृत्तान्त कूं सुनावते भये हैं, तथा बोहोत प्रकार के मनोरथ वारो ताराचन्द भक्त बोहोत प्रकार सूं विज्ञापना करिके श्री महाप्रभु कूं अपने घर में पधरावतो भयो है, के वाके योग्य सेवा कूं करतो भयो है । वाके घर में सुन्दर सिद्ध भयी मधुर स्निग्ध कोमल मनोहर जलेबीन कूं, वा ताराचन्द के प्रेम सूं श्रीजी तथा श्रीजी के सगरे भक्त हू आरोगते भये हैं । और मुकुन्ददास के घर में श्री महाप्रभुजी पधारके शरण प्राप्त भई वाकी स्त्री कूं नाम सुनायवे अर्थ, के नामसुनायके वाकूं कृतार्थ कर देते भये हैं, तथा भोजन कूं करिके हर्ष सूं विश्राम हू करते भये हैं । नवमी तिथि में सो श्री महाप्रभुजी परवर (पलवल) गाम कूं शोभायमान करते भये हैं । वहां सूं पधारे श्री महाप्रभुजी मार्ग में होडील (होडल) नाम गाम के मनोहर तलाब पर घोड़ा कूं स्वच्छ जल पिवावते भये हैं । वहां श्री गोकुल सों उदासीन मुख

श्री अष्टम कल्लोल जी तरंग २२ से २३

(रेखांकन -२)



श्री संवत् १६७६

श्री महाप्रभुजीओ बाकुलेश जी मालाद्धार करीकै सार्वभौम विजत करके वापर काश्मीर से गोकुल पधारे, उस प्रवास की ३४ रेखा आश्वन मास की कृष्णपक्ष की एकादशी काश्मीर से प्रस्थान परमानंद जानी ने दीये हुअ मुहुर्त

वारो भगवानदास आयके संकोच सहित ही दंडवत प्रणाम करतो भयो है, यासूं यह सुलतानपुर सों ही श्री महाप्रभुन कों त्यागिके पीछे वगदि आयो हतो, तब श्री महाप्रभुजी वाकूं कुशल पूछके आदर देते भये हैं। वहां सूं कार्तिक कृष्णा दशमी के दिन परात्पर परम प्रिय प्राणनाथ श्रीजी नन्दीश्वर गाम में पधारते भये हैं वहाँ उच्छल्लित भक्त सुनन्द सूं ते भगवान कूं तथा नन्द यशोदा को दर्शन करते भये हैं। वहां पावन नाम तालाब पर ध्यान करिके सगरो कार्य करिके भोजन करिके रात्रि समय में निद्रा लीला कूं करते भये हैं, या दसमी तिथि में ही जेता पोहोरुआ कूं श्री गोकुल में वेग ही पोंहोंचायके प्रभुन के पत्र दान सूं तथा मलेच्छपति के विजय कहेवे सूं, के वाकी सभा में तुलसी माला धारणी सगरे धर्मन के स्थापन के कहेवे सूं, के प्राणनाथ की कीर्ति प्रताप की वृद्धि के सुनायवे सूं, तथा कुशलपूर्वक अपने सेवक भक्त दासन के, सहित ही पधारवे के कहिवे सूं श्री गोपालजी आदि सबन कूं ही अत्यन्त मोद बढ़ावतो भयो है, के महा हर्ष सूं महा प्रफुल्लित करतो भयो है, और वे श्री गोपाल जी आदि हू श्री महाप्रभुन के वा वा अनेक प्रकार के वृत्तांत कूं हू पूछके सुनिके आनन्दित होयके, सगरे भक्त, तथा भक्त सुन्दरी हू विविधि प्रकार के वस्त्र भूषणादि सूं वा जेता पोहोरुआ कूं ही प्रसन्न करते भये हैं ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले बाबीसमुं स्तरंग समाप्तम् ॥२२॥

त्रैबीसमो तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

अथ त्रैबीसमो तरंग लिख्यते ॥२३॥

श्लोक -- **भगवास्विकादस्या प्रारस्थान नंदीश्वराः तोस्मति**

गिरराजधरण वदनारविन्द माधविक सागरानंदगभ्या ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं, के श्री गिरिराजधरण के श्रीमुख कमल सम्बन्धी रस समुद्रन कूं नयनन सूं पान करिवे कूं उत्साही हृदय वारे होयके सो भगवान श्रीजी एकादशी तिथि में प्रभात काल में वेग ही उठिकें वा नन्दीश्वर गाम सूं प्रस्थान करते भये हैं। विश्राम जलधरीया तो या महाप्रभुन

सों प्रथम ही श्री गिरिराज़जी में पहोंचके महाप्रभुन के श्रेष्ठ भक्त साया गढवई कूं कहेतो भयो है, ''बधाई ! बधाई !! बड़ो मंगल भयो, बड़ो मंगल प्राणनाथ श्री गोकुल प्रभुन के पधारवे सूं तुमे बधाई हो ॥'' यह सुनिके प्रिय कहां पधारे हैं ? कब वाके श्रीमुख पूर्ण चन्द्रमा को हौं दर्शन करूंगो ? ऐसे विह्वल होयके बारंबार ही पूछत ही, के हर्ष के अश्रुन की धार सूं या प्रकार हर्ष के वृत्तांत के सुनायवे वारे वा विश्राम के प्रति मणि मुक्तान सूं जटित सुवरण की रसना के जिभ्या तोकूं गढ़ाय देवुंगो, और हू अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण देऊँगो, ऐसे प्रतिज्ञा करत ही प्रभुन के सन्मुख जायके समीप में ही प्रभुन को दर्शन करिके बारंबार प्रेम सों दण्डवत, प्रणाम करतो भयो है । श्री महाप्रभुजी हू घोड़ा कूं राखि के कुशल प्रसन्नादि सूं वाके समाधान कूं करते भये हैं । या प्रकार सूं और हू सगरे भक्त, सेवक, वैष्णव, दास, भीतरिया सगरे ही श्री गोवर्द्धनधारीजी के सेवा करिवे वारे हू दौड़ दौड़ के आयके ही वा महाप्रभुन के दर्शन करिके, प्रणाम करिके, महा सुखी होते भये हैं । श्री महाप्रभुजी हू दृष्टि सूं, के प्रिय वाणी सूं हू, के मन्द हास्य सूं विन सबन सूं ही अनुग्रह करते भये हैं । घोड़ा राज सूं उतरकें श्री गोवरधन गिरिराज कूं अपने चरण कमल के धारण सूं आनन्दित करत अत्यन्त शीतल करत ही याके ऊपर पधारते भये हैं । तब लक्ष्मीदास, भीतरियान कूं कहेते भये हैं, ''के श्री वल्लभजी पधारे हैं, यासूं श्री गोवर्धननाथजी के जगायवे लिये शंखनाद तुम करो ॥'' तब लाडन मुखिया कहेतो भयो है, के ''श्री गोवर्द्धननाथजी को जागरण को समय अबई भयो नहीं, कैसे शंखनाद करूं ? तब यह लक्ष्मीदास, भीतरिया सूं क्रोध करिके कहेतो भयो है, ''अरे मूर्ख तू कछुक रहस्य नहीं जाने है, जो और दिन में ही यह श्रीजी श्री वल्लभजी स्वयं श्री गोवर्द्धनधर के दर्शन कों प्रेम सूं पधारें हैं, तो हू यह श्री गोवर्द्धनधरजी अपने मन्दिर सूं प्रेम सूं या श्रीजी के आगे जाय हैं, और अब तो यह श्री वल्लभजी मलेच्छपति कूं विजय करिके याकी सभा में सूं ही तुलसी माला धारणादि वैष्णव धर्म कूं स्थापना करिके, पधार रहे हैं, कहा इनके आगे श्री गोवर्द्धननाथजी नहीं पधारे होंयगे, किन्तु एकान्त में अवश्य ही पधारे ही हैं । आगे पधारके आलिंगन करिके दर्शन करिके सबन सों प्रथम ही अलौकिक प्रकार सों यहां आयके विराजे हैं । तोहू, हों तो तोकूं अलौकिक रीति सूं कहूं हू, कि तुम शंखनाद करो, सो तुम वेग ही शंखनाद करो नहीं तो श्री गोवर्द्धनधारी जी के अपराधी होउगे ॥'' यह सुनिके सो लाडन हू शंखनाद

करतो भयो है । श्री महाप्रभुजी हू भीतर पधारके वा श्रीनाथजी के श्री मुखचन्द्र को निरखि के सुखी होते भये हैं । तब सर्वज्ञ हू दोनों प्रिय वहां अनेक प्रकार के जन समूहन कूं देखके संकोच सूं नयन सूं ही आपस में वा वृत्तांत कूं पूछते भये हैं, के कहते भये हैं, और श्री प्राणनाथजी तो कछुक काल वहां विलम्ब करवे की इच्छा हू करते भये हैं, के कछुक काल वहां रहे. तो हू समय के जानवे वारे वा श्रीनाथजी सों ही प्रेरणा किये भये ही अपने भक्त समूहन सों तथा सम्बन्धी समूहन सों तथा श्रीमद् गोकुल को हू आनन्दित करिवे लिये श्रेष्ठ गुणसागर प्रभु वेग ही पधारते भये हैं और वहां ठहेर रहे कुटिल बुद्धिवारे बड़े भैया के पास हू सो शील सागर सो श्री महाप्रभुजी पधारके विनय सहित प्रणाम करते भये हैं । तब गिरधरजी भीतर के कछु और अभिप्राय कूं या प्रकार सूं पूछते भये हैं ''के कहां सूं आये हो ?'' तब चतुर शिरोमणि श्रीजी हू भीतर के अभिप्राय सहित आज्ञा करते भये हैं के ''काश्मीर सूं आयो हूं ॥'' यह सुनिकें गिरधरजी फिर पूछते भये हैं, ''वहां बोहोत दूर काहे कों तेरो पधारनो भयो हो, सो सगरे जन ही भलेप्रकार सों जानें हैं, आज दिन लों ही आपने ही केवल नहीं जान्यो है । अब आगे स्पष्ट ही जान लेवोगे ॥'' या प्रकार कहकर श्री महाप्रभुजी घोड़ाराज पर सवार होयके वाकूं नचावत प्रेम सों ''हों प्रथम जावूं हूं, हों प्रथम जावूं'' या भाव सूं चारों ओर दौड़ रहे असंक्षात भक्तन सूं मिले भये ही वेग ही पधारते भये हैं । चिरकाल सूं जिनके वियोग सूं कलेश को प्राप्त भये हैं, तासूं वा प्रिय के श्रीमुख चन्द्र के दर्शन के उत्साह वारे गोकुल सों वैष्णव बांधव अपने ज्ञात वारे सुहृदय भक्त करोड़न मृगनयनी जन हू चलते भये हैं, विनमें कितनेक जन तो जुनस्ती (जुनसुटी) गाम के, कितनेक तो उस्फार में, और अड्रूकी में, और राजमार्ग में और अन्य स्थल में के और जन अवार के खिड़क में पधार रहे, वा प्रिय के दर्शन करिके चरण कमल में प्रणाम करते भये हैं, और दर्शन में अत्यन्त उत्साहित जो प्रिय पुत्र श्री गोपालजी हैं तथा श्री विट्ठलरायजी हैं सो दोनों हू वा अवार के खिरक में आयके प्रभुन कूं प्रणाम करते भये हैं, तथा अवार के खिड़क और श्री यमुनाजी के दोनों तट हू स्नेह सों धर्म समूहन सों, सौंदर्य सों, नीति सों, तथा सौभाग्य, पवित्रता, मंगल मणीन सों, तथा सुवरण सों, के भूषण के चित्रित अमूल्य वस्त्रन सों, तथा जय शब्द मंगल शब्दन सों, तथा गहनान के झंकार सों, विनके चमत्कार समूहन सों, के हास्य, मन्द हास्य, दृढ आलिंगन, गान, मनोहर नृत्य, तथा अपने अपने

वृत्तांत, कथान सों, निरन्तर पूर्ण ही प्रकाशमान होतो भयो है । तब प्रेम सहित मन्द हास्य पूर्वक उत्तम श्री यमुनाजी कूं निरखि कें श्री महाप्रभुजी नाव पर सवार होयके पार आयके विराजते भये हैं । तब यमुना नाम अहीरनी दही के भरे भये मंगल पात्रन कों लाई है । वाकूं श्री महाप्रभुजी श्रीहस्त सों स्पर्श करिकें स्वयं आदर करते भये हैं । प्रणाम करि रहे, प्रिय छोटे भैया श्री घनश्यामजी कों प्रिय श्रीजी, दृढ़ आलिंगन सों अत्यन्त प्रसन्न करते भये हैं, और पूर्ण चन्द्र जैसो है श्रीमुख जाको, के चंचल हैं नयन रूप कमल जाके, ऐसी श्रेष्ठ सुन्दरीन सों, माथे में धारण किये मंगल कलश कूं देखत, श्री महाप्रभुजी श्रीनाथजी के मन्दिर में पधार के, वहां यथायोग्य कर्म कूं करिके स्वजन बेटी बन्धु आदिकन कूं हू कुशल पूछके, धैर्य देकर, सत्कार करिके अपनी बैठक में भक्त समूहन सूं तथा स्वजन, ज्ञाति बांधवन सों तथा सगरी हिरणनयनी सुन्दरीन कूं सुखदान करत, सो कमलनयन श्रीजी, बड़े सुन्दरता के पान सों, मनोहर रुईदार बड़ी गादी पर विराजमान होते भये हैं । तब मलेच्छपति ने जो कह्यो तथा वाके प्रति श्रीजी ने स्वयं जो कह्यो, के आसफखान ने कह्यो, के श्री आपने वाके प्रति जो कछु कह्यो हतो, तब और हू काश्मीर में जो कछु वृत्तांत हतो, सो सो सगरो हू क्रम सों प्रेम, हर्ष सों श्री महाप्रभुजी उठके स्नान करिके शंख बजवाय के श्री गिरिधारीजी श्रीनाथ जी के उत्थापन को करिके वा गिरिधारीजी के श्री मुखकमल को प्रेमपूर्वक निरखि कें वहां यथायोग्य और हू काम करिके अपने सम्बन्धीन के संग फलाहार करते भये हैं । तब महायशस्वी तेजस्वी भगवान श्री महाप्रभुजी असंक्षात सम्बन्धी, भक्त, स्वजन सूं मिले भये ही अपनी श्रीबैठकजी को शोभायमान करते भये हैं, के उछल्लित होय रही है प्रेम भक्ति जिनमें, ऐसे भक्तन की सुन्दर वस्त्रन सूं रचना करी अत्यन्त मनोहर पहेरामनी कूं तथा वारना न्योछावर के माणिक जटित आभरण सुवर्ण, मुक्तादि रचित अनेक प्रकार की भेटान कूं हू सो जगन्नाथ श्रीजी महाप्रभुजी अंगीकार करते भये हैं, और सो श्री गोकुलाधीशजी कार्तिक की शुक्ल प्रतिपदा तिथि श्री गोवर्धन पर्वत कूं छांड़िके वहां न पधारके वा श्री गोकुल में ही अनुग्रह सूं वाकी महिमा कूं बढ़ायवे लिये बड़ी सामग्री, बड़े उत्साह सूं ही अनेक उत्सवन कूं करते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले त्रेबीस स्तरंग समाप्तम् ॥२३॥

चौबीसमो तरंग

श्री श्री गोकुलेशो जय जयति

अथ चौबीसमो तरंग लिख्यते ।।२४।।

श्लोक -- **इह सार्वभौम विजय भये ध्रुवहंत कल्लोले**
नत्यष्ट मे तरंगे प्रेम विस्वयने कृपाशक्तेः ।।१।।

याको अर्थ -- अब श्री कल्याणभट्टजी कहें हैं कि चक्रवर्ती के विजय रूप वा आठवें कल्लोल में प्रथम तरंग में कृपाशक्ति की विज्ञापना कूं तथा वाके प्रति प्रभुन को उत्तर तथा लीलाशक्ति की विज्ञापना कही है । दूसरे तरंग में सन्यासी ने जो पत्र मेहेजर बनायो है कि तथा वाकों मलेच्छपति के पास पठावनो, सो मैंने कह्यो है । तब मलेच्छपति के मन सम्बन्धी हर्ष और मिथ्या क्रोध कूं दिखावनो, महाप्रभुन कों बुलायवे कों आज्ञा तथा मलेच्छपति के आगे प्रभुन के भक्त आसफखान की प्रभुन को आदर सहित काश्मीर में ले आने वारे पत्र कूं लश्कर खान के पास लिखवे अर्थ विचार तथा देशपति ने जो वाकूं आदर सहित अनुमोदन कियो है तब महाप्रभुन के काश्मीर में पधारवे लिये नातु के लिखे पत्र कूं सीहवी वैद्य, महाप्रभुन के पास लायो है सो, पत्र के देखवे सूं महाप्रभुन की प्रसन्नता वर्णन करी है । तीसरे तरंग में महाप्रभुन के आगे श्री यमुनाजी की विज्ञापना के महाप्रभु के प्रस्थान को सगरे नगर में वा लश्कर खान के संग संवाद, तथा तासूं आगे पधारनो बोहोत प्रकार सों लोकन को उद्धार तथा आमलखेड़ा में पधारनो वर्णन कियो है । तथा चार तरंग में जलेसर में पधारनो राजबाई आदि भक्तन पर कृपा और अधिकारी आदि कूं विदा करनो महाव भाई या नायक कूं फिरके न जानो के प्रभु के संग चलिवे कूं दृढ़ निश्चय करनो, हीराबाई नाम सूं प्रसिद्ध भक्त द्वै पर कृपा, के तपस्वी में कृपा, दिल्ली में ताराचन्द परम भक्त को स्मर्ण के नरोड़ा गाम में गागु पोहोरूआ कूं आसफखान के निकट काश्मीर में पठावनो गुन्नोर गाम में श्री गोकुल सों टेड़े मार्ग सूं केशवदास आदि भक्तन को आवनो आदि वरणन कियो है । पांचमे तरंग में पुरुषोत्तमदास महेरा ने कियो कीच में दधिकांदो, विहर रहे सो और कुरुक्षेत्र में महाप्रभुन को पधारनो कोट कछुआ गाम में कोऊ व्यौपारीन की प्रभुन में भक्ति, अम्बाला नगर में अपनी भक्त सुन्दरीन पर कृपा सींहनंद में पवित्रा उत्सव, तथा दुराहवाम गाम में वाके नेत्र वारे कल्याणदासजी कटु तुंबी के फलन कूं पाक के अर्थ लायो है यामें

हास्य की वृद्धि तथा फुलोरा नाम गाम में चतुरा नागादिक आगमनादि वरणन कियो है। और छटे तरंग में म्लेच्छ विशेष पर प्रभुन की कृपा और वाको भाव, पट्टी गाम में भगवान दास की स्त्री केसरदे ने कियो महात्सव समूह तथा प्रातःकाल दधिकांदो उत्सव हू मैंने वर्णन कियो है। याके अनन्तर सातवें तरंग में पट्टी सूं प्राणनाथ को प्रस्थान तथा वीरपालादि कूं चिन्ता विशेष सूं ज्वर विशेष, और सदैव ही प्रभुन के संग गोवर्धनधारीजी को पधारनो नव सरादी में पधारनो, के लाहोर में पधारनो, अपने भक्तन पर कृपा, घनश्यामदास के घर प्रेम सों पधारनो, वहां विराजके वा घनश्यामदास ने जो सुखपाल अर्पण करी है, सो तथा फजीलावाद आदि गाम को पावन आदि करनो चीमा खडग की छोटी पोखरी कूं बोहोत प्रकार सूं पावन करनो, तथा कोऊ दरिद्री ब्राह्मण में महाप्रभुन की कृपा, तथा वाने भेट करी जो मिश्री है वाकी सराहना करनी, गुजरात नाम गाम में निहालचन्द नाम भक्त के संग महाप्रभुन की जो गोष्ठी है सो कही है। और आठमे तरंग में हरू के जमाई दुष्ट छीतर के संग दुष्ट सन्यासी को संवाद और वाको दुष्ट कर्म दुष्ट पत्र बनवानो जो के श्रीमद् गोकुलनाथजी ने सन्यासी के मारवे अर्थ दुष्ट गामवासी चोरन कों बोहोत ही धन दियो है, या प्रकार के पत्र को लिखनो और वामें मुद्रा के अधिकारी कतर्दीन ने यह सांचो लेख है ? ऐसे हू न लिखनो और मुद्रा हू न करनी, यह कह्यो है ऐसे पत्र कूं मलेच्छपति के पास पठावनो के, या मलेच्छपति को वा पत्र में यह मिथ्या है, वैसी बुद्धि वैसो वचन और या पर इतवारखान कों तथा परम चतुर आसफखान कों हू ऐसो कथन तासूं देशपति कूं समझनो और चोरन के शस्त्र समूह छीतरा को मरनो यह सब मैंने वर्णन कियो है। याके अनन्तर नवमे तरंग में प्राणनाथ को भमर में पधारनो, घाटी सूं उतरनो, संदोह हट्टी आदि में पधारनो के चींगस नाम गाम में जल में भमर के महमद कुली नाम मलेच्छ की लढ़ी में उतरनो यामें स्वतन्त्र प्रभुन की मलेच्छ विशेष पर कृपा और हीरपुर में अपने भक्तन की चिन्ता कलेश कूं करुणासागर प्रभुन कों समाधान करनो, द्वादशी तिथि में महाप्रभुजी रामु की सराय कूं अपने विराजवे सूं शोभायमान करते भये हैं। तथा काश्मीर-वासी भक्तन को वहां आवनो आसफखान के न आयवे में कारण और रामराय के बगीचा में विराजमान अपने डेरा तंबू में पधारनो और भक्तन को अपनी भोजन लीला तथा निन्द्रा लीलाकूं

आदर करनो, के सबन को प्रभुन में ही अनुराग यह सब मैंने वर्णन कर्यो है । और दसमे तरंग में अपनी कृपाशक्ति के संग महाप्रभुन को संवाद तथा राघवदास के वचन सों चौदह लोकन के स्वामी महाप्रभुन को दिलावरखान के घर में स्वयं पधारनो, इतवारखान के घर में पधारनो, तथा दूसरे दिन अपने भक्त आसफखान कूं दर्शन दानादि सूं कृतार्थ कियो है सो, तथा देशपति को खजानची आगा नूर नाम वारो आयके महाप्रभुन की सुरती करत अपनी रसना कूं जो अत्यन्त कृतारथ करतो भयो है । और भाग्यवारे भक्तराज आसफखान की करी महाप्रभुन की स्तुति तथा प्रसिद्ध वाकूं प्रिय ने जो यज्ञोपवीत सों हू तुम्हारी हू तुलसी माला के उत्कर्ष कूं प्रगट करिवे वारो उत्कर्ष कह्यो है । सो तथा फेर हू वाकी विज्ञप्ति है तथा महाप्रभुन ने जो वाकूं धर्ममय उत्तर कह्यो है वा सबन कूं ही अपने हाथ सूं प्रेमपूर्वक सो आसफखान अपने पत्र में लिखिके राख्यो है और या प्रकार वाके ऊपर अनुग्रह करिके श्री महाप्रभु जी अपने डेरा में पधारे हैं सो सगरो ही मैंने कह्यो है । बारहमे तरंग में आसफखान महात्मा में वा देशपति के मधुर प्रश्न, तथा प्राणनाथ श्रीजी जाके आश्रय हैं ऐसो जो उत्तर है, सो हू मैंने वर्णन कियो है । और चौदमें तरंग में कृपा समूह सों मलेच्छ आदि अधम जीवन के उद्धार के अर्थ विजय घोड़ा पर सवार होनो, के शुभ प्रस्थान में श्रीजी कूं व श्रीजी के भक्तन कूं जो पराक्रम हे सो हू मैंने कह्यो है । पन्द्रहमे तरंग में प्रीतम के प्रेम समूह सों भक्तन की हित वचन, उपदेश, के श्री आप देशपति के आगे या प्रकार सूं कहे, और प्रकार सूं नहीं कहे तथा नाथ श्रीजी ने जो विनको समाधान कियो है । हरीदास तोवरादि की ऐसी चिन्ता विचार और स्वरूप निष्ठा, तथा वेग ही आसफखान को ही आवनो के गुप्त कार्य अर्थ गुप्त हर्ष तथा मलेच्छपति कूं कछुक विलम्ब यह सब ही मैंने कह्यो है । और सोलहवें तरंग में विलम्ब और मधुसूदन अपने भाणेज के संग श्री महाप्रभुन को वा देशपति के घर में पधारनो है सो हू मैंने कह्यो है । वा देशपति में पवित्रादि कूं देनो वाकी लोकातीत अवस्था के या महाप्रभुन के सौंदर्यादिकन कूं वा देशपति कूं अनुभव होवनो वैसो कहेनो सो हू मैंने कह्यो है । और सत्तरहमे तरंग में प्रिय कूं वा देशपति के संग संवाद के वा देशपति पुत्रादि अविज्ञा तथा देशपति कूं गुप्त हर्ष के वाके प्रेम को उछलनो तथा महाअसुर वा सन्यासी में अनुराग वारे दुष्ट भाग्य वारे वा राजा सारंगदेव

की दुर्बुद्धि तथा आसफखान ने कियो वाकूं अत्यन्त तिरस्कार के वा आसफखान के घर में प्रथम महाप्रभुन के संग जो यज्ञोपवीत सो तुलसी माला की मुख्यता कूं जो स्थापना करिवे वारो जो संवाद भयो है सो देशपति के प्रसन्न करिवे वारे वा प्रसंग को वर्णन, के शैव रुद्राक्ष मालान को खंडन हू मैंने कह्यो है। वर्णन कियो है और अठारहमे तरंग में वा देशपति के संग महाप्रभुन को संवाद तामें सभा कूं कांपनो, के भक्तन कूं भारी चिन्ता, भय, तथा भगवद भक्ति सों प्रकाशमान देशपति सो विचार के वा महाप्रभुन के गोकुल त्याग की चर्चा में समर्था, तथा सरस्वती को भय, के कृपाशक्ति को निवेदन यह मैंने कह्यो है। और उगणीसमे तरंग में मलेच्छपति ने श्री गोकुल को त्याग कह्यो है ताकों अंगीकार तथा मलेच्छपति कूं विनय करनो के मलेच्छपति कूं गंभीर विस्मय रूप समुद्र में डूबनो, गूढ़ कृपा भक्ति सूं मिली मधुर कथा, तथा वियोग के क्षणन कूं गुजारवे अर्थ, गूढ़। भक्ति सूं देशपति ने जो युक्ति सूं श्री हस्ताक्षरन सूं शोभायमान पत्र की प्रार्थना करी है सो तामें महाप्रभुन कूं विह्वलता, विराज के वा देशपति को पठायें रूप के बड़े प्रकाश में गोकुल के त्याग सम्ब्धी पत्र कूं लिखनो, के फेर हू वा देशपति कूं कृतारथ करिके महाप्रभुन को अपने डेरान कूं पधारनो, यह सब मैंने कह्यो है तथा बीसमे तरंग में या देशपति कूं अपनी स्त्री के संग विस्मय विशेष के संग के उछलन पूर्वक संवाद तथा वैसे बलभद्र के संग समाधान अभय वारो मनोहर संवाद, तथा प्रिय के वियोग सम्बन्धी उदासीनता सूं मृगया के मिस सूं देशपति कूं मछी भवन में जानो हू मैंने कह्यो है। तथा इक्कीसमे तरंग में या महाप्रभुन को चित्त में वा देशपति को प्रवेश के आसफखान के घर में महाप्रभुन को अनुग्रह रूप पधारनो वहां सूं सूकरक्षेत्र में पधारवे कूं सुन्दर निरणय ज्योतिषीराज परमानन्द जानी के संग यात्रा के मुहूर्त कूं निरणय, तथा लोकन की बड़ी भीड़भाड़, के दुर्गादास की शरणागतन की दया सूं काव्य व्याकरणादि कूं अंगीकार, राघवदास में के मुकुन्ददास में कृपा सूं पधारनो। और बाबीसमे तरंग में महाप्रभुन के काश्मीर सूं प्रस्थान के मार्ग में जाके कोटर में बड़ी खाट बिछाई है एक छेरी हू बांधी है एक पुरुष हू वस्त्र तथा पात्रन कूं पसार के रसोई हू कर रह्यो है ऐसे देवदार के वृक्षन कूं देखनो तथा रघुनाथ लालजी कूं पुत्र गोपालजी कूं देखनो श्री गिरधारीजी के कुशल कू पूछनो के गोकुल के वृत्तांत कूं पूछनो के बड़े भैया पर प्रभुन

को क्रोध, मारग में मलेच्छपति की भार्या की लज्या को नाश तथा स्वप्न में विष्णुदास गढवई कूं देखनो, भमर में वाको मिलाप तथा दोलत नगर के संमीप तापीपुर वासी भक्तन के पत्र कूं मिलनो, विनके प्रति पत्र कूं लिखनो, के गुजरात आदि गाम में प्रभुन को पधारनो, श्री गोकुल में जेता पोहोरुवे कूं पठावनो के तासूं अपने पुत्र श्री गोपालजी आदिकन कूं तथा भक्तन को आनन्दित करनो वर्णन कियो है । तथा तेवीसमे तरंग में प्रसन्न भये सो वा गढवई कूं प्रभुन के सनमुख आवनो, वैसे और हू भक्तन कूं सनमुख आवनो, महाप्रभुन ने जे कृपादृष्टि सूं विनके ऊपर अनुग्रह करी है, सो तथा गिरिराज जी पर पधारनो तथा श्री गोवर्धन नाथजी के जगायवे अर्थ लक्ष्मीदास भीतरिया ने जो लाडन कों कह्यो है शंखनाद करो यह संवाद तथा महाप्रभुन को श्रीनाथजी को दर्शन, के बड़े भैया को आदर तथा वहां अभिप्राय सहित संवाद तथा श्री महाप्रभुन को वहां सूं पधारनो, श्री गोकुल में सगरे भक्तन कूं मिलनो, के श्री यमुनाजी कूं उतरके महाप्रभुन को श्री गोकुल में प्रवेश तथा अपने सगरे सम्बन्धीन सूं वृत्तांत कूं सुननो श्रीनाथजी के श्री मुखारविन्द के दर्शन को आनन्द तथा एकादशी तिथि में फलाहार करनो भक्त समूहन ने जो पहेरामनी आदि करी है सो, तथा कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि में या श्री गोकुल में ही अन्नकूट उच्छव करनो मैंने कह्यो है और चौबीसमे तरंग में तो सगरे तरंगन को अर्थ कह्यो है ॥

श्री गोकुलेश महाप्रभु की प्राप्ति कों सिद्ध करिवे वारे मधुर फल रूप तथा सगरे भक्तन के सगरे मनोरथ कूं दान करिवे वारे तथा सगरे भक्तन के सगरे अनिष्टन कूं निवारण करिवे वारे या अष्टम कल्लोल सम्बन्धी प्रसंग को ही प्रेम सों शोभायमान चित्त में धारण करत ही अब आगे जाके जाको वरणन आवे है ऐसे नवमे कल्लोल सम्बन्धी प्रसंग कों हे रसिक भक्त अपने कान रूप हाथन सों पान करिये ॥१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधासिधो सार्वभौम विजय भये अष्टम कल्लोले चतुरविश स्तरंग समाप्तम् ॥२४॥

सम्पूर्णम् श्री शुभम् ॥